रांची, सोमवार
06.05.2024
वर्ष : 9, अंक : 154 पृष्ठ : 12
मूल्य : दो रूपए

बिहान भारत

रांची से प्रकाशित हिन्दी दैनिक
खबरे हमारी, विश्वास आपका

website : www.bihanbharat.com bihanbharat@gmail.com @bihan_bharat Bihan Bharat RNI NO - JHAHIN/2015/73988

संक्षिप्त खबरें

अमरनाथ यात्रा: बीस दिनों में दो लाख 38 हजार तीर्थयात्रियों ने कराया पंजीकरण

जम्मू: वार्षिक श्री अमरनाथ यात्रा के लिए पंजीकरण प्रक्रिया के पहले 20 दिनों में दो लाख 38 हजार तीर्थयात्रियों ने पंजीकरण कराया है। यात्रा 29 जून, 2024 से शुरू होगी। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि 15 अप्रैल से शुरू हुई अग्रिम पंजीकरण प्रक्रिया में अब तक 2.38 लाख तीर्थयात्रियों ने ऑफलाइन और ऑनलाइन मोड के माध्यम से वार्षिक श्री अमरनाथ यात्रा के लिए अपना पंजीकरण कराया है। इस साल 29 जून से शुरू होकर 52 दिवसीय यात्रा 19 अगस्त (रक्षाबंधन) को समाप्त हो रही है। हालांकि, रविवार को श्री अमरनाथ 'लिंगम' की पहली तस्वीर भी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर सामने आई। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि श्री अमरनाथ श्राइन बोर्ड (एसएएसबी) गुफा तीर्थस्थल तक तीर्थयात्रियों की यात्रा को आसान बनाने के लिए जल्द ही ऑनलाइन हेलीकॉप्टर बुकिंग सेवा भी शुरू करेगा।

सीआईएससीई : 10वीं, 12वीं कक्षा के नतीजे आज होंगे घोषित

नई दिल्ली। काउंसिल फॉर इंडियन स्कूल सर्टिफिकेट एग्जामिनेशन (सीआईएससीई) सोमवार को 10वीं और 12वीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा के परिणाम घोषित करेगा। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। बोर्ड के मुख्य कार्यकारी अधिकारी और सचिव जोसेफ इमैनुएल ने रविवार को बताया, आईसीएसई (10 वीं कक्षा) और आईसीएस (12वीं कक्षा) के परिणाम की घोषणा छह मई को दिन में 11 बजे की जाएगी। परिणाम बोर्ड की वेबसाइट, कैरियर्स पोर्टल और डिजीलॉकर पर उपलब्ध होंगे। बोर्ड ने इस सत्र से 10 वीं और 12वीं कक्षा के लिए कंपार्टमेंट परीक्षा बंद करने का भी निर्णय लिया है। इमैनुएल ने कहा, जो अभ्यर्थी परीक्षा के एक ही वर्ष में अपने अंक या ग्रेड में सुधार करना चाहते हैं, वे अधिकतम दो विषयों में सुधार परीक्षा दे सकते हैं। अंक सुधार परीक्षा जुलाई में आयोजित की जाएगी।

सामने आया कोरोना का नया वेरिएंट 'FLiRT'

नई दिल्ली : कोरोना वायरस के उस खौफनाक दौर को लोग आज भी भूल नहीं पाए हैं। भले ही कोरोना के मामले कम हो गए हैं लेकिन यह वायरस अभी भी हमारे बीच मौजूद है। इसके अलग-अलग स्ट्रेन हेल्थ एक्सपर्ट्स और लोगों के लिए चिंता का विषय बने हुए हैं। इसी बीच अब कोरोना का और एक नया स्ट्रेन सामने आया है, जिसने फिर से लोगों की चिंता बढ़ा दी है। संयुक्त राज्य अमेरिका में कोविड-19 के वेरिएंट का एक समूह चिंता का कारण बन गया है। कोरोना के इस नए वेरिएंट को वैज्ञानिकों ने 'FLiRT' नाम दिया है। यह नया वेरिएंट ओमिक्रोन फैमिली का माना जा रहा है। बता दें ओमिक्रोन कोरोना का वही स्ट्रेन है, जिसने दुनियाभर में सबसे ज्यादा तबाही मचाई थी। भारत में आई कोरोना की दूसरी लहर के पीछे भी ओमिक्रॉन ही जिम्मेदार था। हेल्थ एक्सपर्ट्स और वैज्ञानिकों के अनुसार, कोरोना का यह वेरिएंट फिलहाल अमेरिका के कुछ हिस्सों में फैल रहा है। बढ़ते मामलों को देखते हुए आशंका जताई जा रही है कि यह वेरिएंट दुनिया के अन्य हिस्सों में भी अपने पैर पसार सकता है। ऐसा भी कहा जा रहा है कि बूस्टर डोज लगवाने के बाद भी यह स्ट्रेन आपको अपनी चपेट में ले सकता है, जिसके कारण लोग काफी चिंता में हैं।

प्रधानमंत्री मोदी झारखंड के सिमरिया में 12 मई और बिरनी में 16 को करेंगे जनसभा

बिभा संवाददाता

रांची । राज्य की धरती पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी फिर आएंगे। वे 12 मई को चतरा लोकसभा क्षेत्र के सिमरिया प्रखंड स्थित मुरुवे मैदान में अपराह्न तीन बजे जनसभा को संबोधित करेंगे। इसके बाद 16 मई को गिरिडीह जिला अंतर्गत बिरनी प्रखंड के पेशमअरवाड़ मैदान में सुबह आठ बजे से जनसभा को संबोधित करेंगे। इससे पूर्व प्रधानमंत्री ने दो दिवसीय दौरे पर तीन मई को सिंहभूम में जनसभा और राजधानी रांची में रोड शो किया था। साथ ही चाई मई को पलामू और सिसई क्षेत्र में जनसभा को संबोधित किया था।

प्रधानमंत्री मोदी का झारखंड से गहरा लगाव है। उन्होंने इस धरती से ही आयुष्मान भारत योजना की लॉन्चिंग की थी। धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा के गांव उलीहातु जाने वाले वे देश के पहले प्रधानमंत्री हैं। उन्होंने भगवान बिरसा मुंडा की जयंती 15 नवंबर को पूरे देश में जनजातीय गौरव दिवस के रूप मनाने की शुरूआत की। इतना ही नहीं मोदी ने राष्ट्रीय स्तर की कई योजनाओं की लॉन्चिंग भी झारखंड के धरती से की।

राहुल गांधी की 7 मई को सिसई और चाईबासा में करेंगे चुनावी सभा

बिभा संवाददाता

रांची। झारखंड में 13 मई से चार चरणों में लोकसभा चुनाव के लिए मतदान होने वाला है। लोकसभा चुनाव के चौथे चरण में 13 मई को सिंहभूम, खूंटी, लोहरदगा और पलामू लोकसभा सीटों पर वोटर अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। इसे लेकर राज्य में विभिन्न राजनीतिक दलों के दिग्गज नेताओं के आगमन की शुरूआत हो गई है। भाजपा की तरफ से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, राजस्थान, मध्यप्रदेश और उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्रियों ने राज्य का दौरा किया।

अब इंडी गठबंधन की तरफ से कांग्रेस नेता राहुल गांधी 07 मई को राज्य के दौरे पर आ रहे हैं। लोहरदगा, खूंटी लोकसभा क्षेत्र के लिए गुमला के सिसई में उनकी जनसभा होगी। इसके साथ ही सिंहभूम लोकसभा क्षेत्र में भी राहुल गांधी की जनसभा इसी दिन प्रस्तावित है।

कांग्रेस प्रदेश प्रभारी गुलाम अहमद मीर ने बताया कि राहुल गांधी जनसभा करने के लिए सात मई को रांची पहुंचेंगे। लोहरदगा और खूंटी दो लोकसभा सीटों को लेकर गुमला के सिसई में जनसभा को संबोधित करेंगे। वहीं चाईबासा में भी चुनावी जनसभा को संबोधित करेंगे।

सीएम चम्पाई सोरेन की अपील- जोबा मांझी को वोट देकर भारी मतों से बनाएं विजयी

झारखंड की खनिज संपदाओं को लूटने के लिए भाजपा को वोट चाहिए: चम्पाई

बिभा संवाददाता

पश्चिम सिंहभूम। मुख्यमंत्री चम्पाई सोरेन ने कहा कि लोकतंत्र व संविधान को बचाने के लिए महागठबंधन की प्रत्याशी जोबा मांझी को वोट देकर भारी मतों से विजयी बनाये। उन्होंने कहा कि झारखंड की खनिज संपदाओं को लूटने के लिए भाजपा को वोट चाहिए। हमारे जल, जंगल, जमीन को बेचकर अडानी अंबानी के हाथों में भाजपा सौंपना चाहती है. जिसे कभी पूरा नहीं होने दिया जाएगा। मुख्यमंत्री रविवार को मझगांव विधानसभा क्षेत्र के कुमारडूंगी प्रखंड के ताड़ीसाई व पुटिसिया के लादुसाई राका मैदान में महागठबंधन की साझा प्रत्याशी जोबा मांझी के पक्ष में आयोजित चुनावी सभा को संबोधित कर रहे थे।

स्वास्थ्य मंत्री बन्ना गुप्ता ने कहा कि झारखंड शहीदों की धरती है, इसे लूटने नहीं दिया जाएगा। भाजपा जुमला बाजी पार्टी बन गई है। झारखंडी सीधी लड़ाई लड़ना जानते हैं लेकिन भाजपा पीठ पर छुरा भोकने का काम करती है। उन्होंने कहा कि प्रत्याशी जोबा माझी को भारी मतों से जीत दिलाकर महागठबंधन को मजबूत करें, ताकि क्षेत्र की समस्याओं को दिल्ली में उठाया जा सके।

वहीं महागठबंधन प्रत्याशी जोबा मांझी ने कहा कि तानाशाह वाली भाजपा सरकार को केंद्र से उखाड़ फेंकने के लिए हम सभी को एकजुट होने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि साजिश के तहत राज्य के पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को जेल भेजने का काम किया गया है, लेकिन झारखंडियों के मान सम्मान के लिए हेमंत सोरेन भाजपा के सामने नहीं झुके।

अंतरराष्ट्रीय बॉर्डर पर चौकीदारी का जिम्मा झारखंड सरकार को कब मिला : मुख्यमंत्री

रांची। मुख्यमंत्री चम्पाई सोरेन ने राज्य में घुसपैठियों के मामले में रविवार को सोशल मीडिया एक्स पर कहा कि झारखंड सरकार को अंतरराष्ट्रीय बॉर्डर पर चौकीदारी का जिम्मा कब मिला। यह गलती किसकी है। सीमा को सील क्यों नहीं किया जाता है। उल्टे भाजपा आरोप लगाती है कि यहां की डेमोग्राफी बदल रही है। भाजपा ही बताए गलती किसकी है। भाजपा के एजेंडे से महंगाई, बेरोजगारी और युवाओं की बदहाली जैसे मुद्दे गायब हैं।

मुख्यमंत्री ने नसीहत देते हुए कहा कि जुमलों से बचिए। वैसे लोगों को सांसद चुनिए, जो आपके मुद्दों को देश की सबसे बड़ी पंचायत में उठा सकें। झारखंड के अधिकतर सांसदों ने जिस प्रकार राज्य की जनता की मांगों व अपेक्षाओं को लगातार नकारा है, जिस तरह से उन्हें महंगाई, 1932 के खतियान आधारित स्थानीय नीति, ओबीसी आरक्षण, सरना-आदिवासी धर्म कोड समेत अन्य मुद्दों पर जुमले सुनाये गए हैं, उसका जवाब जनता देगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड में राशन कार्ड तक आधार संख्या के बिना नहीं बनते। जब आधार कार्ड बनाने वाली एजेंसी केंद्र सरकार के अधीन काम करती है, नागरिकता देना भी केंद्र के अधिकार क्षेत्र आता है, तो फिर इस प्रक्रिया में होने वाली गड़बड़ी के लिए कौन जिम्मेदार है। उन्होंने कहा कि इतिहास में पहली बार इतनी गरीबी देखी है। भाजपा सरकार के राज में एलपीजी सिलेंडर की कीमत 400 रुपये से बढ़कर 1100 रुपये हो गई। राशन से लेकर सब्जी-भाजी और तेल-मसालों का हाल भी लोगों के सामने है। ऐसे हालात बन गए हैं कि देश के इतिहास में पहली बार 80 करोड़ लोगों को पांच किलो अनाज देना पड़ रहा है।

खड़गे, सोनिया, राहुल और प्रियंका समेत कई दिग्गज पांचवें चरण के चुनाव में करेंगे प्रचार

बिभा संवाददाता

रांची। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के मुकुल वासनिक ने 20 मई को पांचवें चरण के होने वाले लोकसभा चुनाव के दृष्टिगत झारखंड प्रदेश के लिए स्टार प्रचारकों की सूची जारी कर दी है। प्रदेश कांग्रेस कमेटी, मीडिया विभाग के चेयरमेन सतीश पॉल मुंजनी ने रविवार को कहा कि स्टार प्रचारकों में मल्लिकार्जुन खड़गे, सोनिया गांधी, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी वाद्रा, केसी वेणुगोपाल, गुलाम अहमद मीर, राजेश ठाकुर, भुपेश बघेल, सुखविंदर सिंह सुक्खू, ए रेवंत रेड्डी, सलमान खुर्शीद, जयराम रमेश, तारिक अनवर, डॉ. अजय कुमार, सुबोधकांत सहाय, राना केपी सिंह, आलमगीर आलम, डॉ. रामेश्वर उरांव, बादल पत्रलेख, बन्ना गुप्ता, इमरान प्रतापगढ़ी, सुप्रिया श्रीनेत, दीपिका पांडे सिंह, फुरकान अंसारी, चन्द्र शेखर दुबे, डॉ. प्रदीप बालमुचू, बंधु तिर्की, जलेश्वर महतो, शहजादा अनवर, रामचन्द्र सिंह, अंबा प्रसाद, उमाशंकर अकेला, योगेन्द्र साव, ममता देवी, अशोक चौधरी, जयशंकर पाठक, अमुल्य नीरज खलखो, केदार पासवान, गुंजन सिंह और अभिजीत राज शामिल हैं।

लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के मतदान लिए चुनाव प्रचार थमा

एजेंसी

नयी दिल्ली: लोकसभा चुनाव के तीसरे चरण के मतदान के लिए चुनाव प्रचार का शोर रविवार की शाम पांच बजे थम गया।

चुनाव आयोग तीसरे चरण की वोटिंग को लेकर तैयारियों को अंतिम रूप दे रहा है। चुनाव के वोटों की गिनती चार जून को की जाएगी। तीसरे चरण के चुनाव में गृह मंत्री अमित शाह, ज्योतिरादित्य सिंधिया, शिवराज सिंह चौहान, दिग्विजय सिंह, डिंपल यादव, सुप्रिया सुले समेत कई दिग्गजों का फैसला होगा। अब तक देश में लोकसभा के पहले चरण में 19 अप्रैल को 21 राज्यों की 102 सीटों पर मतदान हुआ। फिर 26 अप्रैल को दूसरे चरण में 88 सीटों पर मतदान हुआ। जिसके बाद अब सात मई को तीसरे चरण के मतदान होंगे। जिसके बाद 13 मई को चौथे, 20 मई को पांचवे, 25 मई को छठे, एक जून को सातवें चरण के मतदान होंगे। चार जून को वोटों की गिनती की जाएगी।

तीसरे चरण के लिए सभी प्रत्याशियों और राजनीतिक दलों ने अपने पूरे जोश के साथ चुनावी प्रचार किया। चुनाव आयोग तीसरे चरण की वोटिंग को लेकर तैयारियों में जुटा हुआ है।

चुनाव आयोग मतदान प्रतिशत बढ़ाने के लिए मतदाता जागरूकता अभियान के कई कार्यक्रम कर रहा है।

रिकॉर्डतोड़ चुनावी खर्च का महत्वपूर्ण हिस्सा भारत की ग्रामीण आबादी के पास जाएगा

एजेंसी

कोलकाता। साल 2024 का लोकसभा चुनाव शुरू होने के साथ ही न केवल राजनीतिक परिदृश्य में बल्कि अर्थव्यवस्था पर इसके असर को लेकर भी उम्मीदें बनी हुई हैं, खासकर भारत के ग्रामीण क्षेत्र में, क्योंकि विशेषज्ञों ने इस चुनाव को देश के इतिहास में अब तक लड़ा गया सबसे महंगा चुनाव बताया है। सेंटर फॉर मीडिया स्टडीज के अध्यक्ष और 35 वर्षों से चुनाव खर्च पर नजर रखने वाले एन भास्कर राव ने इस चुनाव में लगभग 1.35 लाख करोड़ रुपये का खर्च होने का अनुमान लगाया है।

व्यावसायिक घरानों का मानना है कि चुनाव के दौरान खर्च की गई राशि का महत्वपूर्ण हिस्सा भारत की ग्रामीण आबादी के पास जाएगा जिससे बिक्री में बढ़ोतरी होगी। एक अध्ययन के अनुसार, भारत में 2019 के लोकसभा चुनाव में लगभग 35 प्रतिशत चुनावी खर्च अभियान और प्रचार पर किया गया था। राशि का दूसरा सबसे बड़ा हिस्सा विभिन्न माध्यमों से मतदाताओं को मिला था, जिसमें प्रमुख माध्यम श्रमिकों को काम पर रखना, अभियान सामग्री खरीदना, मुफ्त उपहार और कुछ मामलों में प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरण थे।

उद्योग जगत के लोगों को उम्मीद है कि चुनाव में होने वाले खर्च का अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा, खासकर भारत के ग्रामीण इलाकों में। भारत की शीर्ष प्लाईबोर्ड निमार्ता कंपनी सेंचुरी प्लाईबोर्ड के कार्यकारी निदेशक केशव भजंका ने पीटीआई-भाषा को बताया, आने वाले दो तीन महीनों में अनुमानित भारी चुनावी खर्च से ग्रामीण खर्च में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।ह उन्होंने कहा कि उनकी कंपनी का उद्देश्य ग्रामीण उपभोक्ताओं की बढ़ती प्राथमिकताओं और जरूरतों के अनुरूप अपने उत्पाद की पेशकश और विपणन रणनीतियों को अपनाकर इस अवसर का लाभ उठाना है।

भजंका ने कहा, हकंपनी अपने वितरण जाल का विस्तार करने और ग्रामीण क्षेत्रों में ब्रांड की दृश्यता बढ़ाने के अपने प्रयासों को तेज करने की भी योजना बना रही है ताकि चुनाव के बाद अपेक्षित बाजार में वृद्धि का एक बड़ा हिस्सा हासिल किया जा सके। अन्नपूर्णा स्वादिष्ट के प्रबंध निदेशक राम बागला ने इस बात पर प्रकाश डाला कि वित्त वर्ष 2023-24 की दूसरी और तीसरी तिमाही के दौरान समग्र रूप से फास्ट मूविंग कंज्यूमर गुड्स (एफएमसीजी) क्षेत्र की ग्रामीण मांग थोड़ी कम रही है। बागला ने कहा, हम चुनाव संबंधी खर्चों पर अधिक खर्च के मद्देनजर ग्रामीण और अर्ध-शहरी बाजारों की मांग में सुधार होने की उम्मीद कर रहे हैं। सरकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने पर खासा जोर देती नजर आ रही है।

इससे गांवों में खपत बढ़ने की संभावना है, जिससे एफएमसीजी उत्पादों की मांग बढ़ेगी। पश्चिम बंगाल के मुख्य निर्वाचन अधिकारी ने पुष्टि की कि आदर्श आचार सहिंता की शुरूआत के बाद से राज्य से 57.67 करोड़ रुपये की मुफ्त वस्तुएं जब्त की गई हैं।

आईपीएल: गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन से कोलकाता ने लखनऊ को 98 रनों से हराया

एजेंसी

लखनऊ : सुनील नारायण की (81) रनों की पारी और हर्षित राणा और वरुण चक्रवर्ती की बेहतरीन गेंदबाजी बदौलत कोलकाता नाइट राइडर्स ने रविवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 54वें मुकाबले में लखनऊ सुपर जायंट्स को 98 रनों से हरा दिया है। इस आठवीं जीत के साथ ही कोलकाता अंक तालिका में शीर्ष पर पहुंच गयी है।

236 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी लखनऊ की शुरूआत अच्छी नहीं रही और उसने दूसरे ही ओवर में अर्शीन कुलकर्णी (9) रन का विकेट गवां दिया। इसके बाद कप्तान के एल राहुल और मार्कस स्टॉयनिस ने दूसरे विकेट के लिये 50 रनों की साझेदारी की। आठवें ओवर में केरल राहुल 21 गेंदों मे 25 रन बनाकर आउट हुये। अगले ही ओवर में दीपक हुड्डा (5) उसके बाद मार्कस स्टॉयनिस 21 गेंदों में 36 रन बनाकर पवेलियन लौट गये। इसके बाद लखनऊ के लगातार विकेट गिरते रहे। निकोलस पूरन (10), आयुष बदोनी (15), एशटन टर्नर (16), क्रुणाल पंड्या (5), युद्धवीर सिंह चरक (7) और रवि बिश्नोई (2) रन बनाकर आउट हुये। कोलकाता ने लखनऊ की पारी को 16.1 ओवर में 137 रन पर समेटते हुये मुकाबला 98 रनों से जीत लिया।

कोलकाता की ओर से वरुण चक्रवर्ती और हर्षित राणा तीन- तीन विकेट लिये। आंद्रे रसल को दो विकेट मिले। मिचेल स्टार्क और सुनील नारायण ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

इससे पहले कोलकाता ने बेहतरीन बल्लेबाजी का मुजाहिरा करते हुए लखनऊ को जीत के लिए 236 रनों का लक्ष्य दिया था।

आज यहां लखनऊ सुपर जायंट्स के कप्तान के एल राहुल ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। बल्लेबाजी करने उतरी कोलकाता की फिल सॉल्ट और सुनील नारायण की सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरूआत करते हुए पहले विकेट लिये 61 रन जोडे। पांचवें ओवर में नवीन उल हक ने फिल सॉल्ट को आउट कर लखनऊ को पहली सफलता दिलाई। सॉल्ट ने 14 गेंदों में पांच चौके और एक छक्के की मदद से (32) रन बनाये। इसके बाद 12वें ओवर में रवि बिश्नोई ने सुनील नारायण को आउट किया। सुनील नारायण ने 39 गेंदों में छह चौके और सात छक्के लगाते हुए तूफानी अंदाज में (81) रनों की पारी खेली। अंगकृष रघुवंशी (32), आंद्रे रसल (12), रिंकू सिंह (16) और कप्तान श्रेयस अय्यर (23) रन बनाकर आउट हुये। रमनदीप सिंह 25 और वेंकटेश अय्यर (1) रन बनाकर नाबाद रहे। कोलकाता ने निर्धारित 20 ओवरों में छह विकेट पर 235 रनों का स्कोर खड़ा किया। लखनऊ सुपर जायंट्स की ओर से नवीन उल हक ने तीन विकेट लिये। यश ठाकुर, रवि बिश्नोई और युद्धवीर सिंह चरक ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

संक्षिप्त खबरें

गांव-गांव जाकर लोगों को राष्ट्रहित में मतदान करने के लिए प्रेरित कर रहे परिषद के कार्यकर्ता

मांडर। अभाविप झारखंड प्रांत द्वारा शत प्रतिशत मतदान के ध्येय के साथ पूरे प्रदेश में मतदाता जागरण अभियान चलाया जा रहा है जिसके निमित्त रांची ग्रामीण के सभी प्रखंडों में मतदाता जागरण अभियान चलाया जा रहा है, परिषद के कार्यकर्ता गांव गांव जाकर छोटी-छोटी बैठक करके लोगों को राष्ट्रहित में शत प्रतिशत मतदान करने के लिए आग्रह कर रहे हैं परिषद के कार्यकर्ता ₹संकल्प मतदान का राष्ट्र के उत्थान का₹ नारा के साथ लोगों के पास जा रहे हैं। वोट फॉर भारत का कैंपेन भी चला रहे हैं।गांव-गांव में जाकर उन्हें राष्ट्र हित में मतदान करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं आज मांडर इकाई के कार्यकताओं ने मांडर प्रखंड के विभिन्न गांव में मतदाता जागरूकता अभियान चलाया लोगों को शत प्रतिशत मतदान करने के लिए आग्रह किया। इस अभियान में मुख्य रूप से प्रांत कार्यकारिणी सदस्य आदर्श प्रसाद जिला संयोजक उत्कर्ष तिवारी कार्यकर्ता शिवम पाठक ओम प्रणव, धीरज, सीताराम, विक्की राहुल, कुणाल, राजा सहित दर्जनों कार्यकर्ता लगे हुए हैं।

ट्रैक्टर पलटने से एक युवक की हुई मौत

सोनाहातू। प्रखंड क्षेत्र के जिंतु पंचायत अंतर्गत मिटकुटोली गांव के समीप रविवार सुबह पांच बजे एक बालू लदा ट्रैक्टर पलटने से चालक 22 वर्षीय युवक सत्यानारायण सिंह मुंडा का मौत हो गया है। घटना की सूचना पर सोनाहातू पुलिस घटनास्थल पर पहुंच कर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्डम के लिए रिम्स भेज दिया है। घटना के संबध में स्थानीय लोगों ने बताया कि चोरी छिपे बालू लेकर ट्रैक्टर जा रहा था। हड़बड़ी मैं संतुलन बिगड़ जाने से ट्रैक्टर पलट गया जिससे चालक का मौत हुआ है। मृतक सोनाहातू थाना क्षेत्र के गोमियाडीह गांव का रहने वाला था। मृतक के माता पिता नहीं है। एक वर्ष पूर्व ही शादी किया था।

बूथ स्तर में पर मतदाता जागरूकता अभियान चलाया गया

राहे : प्रखंड के पर्वतीय दुर्गम क्षेत्र के अम्बाझरिया पंचायत के चंदवाटुंगरी बूथ 149 में लोगो के बीच मतदाता जागरूकता अभियान चलाया गया ।सेविका और बीएलओ जालीबीना टोप्पो के द्वारा ग्रामीणों के बीच मतदान प्रक्रिया को बारीकी से बताया गया। इस दौरान मतदाता पर्ची का वितरण किया गया।

एसएसबी के जवानों ने मनाया पर्यावरण दिवस

राहे : पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में एसएसबी 26 वी वाहिनी के कमांडेंट एसडी शेरखाने निदेर्शानुसार एसएसबी 26 वी बटालियन के ए कम्पनी सताकी के जवानों के द्वारा सताकी के अन्तर्गत ग्राम हल्दीबेड़ा गांव में पर्यावरण जागरूकता अभियान कार्यक्रम किया गया। गांव के बच्चे,महिला और पुरुषों के बीच पर्यावरण से संबधित जानकारी दिया गया। कम्पनी कमांडर शशि कुमार ने बताया कि कैसे पर्यावरण को बचाना है और भविष्य में क्या लाभ मिलेगी ।इस अभियान में ए कम्पनी के कमांडर शशि कुमार के साथ सहायक उपनिरीक्षक तिलक राज और अन्य जवान इस अभियान में मौजूद थे।

घर से लापता हुई वृद्ध महिला, मामला दर्ज

रांची/पिठोरिया। पिठोरिया थाना क्षेत्र के लोहड़िया टोला निवासी गंगा साहू की मां बालो देवी पति स्व. भूषण साहू उम्र 72 वर्ष 1 मई 2024 सुबह नौ बजे से लापता है। उनकी मानसिक स्थिति सही नहीं है। उन्हें ढूंढने की पूरी कोशिश की जा रही है पर पता नहीं चल पा रहा है। महिला की तलाश में परिजनों से नाते-रिश्तेदारों से लेकर मायके तक तलाश किया, लेकिन महिला का कहीं कोई पता नहीं चला। परिजनों के जब सारे प्रयास फेल हो गए तो उन्होंने पिठोरिया थाना पहुंचकर उनपर महिला की गुमशुदगी का सनहा दर्ज कराई। वह नारंगी रंग की साड़ी पहनी है और रंग गोरा है। यदि इस महिला के बारे में किसी को पता चले तो मोबाइल नंबर 6203373098 या 6299535254 पर सूचना देने की अपील की गई है।

योग प्रतियोगिता का आयोजन

रांची : रांची जिला ओपन योग प्रतियोगिता के दूसरे दिन सुबह 8 बजे से प्रतियोगिता शुरू किया गया। जिसमे अंडर 8 वर्ष के प्रतिभागियों के द्वारा प्रतियोगिता का शुभारंभ किया गया। 8 वर्ष से कम के सभी प्रतिभागियों को स्वर्ण मेडल दे कर प्रोत्साहित किया गया। जिससे बच्चो में योग के प्रति प्रोत्साहन मिले और वो बचपन से ही योग को अपने जीवन में अपनाए और नियमित योग अभ्यास करे । आज अंडर 8 से अंडर 18 तक के प्रतियोगिता संपन्न किया गया । समापन समारोह में मुख्य अतिथि स्पोर्ट्स योगा एसोसिएशन के प्रेसिडेंट रीवा चक्रवर्ती एवं अन्य गणमान्य अतिथिगण उपस्थित रहे जिसमें महेंद्र कुमार राज, संजय झा, रजनी बक्शी, पंकज प्रसाद, राहुल पोद्दार उपस्थित रहे।

वोट की राजनीति करना ही जेएमएम-कांग्रेस का उद्देश्य रह गया है : सुदेश

बिभा संवाददाता

रांची : चुनाव और वोट की राजनीति करना ही जेएमएम-कांग्रेस का उद्देश्य रह गया है। जेएमएम-कांग्रेस की सरकार के साढ़े चार साल होने को हैं। इस दौरान राज्य ने बहुत कुछ खोया और सहा। अब वादाखिलाफी सरकार की विदाई का वक्त आया है। उक्त बातें पार्टी अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो ने हरमू स्थित केंद्रीय कार्यालय में आयोजित मिलन समारोह में कही। इस दौरान मैट्रिक्स क्रॉप केअर प्राइवेट लिमिटेड के प्रबंध निदेशक नवीन कुमार, निदेशक सतेंद्र कुमार नारायण समेत कई युवाओं ने पार्टी की सदस्यता ग्रहण की।

सुदेश कुमार महतो ने कहा कि सरकारी संरक्षण में खनिज संपदाओं का दोहन बदस्तूर जारी है। और इसने इतिहास बना दिया है। सरकार के पास युवाओं के नियोजन, सूखे खेतों में सिंचाई का प्रबंध करने के लिए कोई प्लान नहीं है। जिसका परिणाम है जनता, किसान, युवा सभी असहाय महसूस कर रहे हैं। राज्य में चौतरफा निराशा है।

मौके पर पार्टी की सदस्यता ग्रहण करने वाले नवीन कुमार और उनके समर्थकों का स्वागत करते हुए केंद्रीय अध्यक्ष ने कहा कि जीवन में एक सफल मुकाम हासिल करने के बाद वापस जमीन से जुड़कर काम करने की इच्छाशक्ति बहुत कम लोगों में होती है। नवीन के हमारे साथ जुड़ने से पार्टी में एक नवीन सोच का पदार्पण हुआ है।

पार्टी की सदस्यता ग्रहण करने वाले नवीन कुमार ने कहा कि जब सामाजिक जीवन में आने का निश्चय किया तो सबसे पहले आजसू का नाम जेहन में आया। सुदेश महतो की सोच और व्यक्तित्व से प्रभावित होकर पार्टी में शामिल हो रहा हूं। पार्टी के नीति सिद्धांतों को जन जन तक पहुँचाने का काम करूंगा।

गिरिडीह लोकसभा क्षेत्र से एनडीए के आजसू प्रत्याशी चंद्र प्रकाश चौधरी कल 06 मई दिन सोमवार को सुबह 11 बजे अपना नामांकन दाखिल करेंगे। नामांकन के उपरांत बोकारो के जैना मोड़ स्थित बांधडीह स्कूल मैदान में जनसभा का आयोजन किया गया है। इस जनसभा को भाजपा प्रदेश प्रभारी लक्ष्मीकांत वाजपेयी, पूर्व मुख्यमंत्री सह भाजपा प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी, बिहार के उपमुख्यमंत्री सह बिहार भाजपा अध्यक्ष सम्राट चौधरी, पूर्व उपमुख्यमंत्री सह आजसू पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो समेत गठबंधन के कई नेतागण संबोधित करेंगे। नामांकन कार्यक्रम में गिरिडीह लोकसभा क्षेत्र की जनता भी भारी संख्या में शामिल होकर अपना आशीर्वाद व समर्थन प्रदान करेगी। मौके पर मुख्य रूप से केंद्रीय महासचिव ब्रज मोहन कुमार, केंद्रीय सचिव रोहित प्रकाश प्रीत, जितेंद्र सिंह, केंद्रीय कार्यालय सचिव बनमाली मंडल, केंद्रीय प्रवक्ता डॉ.सुधीर यादव, केंद्रीय सह प्रवक्ता ज्ञान सिन्हा, केंद्रीय मीडिया संयोजक परवाज खान, केंद्रीय सदस्य शशि रंजन, अभिजीत वर्मा, रांची जिला उपाध्यक्ष सतेंद्र कुमार, अखिल झारखंड बुद्धिजीवी मंच के सदस्य डॉ. साहब आर्यन, युवा आजसू प्रदेश संयोजक गौतम सिंह उपस्थित रहें।

लोकसभा चुनाव को लेकर संजय सेठ ने गांवों एवं मोहल्लों में जनसंपर्क अभियान चलाया

बिभा संवाददाता

खलारी: रांची लोकसभा के निवर्तमान सांसद सह वर्तमान भाजपा प्रत्याशी संजय सेठ ने रविवार को खलारी प्रखंड के विभिन्न गांवों एवं मोहल्लों में जनसंपर्क अभियान चलाया। इस कार्यक्रम की शुरूआत भाजपा मंडल अध्यक्ष शैलेंद्र शर्मा के नेतृत्व में पहाड़ी मंदिर से हुई,जहां संजय सेठ और कांके विधायक समरीलाल ने माथा टेक कर बजरंग बली एवं भोलेनाथ का आशीर्वाद लिया ।तत्पश्चात लपरा तथा हेसलोंग में ग्रामीण महिलाओं की एक सभा को संबोधित किया और ग्रामीण महिलाओं तक पहुंच रहे केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी ली। उसके बाद नावाडीह में ग्रामीण महिलाओं एवम लोगों से

मिलकर उनका कुशलक्षेम जाना तथा लोगों से मोदी जी के नेतृत्व में एक बार फिर से पूर्ण बहुमत की सरकार बनाने की अपील की।वही केडी बाजार में कुछ व्यवसायियों से मिलकर व्यवसायिक संघ खलारी के सभी लोगों से मिलने की तारीख सुनिश्चित कर उन्हें इंगित करने की प्रार्थना की। इसके बाद डकरा स्थित बीएमएस कार्यालय में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ एवं बीएमएस के कार्यकताओं की एक संयुक्त बैठक को संबोधित करते हुए मां भारती को परम वैभव के उच्चतम शिखर पर विराजमान करने हेतु मोदी जी के हाथो को और सशक्त बनाने का आह्वाहन किया ।सभी कार्यकताओं ने एक स्वर में अबकी बार चार सौ पार के नारे को बुलंद किया। यह जनसंपर्क का यह कार्यक्रम डकरा से राय बाजार होते हुए बमने पंचायत तक चला ।इसमें मुख्य रूप से जिला महामंत्री प्रीतम साहू,मंडल महामंत्री कार्तिक पांडे एवम अनिल गंझू,सरस्वती देवी,अरविंद सिंह,शत्रुंजय सिंह, श्याम सुंदर सिंह, आनंद सिंह,आनंद झा,भरत रजक, मनोज जायसवाल,रविन्द्र पासवान,रवि भूषण,दिनेश गुप्ता, जितेंद्र भारती,शशि साहू,रामसूरत यादव,राजू गुप्ता,कमलेश महतो,संजीत तुरी,अनिल तुरी, प्रदीप ठाकुर,लाल बाबू, रितेश केसरी, दिनेश्वर सोनी,नागदेव सिंह, रतनलाल,रामप्रवेश नायक, प्रदीप सिंह, बिनोद शर्मा, मदन सिंह, उज्जवल सिंह, अजीत पांडे, राहुल सिंह, ममता केसरी, नीरा देवी, सरिता देवी, दीपशिखा देवी, अनीता देवी आदि मौजूद थीं।

बोरिंग से पहले नगर निगम को देनी होगी जानकारी

बिभा संवाददाता

रांची। रांची नगर निगम क्षेत्र में बोरिंग कराने का काम धड़ल्ले से चल रहा है। कोई परमिशन लेकर बोरिंग करा रहा है तो कोई अवैध तरीके से धरती चीर कर पानी निकाल रहा है। इसी को अंकुश लगाने के लिए रांची नगर निगम ने फरमान जारी कर दिया है। जिसके तहत रांची नगर निगम क्षेत्र में बोरिंग करने वाली बोरवेल कंपनियों को पहले रांची नगर निगम को सूचना देनी होगी। इसके बाद ही संबंधित जगहों पर बोरिंग के लिए जाएगा। इसके अलावा यह भी बताना होगा कि बोरिंग नार्मल होगी या डीप बोरिंग। बता दें कि रांची नगर निगम ने शहर में पानी की किल्लत से निपटने के लिए समर एक्शन प्लान बनाया है। जिसमें बोरिंग से पहले निगम को सूचना देना भी अनिवार्य किया गया है।

बोरवेल कंपनी के संचालकों पर नियमों का उल्लंघन करने पार कार्रवाई की जाएगी। इसके तहत 5 हजार रुपए मिनीमम जुमार्ना लगाने का प्रावधान है। इसके बाद एक्ट के तहत कार्रवाई की जाएगी। वहीं बोरवेल कंपनी के संचालक का लाइसेंस भी कैंसिल कर दिया जाएगा। शहर में ग्राउंड वाटर लेवल को बचाने के उद्देश्य से निगम ने यह कदम उठाया है।

नगर निगम ने मार्च से ही संचालकों को वाट्सएप ग्रुप में बोरिंग की जानकारी देने का आदेश दिया था। जिसकी जानकारी बोरवेल संचालक दे भी रहे थे।अब नगर निगम ने एक फार्म भरकर जमा करने का आदेश दिया है। रांची नगर निगम में फिलहाल 125 से अधिक बोरिंग आपरेटर पंजीकरण है। इसके अलावा बाहर के या फिर बिना पंजीकृत वाले आपरेटर निगम क्षेत्र में बोरिंग नहीं कर सकते है।

डकरा मे संयुक्त श्रमिक संगठन की हुई बैठक

बिभा संवाददाता

खलारी : डकरा में रविवार को संयुक्त श्रमिक संगठन की एक महतपूर्ण बैठक हुई ।जिसकी अध्यक्षता श्री मिथलेश सिंह और संचालन डी पी सिंह ने किया ।बैठक में एन के प्रबंधक के खिलाफ मजदूरों मे काफी रोष देखा गया ।सभी श्रमिक संगठन एन के प्रबंधन के खिलाफ जोरदार आंदोलन करेंगे ।रविवार को जिन मुद्दा पर आंदोलन करने की सहमती बना है वो इस प्रकार है ।संडे एवं पेड हॉलिडे के लिए हाजरी के सीमा समाप्त किया जाय,मजदूरों का प्रमोशन,एस एल पी समय पर दिया जाये,सिविल के कार्यों की समीक्षा हो फिजुलखर्ची को रोका जाये पूर्व मे हुए कार्यों की जाँच कराया जाये एवं दोषी लोगो पर कार्यवाई की जाये,सी एम आर ए के तहत सी सी एल कलोनी मे प्रतिदिन पानी दिया जाय, केडीएच एवं डकरा खदान का पानी सीएचपी तालाब डकरा मे भरा जाये एवं ओड़िया ब्रेक मे

खदान का पानी शुचारु रूप से चलाया जाये,चुनाव कार्य पर भेजे जाने वाले कामगारो को अग्रिम भुगतान किया जाये, बायोमेट्रिक हाजरी सबसे पहले ठेका मजदूरों का कराया जाये ताकि ठेका मजदूरों का उचित बेतन मिलता रहे,सी एम पी एफ, पेंसन,एवं ग्रेच्युटी संबंधित लंबित सभी मामले तत्काल हल किये जाये,खदान चलाने के लिए जमीन की ब्यवस्था के लिए सी सी एल प्रबंधन समय से पहल करे ताकि कोयला उत्पादन पर खराब असर ना पड़े और इसके लिए मजदूरों को नुकसान ना उठाना पड़े ।इसके आलावा अन्य कई मुद्दों को लेकर संयुक्त श्रमिक संगठन आंदोलन करेगी ।बैठक में मुख्य रूप से प्रेम कुमार,अमरभूषण सिंह,गोल्डन प्रसाद यादव,कृष्णा चौहान,प्रमोद कुमार पाठक,शैलेन्द्र कुमार सिंह,दिनेश भर,अरविन्द कुमार,संजय प्रसाद,बूटन चौहान,नविन चंद्र महतो,अमिताभ चौहान,अजय चौहान, अभिजीत कुमार,बिरेन पासवान,राजेंद्र चौहान,जय मंगल सिंह, रामप्रवेश नायक,तपेशर कुमार यादव, रमेश कुमार सिंह,रणजीत केशरी,मनोज कुमार चुरी,बिनोद कुमार सतनामी, मनोज कुमार डकरा,उदय कुमार सिंह,पिंकू सिंह,गोबिंद कुमार साहू,मो जसमुदिन, ईशान गंझु, टेकलाल महतो,नागेशर दुसाध सहित कई श्रमिक संगठन के लोग उपस्थित हुए ।

सर्वांगीण विकास को लेकर तमाड़ की जनता ने पांच सूत्री मांग को लेकर निकाली रैली

बिभा संवाददाता

तमाड़। सर्वांगीण विकास को लेकर लोकसभा चुनाव से पूर्व तमाड़ की आम जनता ने एकजुटता दिखायी। पांच सूत्री मांगो को लेकर आम जनता पक्ष और विपक्ष के नेताओ से चुनाव के पश्चात सभी पांच मांगो को पूरा करने का मांग को लेकर रहे गारंटी मांग रहे है। मांगो के समर्थन में तमाड़ की आम जनता द्वारा एक प्रयास - तमाड़ का विकास के बैनर तले रविवार को तमाड़ में बाइक रैली निकाली गयी। जिसका थीम रखा गया जागरूक मतदाता भाग्य विधाता। बाइक रैली में कोठारी बंधु चौक से शुरू होकर तमाड़ स्टैंड, नीचेटोली, रायडीह, दिऊड़ी, आमलेशा आदि जगहों से मतदाताओं को जागरूक करते हुए पुनः कोठारी बंधु चौक में आकर समाप्त हुआ। आम जनताओ की मांग तमाड़

स्टैंड स्थित फार्म की असिंचित परती भूमि में विशाल मॉडल कॉलेज निर्माण और उसके चहारदीवारी में मार्केट निर्माण, तमाड़ बड़ा तालाब के चारो और सौंदर्यीकरण और एक्यूप्रेशर जॉगिंग पार्क निर्माण, पतरा वन में जैविक उद्यान और वन्य प्राणी आश्रयणी और पर्यटन विकास, पुंडीदिरी गांव में नदी और पहाड़ों में पिकनिक स्पॉट के रूप में पर्यटन विकास के कार्य, बहुप्रतीक्षित नामकुम कांड्रा और खूंटी तमाड़ नई रेल पथ प्रोजेक्ट को जमीन में उतारना आदि मांग को लेकर नारेबाजी करते हुये रैली निकाली गयी। मौके पर दर्जनों युवा, बुद्धिजीवी, प्रबुद्धजन उपस्थित थे।

रामगढ़ चैम्बर ने रैली निकालकर मतदाताओं से मतदान करने की अपील की

बिभा संवाददाता

रामगढ़ : अगामी लोकसभा चुनाव में अधिक से अधिक मतदान हो और रामगढ़ जिले में शत प्रतिशत मतदान सुनिश्चित करने को लेकर रामगढ़ चैंबर ऑफ कॉमर्स के द्वारा रविवार की शाम रामगढ़ शहरी क्षेत्र में शत प्रतिशत मतदान सुनिश्चित करने को लेकर चेंबर अध्यक्ष विनय अग्रवाल के नेतृत्व में और एसडीओ आशीष गंगवार की उपस्थिति में रैली का आयोजन किया गया ।दुकानदारों राहगीरों और आम नागरिकों से अधिक से अधिक संख्या में घर से निकलकर 20 मई को मतदान करने की अपील की गई ।एसडीओ आशीष गंगवार ने दुकानदारों को विशेष अनुरोध किया कि मतदान वाले दिन कर्मचारियों को छुट्टी दे और मतदान करने के लिए जागरूक करें और उनकी उंगली पर मतदान का चिन्ह देखकर उन्हें पुरस्कृत भी करने का काम करें। चेंबर अध्यक्ष विनय अग्रवाल ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि चुनाव को महापर्व के रूप में ले अपने तो मतदान करें ही आसपास के लोगों को भी मतदान करने के लिए उत्साहित करें क्योंकि आपका एक वोट की कीमत लाखों करोड़ों रुपए से अधिक है।

रैली में चेंबर अध्यक्ष विनय अग्रवाल, एसडीओ आशीष गंगवार,मनजीत साहनी, मानू चतुवेर्दी, इंद्रपाल सिंह सैनी, प्रदीप सिंह,अनूप कुमार,वकील सिंह,मंजी सिंह,राहुल जैन,निशु प्रसाद, अनिल मित्तल, राजू अग्रवाल, आयुष अग्रवाल, विमल बुधिया, बालकिशन जालान,अमित सिन्हा,संवार अग्रवाल, आनंद अग्रवाल, अभिषेक अग्रवाल, मुरारी लाल अग्रवाल, कमल बगड़िया, महावीर अग्रवाल, अरुण राय, प्रकाश पटवारी, उमेश राजगढ़िया आदि दर्जनों चेंबर के सदस्य शामिल थे।

गौ परिक्रमा मंदिर का प्रथम वार्षिकोत्सव उल्लासपूर्वक हुआ संपन्न

बिभा संवाददाता

रांची : गौ माता सेवा समिति रांची के तत्वाधान मे सुकरहुटू कांके गौशाला मे नवनिर्मित श्री गोपाल कृष्ण जी का गौ परिक्रमा मंदिर का प्रथम वार्षिकोत्सव बड़े ही हर्षोल्लास,भक्तिमय तथा उल्लासपूर्वक मनाया गया। इस पावन अवसर पर भगवान का विग्रह, मंदिर परिसर एवं श्री कृष्ण गोपाल का सुगंधित पुष्पों से अलौकिक नयनाभिराम श्रृंगार, अखंड ज्योत, महाभोग प्रसाद भंडारा,भजन कीर्तन, महाआरती कार्यक्रम का आयोजन किया गया। महोत्सव का शुभारंभ सुबह 9 बजे श्री गणेश जी के आवाह्न एवं श्री गोपाल प्रभु का धार्मिक अनुष्ठान एवं पूरे विधि विधान एवं वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ पूजा अर्चना कर फल,मेवा,मिठाई का भोग अर्पित किया गया। तथा पावन अखंड ज्योत प्रज्वलित कर महाप्रसाद का भोग लगाया गया।

तत्पश्चात श्री हनुमान मंडल, श्री श्याम मंडल सहित कई भजन गायको द्वारा संगीतमय संकीर्तन प्रारंभ कर भजनों की अमृत वर्षा की। भजन गायक मनीष सोनी सज्जन पाड़िया, विजय खोवाल, श्रवण अग्रवाल, वी.डागा सहित कई भजन गायको ने अपनी सुमधुर भजनों के गंगा प्रवाहित कर भगवान श्री कृष्णा के श्री चरणों में भजनों की लड़ी लगा दी उनके गाए भजनों

प्रेम का तिनका जोड़ झोपड़ी बनी दीवानी की.....

सांवरे की महफिल को सांवरा सजाता है....

मेरी झोपड़ी के भाग्य आज जाग जाएंगे श्याम प्रभु आएंगे...

सुनो सुनो हनुमान जी एक जरूरी काम जी राम प्रभु से करवा दे भक्तों की पहचान जी..

पूरा मंदिर परिसर मधुर भजनों से भक्तिमय, यशमय, कृष्णमय का वातावरण हो गया फूलों की वर्षा की गई। संगीतमय भजनों से श्रोता भक्तगण भाव विभोर होते हुए खूब झूमे। महोत्सव में सैकड़ो भक्तों ने भंडारा महाप्रसाद भोग ग्रहण किया। सामूहिक रूप से महाआरती एवं प्रसाद वितरण के साथ गो परिक्रमा मंदिर का प्रथम वार्षिकोत्सव संपन्न हुआ।

गौ माता सेवा समिति ने महोत्सव में आए सभी आगंतुक अतिथियों सहित रांची गौशाला न्यास समिति, रांची जिला मारवाड़ी सम्मेलन, मारवाड़ी युवा मंच, अग्रवाल युवा सभा, के पदाधिकारियों को अंग वस्त्र ओढ़ाकर एवं भोग प्रसाद देकर अभिनंदन किया।

समिति के प्रवक्ता संजय सर्राफ ने बताया कि महोत्सव में समिति के संरक्षक राजकुमार गाड़ोदिया, महोत्सव संयोजक अशोक गाड़ोदिया,अध्यक्ष प्रमोद बजाज, सचिव मुकेश पोद्दार, विधायक सीपी सिंह, प्रदीप राजगढ़िया, भागचंद पोद्दार, रतन जालान, सज्जन सर्राफ, पुनीत पोद्दार, राजकुमार केडिया, विष्णु सोनी, सुरेश जैन, प्रकाश काबरा, संजय सर्राफ,अमर पोद्दार, विजय सरायका, दिलीप जालान, ललित पोद्दार, पवन बगड़िया, प्रदीप कनोई, मुरारी अग्रवाल, सूर्यो गोयनका, अमरजीत गिरधर, मुकेश सहित बड़ी संख्या में महिलाएं एवं भक्तगण उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

बीएसएनएल कार्यालय में लगी आग

रांची : राजधानी रांची के जुमार पुल के पास स्थित बीएसएनएल कार्यालय में भयानक आग लग गई। घटना के बाद पूरे इलाके में अफरा-तफरी मच गई। आनन फानन में मौके पर मौजूद बीएसएनएल कर्मचारियों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। साथ ही अग्निशमन विभाग को भी सूचना दी। आग इतनी तेजी से फैल रही है कि पूरा कार्यालय काले धुएं से भर गया। वहीं आसमान में धुएं के काले गुब्बारे दिखने लगे। खबर मिलते ही मौके पर कई फायर ब्रिगेड की गाड़ियां और बीआईटी ओपी पुलिस पहुंची है। आग की भयानक लपटों पर काबू पाने की कोशिश जारी है। अब तक मिली जानकारी के मुताबिक आज दोपहर कार्यालय कैंपस में रखे स्पेयर पार्ट में आग लगी पर सही वजह अब तक पता नहीं चल पाया है। इसके बाद आग तेजी से झाड़ियों में फैलने लगी और भयानक रूप धारण कर लिया। बताया जा रही है कि करोड़ों की संपत्ति का नुकसान हो गया है। परन्तु आग से कितना नुकसान हुआ है, इसका आकलन भी अब तक नहीं पता चल पाया है।

लोकसभा चुनाव में मतदाता पहचान पत्र बांटने के लिए रविवार को भी खुले रहे रांची के डाकघर

रांची : रांची डाक मंडल के डाकघर लोकसभा चुनाव के महापर्व के दौरान आम नागरिकों को सुविधा प्रदान करने के लिए आज खुला रहा। निर्वाचन आयोग द्वारा भेजे गए लगभग 53000 वोटर आईडी कार्डों को डाक के माध्यम से आम नागरिकों तक पहुंचाने के लिए रांची जीपीओ की मदद से सम्पूर्ण तैयारियां की गई हैं। शनिवार को देर रात तक रांची जेपीओ कार्यालय खुला रख कर वोटर आईडी को डिस्पैच किया गया। सुबह तक वोटर आईडी पिन कोड के अनुसर अपने वितरित होने वाले डाकघर तक पहुंच चुके थे । डाकियाओं ने भी एक जोर दिखाया और रविवार के दिन लोगों के घर घर तक जाकर वोटर आईडी कार्ड का वितरण किया। वरिष्ठ डाक अधीक्षक श्री उदयभान सिंह ने बताया कि डाक कर्मी, डाकिया और जीडीएस भाइयों की मदद से लगभग 10000 वोटर आईडी कार्डों का वितरण घर-घर पहुंचा कर किया गया है। उन्होंने इस अद्वितीय पहल के लिये डाक कर्मियों, डाकियों और जी डी एस भाइयों को धन्यवाद दिया और उनके सहयोग के लिए आम नागरिकों को भी धन्यवाद दिया। श्री सिंह ने कहा, इस महापर्व को सफल बनाने के लिए हम सभी लोग अपना बहुमूल्य मतदान जरूर करे। इसके साथ ही, उन्होंने आने वाले चुनाव में सुधारित सुविधाएं प्रदान करने का संकल्प भी जताया। उन्होंने कहा, आने वाले चुनाव में डाक विभाग नागरिकों को सुविधाएं प्रदान करने के लिए तत्पर रहेगा।

संत जेवियर्स कॉलेज में करियर उत्थान पर संवाद सत्र का आयोजन

रांची : संत जेवियर्स कॉलेज, रांची में कॉलेज के आईक्यूएसी व एनएसएस यूनिट के द्वारा कॉलेज सभागार में विद्यार्थियों को प्रबंधन कोर्स को करियर के रूप में चुनने के लिए एकदिवसीय संवाद सत्र का आयोजन किया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में करियर लांचर के झारखण्ड प्रमुख संतोष कुमार उपस्थित थे सत्र के दौरान वक्ता संतोष कुमार ने छात्रों को करियर में आगे के बेहतर भविष्य के लिए प्रेरक सुझाव दिए और प्रबंधन कोर्स सम्बन्धी कुछ दिशा निदेर्शों का भी उल्लेख कियो उन्होंने छात्रों को बताया कि बिना मार्गदर्शन के आपके करियर उत्थान कुछ कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है इसलिए विद्यार्थियों को मार्गदर्शकों और अपने रूचि विषय को केन्द्रिंदु बनाकर उस दिशा में चलना चाहिऐ सत्र का उद्घाटन कॉलेज के एनएसएस संयोजक डॉ. अनिर्बान गुप्ता ने छात्रों को प्रेरित करते हुए कहा कि आप उस पड़ाव पर हैं जहां आपको करियर सम्बन्धी जानकारी लेना आवश्यक होता है तभी सफल हो सकते हैं छात्रों ने भी बताया कि करियर उत्थान के लिए कॉलेज में ऐसे आयोजनों का होना हितकारी व प्रेरक कदम है। सत्र में कॉलेज के एनएसएस वालंटियर्स व विभिन्न संकायों के छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

मारवाड़ी ब्राह्मण सभा ने महिलाओं एवं बच्चों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का किया आयोजन

रांची : मारवाड़ी ब्राह्मण सभा रांची के तत्वाधान में आगामी 10 मई 2024 को आयोजित होने वाली भगवान परशुराम जन्मोत्सव के पूर्व सभा द्वारा समाज की महिलाओं एवं बच्चों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का मारवाड़ी ब्राह्मण भवन प्रांगण में आयोजन किया गया। इस अवसर पर सैकड़ो की संख्या में ब्राह्मण समाज की महिलाएं एवं बच्चों की सहभागिता रही विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों के लिए इसके अंतर्गत भाषण, लेखन, कुर्सी दौड़ एवं फैंसी ड्रेस प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । जबकि युवा महिलाओं के लिए कुर्सी दौड़ जैसे ही मनोरंजक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।प्रतियोगिताओं के लिए समाज की ही विभिन्न स्कूलों की शिक्षिकाओं सुश्री अनुभा शर्मा, श्रीमती रश्मि शर्मा, श्रीमती स्नेहा शर्मा ने आज निर्णायक की महत्वपूर्ण भूमिका को निभाया । समस्त कार्यक्रमों में सभा अध्यक्ष श्री रमेश चंद्र शर्मा, मंत्री कृष्ण लाल शर्मा कोषाध्यक्ष श्याम सुंदर गोवला संयोजक श्री अशोक पुरोहित सुनील शर्मा सहसंयोजक सर्वश्री नथमल शर्मा अमित सारस्वत, कमल शर्मा, मनीष शर्मा चेतन माटोलिया जबकि महिला समिति की श्रीमती ममता शर्मा, अनीता शर्मा, खुशी शर्मा, अमृता शर्मा ,नीलम शर्मा, बिंदु शर्मा, पिंकी शर्मा सहित सभा की सभी पूर्व एवं वर्तमान कार्यकारिणी की सभी सदस्यों में बढ़-चढ़कर कर भाग लिया । सभी विजयी प्रतिभागियों को आगामी परशुराम जन्मोत्सव के दिन पुरस्कृत किया जाएगा।

'मैं भी इलेक्शन अम्बेसडर' सोशल मीडिया हैशटैग अभियान को शिड्यूल करें पदाधिकारी : रवि कुमार

बिभा संवाददाता

रांची। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के. रवि कुमार ने कहा कि लोकसभा आम निर्वाचन-2024 में स्वीप कार्यक्रम के तहत सात मई को संध्या छह से आठ बजे के बीच #मैं भी इलेक्शन अम्बेसडर विशेष अभियान का संचालन निर्धारित है। इस अभियान के तहत निर्वाचन से जुड़े सभी सोशल मीडिया हैंडल पर मैं भी इलेक्शन अम्बेसडर हैशटैग के साथ लोकसभा चुनाव संबंधी कंटेंट पोस्ट कर इसे ट्रेंड में लाने का कार्य करें।

रवि कुमार ने रविवार को सोशल मीडिया हैशटैग अभियान को लेकर सभी जिले के उप निर्वाचन पदाधिकारी, स्वीप के नोडल पदाधिकारी, सोशल मीडिया के नोडल पदाधिकारी, जिला सूचना एवं विज्ञान पदाधिकारी, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी, सोशल मीडिया पब्लिसिटी ऑफिसर, सहायक जनसंपर्क पदाधिकारी, सोशल मीडिया का कार्य देख रहे सभी पदाधिकारी/कर्मी एवं निर्वाचन कार्य में संलग्न सभी कंप्यूटर ऑपरेटर के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग कर अभियान की जानकारी दी।

रवि कुमार ने अभियान के तहत निर्धारित तिथि एवं समय पर अपने-अपने सोशल मीडिया हैंडल पर चुनाव से संबंधित फोटो,वीडियो, टेक्स्ट अपलोड करते हुए संबंधित हैशटैग को ट्रेडिंग करने का निर्देश दिया। उन्होंने आमजनों से भी अपील की कि इस विशेष अभियान का हिस्सा बनकर अपने सोशल मीडिया हैंडल पर उपरोक्त हैशटैग लगाते हुए चुनाव से संबंधित सामग्री को जरूर पोस्ट करें।

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने अभियान को लेकर संबंधित लोगों से कहा कि निर्धारित समय के पूर्व ही अपने-अपने सोशल मीडिया हैंडल के माध्यम से तिथि एवं समय का शिड्यूल कर लें, ताकि निर्धारित समयावधि में उन्हें पोस्ट करने में कोई समस्या नहीं आए और वह ट्रेंड करता रहे। उन्होंने सभी से चुनाव से संबंधित अच्छे-अच्छे फोटो, वीडियो, टेक्स्ट आदि सामग्री को पोस्ट करने की बात कही। उन्होंने सोशल मीडिया इनफ्लुएंसर से भी अपील की कि वे इस विशेष अभियान का हिस्सा बनते हुए उपरोक्त हैशटैग लगाकर सोशल मीडिया पर पोस्ट करें। पावर प्रजेंटेशन के माध्यम से सोशल मीडिया पर पोस्ट के लिए तिथि एवं समय का शिड्यूल सहित अन्य संबंधित तकनीकी जानकारियां दी गईं।

वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में अपर मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी डॉ. नेहा अरोड़ा, उप निर्वाचन पदाधिकारी संजय कुमार सहित अन्य उपस्थित थे।

महेंद्र सिंह धोनी से जुड़ी धोखाधड़ी मामले की सुनवाई 30 मई को होगी

रांची। महेंद्र सिंह धोनी से जुड़े धोखाधड़ी मामले में सुनवाई हुई। कोर्ट ने आरोपियों को अगली सुनवाई के दौरान अपना जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया। मामले की अगली सुनवाई 30 मई को होगी। 15 करोड़ की धोखाधड़ी का मामला है। मामले की सुनवाई रांची सिविल कोर्ट में न्यायाधीश आरके पांडेय की अदालत में हुई। पिछली सुनवाई 19 अप्रैल को हुई थी। उस दिन कोर्ट ने दोनों पक्षों की दलील सुनी थी। जिसके बाद न्यायालय ने अरका स्पोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड, सौम्या दास और मिहिर दिवाकर को अगली सुनवाई के दिन खुद या वकील के माध्यम से अपना पक्ष रखने को कहा था। दोनों पक्षों को सभी दस्तावेज अगली सुनवाई के दौरान न्यायालय में प्रस्तुत करने को कहा गया था, जिसके बाद 4 मई को मामले की सुनवाई हुई। कोर्ट ने अगली तारीख 30 मई मुकर्रर की है। अरका स्पोर्ट्स लिमिटेड नाम से कंपनी बनाकर मिहिर दिवाकर, सौम्य दास और महेंद्र सिंह धोनी पूरे देश में क्रिकेट एकेडमी खोलना चाहते थे।

भ्रष्टाचार के नाम पर डराना, भड़काना और भटकाना बंद करें प्रधानमंत्री : बंधु तिर्की

बिभा संवाददाता

रांची : पूर्व मंत्री, झारखण्ड सरकार की समन्वय समिति के सदस्य एवं झारखण्ड प्रदेश कांग्रिस कमेटी के कार्यकारी अध्यक्ष बंधु तिर्की ने कहा है कि झारखण्ड में आयोजित अपनी चुनावी सभाओं में केवल भ्रष्टाचार का नाम लेकर झारखण्ड के लोगों को डराने, भड़काने और भटकाने से भाजपा को कोई चुनावी लाभ नहीं मिलनेवाला इसलिये प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को अपनी ऐसी कोशिशों को बंद कर देना चाहिये. उन्होंने कहा कि झारखण्ड के साथ ही देश की जनता भी उन्हें और भाजपा को सत्ता से हटाने का मन बना चुकी है.

श्री तिर्की ने कहा कि श्री मोदी को झारखण्ड के लोगों की यदि इतनी ही अधिक चिन्ता है और वे झारखण्ड के लोगों का हित चाहते हैं तो उन्हें

झारखण्ड की केन्द्र सरकार के पास बकाया 1 लाख 36 हजार करोड रुपये की राशि का भुगतान अविलंब कर देना चाहिये. श्री तिर्की ने कहा कि झारखण्ड के लोग एक बात को बहुत अच्छी तरीके से जान चुके हैं कि केन्द्र सरकार एक वैसे भ्रष्टाचार पूर्ण वातावरण को प्रोत्साहन दे रही है जहाँ भले ही ऊपरी तौर पर पकड़ में ना आये लेकिन सभी लोग इस बात को जानते हैं कि मोदी सरकार की कार्यप्रणाली में केवल और केवल कुछेक लोगों को ही फायदा पहुँचाने की बात होती है. आम लोगों को महँगाई, बेरोजगारी और अन्य अनेक वैसी जटिल समस्याओं से जूझना पड़ रहा है जिसपर ना तो प्रधानमंत्री मोदी का, न ही केन्द्र सरकार और ना ही भारतीय जनता पार्टी के नेताओं का ध्यान है.

श्री तिर्की ने कहा कि अपनी चुनावी सभाओं में जोहार और जय श्री राम करने के साथ ही प्रधानमंत्री महोदय को जय सरना कहकर भी अभिवादन करना चाहिये और उन्हें यह बताना चाहिये कि आखिर सरना धर्म कोड को सरकार क्यों नहीं लागू करना चाहती है? इसके पीछे भाजपा का आखिर वैसा कौन-सा डर है? श्री तिर्की ने कहा कि आदिवासियों के साथ प्रधानमंत्री मोदी द्वारा दिखाया जा रहा प्रेम और मीठी-मीठी बातें केवल दिखावा, छलावा और सीधे-साधे आदिवासियों एवं मूलवासियों को भटकाने की चाल है. श्री तिर्की ने कहा कि डीएमएफटी फंड के मामले में भी केन्द्र सरकार निष्पक्ष नहीं है और सही बात यह है कि उन सभी राज्यों के साथ केंद्र सरकार का सौतेला व्यवहार जगजाहिर है जहाँ विपक्ष के किसी दल, विपक्षी गठबंधन या इंडिया गठबंधन की सरकार है. श्री तिर्की ने कहा कि सौ बात की एक बात यही है कि कांग्रिस सरकार ने आदिवासियों के हित में अनेक वैसे कानून बनाये जिसमें आदिवासियों का हित सुरक्षित और संरक्षित था साथ ही उन कानूनों के निर्माण में आदिवासियों एवं मूलवासियों की जीवन पद्धति, जल, जंगल और जमीन को पूरा-पूरा महत्व देने के साथ ही प्रकृति के साथ सामंजस्य की भावना को समझा गया.

भाजपा प्रभारी लक्ष्मीकांत वाजपेई ने की रामटहल चौधरी से मुलाकात

रांची : राज्यसभा सांसद, भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और झारखण्ड प्रभारी लक्ष्मीकांत वाजपेई ने आज सुबह राजधानी के ओरमांझी प्रखण्ड स्थित पूर्व सांसद एवं वरिष्ठ नेता रामटहल चौधरी से उनके आवास पर मुलाकात की. श्री बाजपेई भाजपा नेता डॉ. प्रणव कुमार बब्बू के साथ ओरमांझी पहुँचे और सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुई यह मुलाकात लगभग 1 घंटे तक चली. इस दौरान श्री वाजपेई और श्री चौधरी ने पुरानी बातों एवं यादों को साझा किया. इस मुलाकात के दौरान भाजपा नेता डॉ. बब्बू और रणधीर चौधरी भी उपस्थित थे.

रांची जिला सीनियर वुशू प्रतियोगिता सम्पन

बिभा संवाददाता

राँची : 20 वीं रांची जिला वुशू प्रतियोगिता मोराबादी स्थित वुशू हॉल में सम्पन्न हो गयी.

सीनियर वर्ग के लिए आयोजित इस जिला स्तरीय प्रतियोगिता में पुरे जिला से लगभग 100 सीनियर खिलाड़ियों ने भाग लिया.

इसमें अलग अलग भार वर्ग के लिए प्रतियोगिता कराया गया.

इस प्रतियोगिता के समापन के मुख्य अतिथि आर ई ओ के श्री सुबोध कुमार यादव सहित झारखण्ड वुशु एसोसिएशन के शैलेन्द्र दुबे, रत्नेश गुप्ता आदि थे. प्रतियोगिता के. सफल संचालन में दीपक गोप, सुशील कच्छप, रत्नेश गुप्ता, वाहिद अली, कार्तिक राम, और बिमला टोप्पो की महत्वपूर्ण भूमिका रही.इस प्रतियोगिता के आधार पर चयनित खिलाडी राज्य स्तरीय सीनियर प्रतियोगिता में भाग लेंगे.

रांची से कांग्रेस प्रत्याशी यशस्विनी सहाय आज करेंगी नामांकन

राज्य के मुखिया सहित कई दिग्गज नेता रहेंगे मौजूद

बिहान भारत संवाददाता

रांची। लोकसभा चुनाव के दो चरणों का मतदान हो चुका है। वहीं बाकी के चरणों के मतदान के लिए प्रक्रिया चल रही है। इस बीच रांची में होने वाले चुनाव को लेकर प्रत्याशी रेस हो गए है।रांची से अबतक 17 प्रत्याशियों ने नामांकन दाखिल किया है। जिसमें भाजपा के संजय सेठ के अलावा 16 निर्दलीय भी शामिल है। अब रांची से इंडिया गठबंधन की तरफ से कांग्रेस की प्रत्याशी यशस्विनी सहाय 5 मई को रांची सीट के लिए नामांकन दाखिल करेंगी। नामांकन से पहले शहर के चौक-चौराहों से गुजरते हुए वह डीसी कार्यालय पहुंचेंगी। इस दौरान उनके साथ राज्य के मुखिया चंपाई सोरेन,

प्रदेश कांग्रेस के प्रभारी गुलाम अहमद मीर, प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर, विधायक दल के नेता आलमगीर आलम, पूर्व केंद्रीय मंत्री सुबोधकांत सहाय समेत कई बड़े नेता मौजूद रहेंगे। नामांकन प्रक्रिया पूरी करने के बाद ऐतिहासिक मैदान मोरहाबादी में जनसभा होगी जिसमें वे सभा को संबोधित करेंगी।

आरपीएफ ने महिला तस्कर समेत तीन लोगों को धर पकड़ा, रेलवे स्टेशन में होनी थी ब्राउन शुगर की डिलीवरी

बिहान भारत संवाददाता

रांची। ऑपरेशन नारकोस के तहत रेलवे स्टेशन राँची से ब्राउन शुगर के साथ महिला समेत तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है। वहीं, तस्करों के पास से 55.65 ग्राम ब्राउन शुगर जप्त किया है। जिसकी अनुमानित मूल्य करीब 11,13,000 रुपए है। यह जानकारी आरपीएफ थाना प्रभारी दिगंजय शर्मा ने दी। उन्होंने कहा कि यह गिरोह लंबे समय से ब्राउन शुगर का काम कर रहा है। गिरोह के अन्य लोगों के बारे में भी जानकारी पूछताछ में बताया है?। उनकी भी गिरफ्तारी के लिए टीम प्रयासरत है।

इंस्पेक्टर दिगंजय शर्मा ने बताया कि यह गिरोह तीन पार्ट में ब्राउन शुगर

का काम करता है। पहला रांची से बस पकड़कर बिहार स्थित सासाराम पहुंचता है। ब्राउन शुगर की बड़े पैमाने में सासाराम में डिलीवरी होती है। सासाराम से ब्राउन शुगर खरीदने के बाद ट्रेन पकड़कर रांची लौटता है। इसके बाद रांची में सक्रिय ड्रैग पैडलर को ब्राउन की सप्लाई कर गुप्त ठिकानों पर चला जाता है।

झारखंड में लोकसभा चुनाव से पूर्व क्यों हैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से आदिवासी नाराज

बिहान भारत संवाददाता

रांची। मोरहाबादी चिल्ड्रेन पार्क स्थित विभिन्न आदिवासी संगठनों ने हिस्सा लिया। वही केन्द्रीय सरना समिति सहित कई अन्य आदिवासी मूलवासी संगठनों ने नरेंद्र मोदी के झारखंड दौरे को विफल बताया। एक संवाददाता सम्मेलन में कहा प्रधानमंत्री जी के भाषण सुनकर आदिवासी संगठनों ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अब अदिवासी मूलवासी लोगों को असली मुद्दों से भटकाने के लिए झूठ और घृणास्पद भाषण का सहारा ले रहे हैं।

बैठक में आदिवासी संगठनों ने संवाददाता से कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आदिवासियों की इतना ही चिंता थी तो सरना धर्म कोड बिल, ओबीसी को 27 प्रतिशत आरक्षण, 1932 खतियान पर आधारित स्थानीय नीति को विधानसभा में पारित कर राजभवन भेजा गया, पर रोक क्यों दिया गया।

इस बैठक का नेतृत्व कर रहे हैं अजय तिर्की ने कहा कि महंगाई और बेरोजगारी पर क्यों नहीं बोलते प्रधानमंत्री । अजय तिर्की ने कहा कि झारखंड में आदिवासियों की कई समस्याएं हैं, जिनकी मांगे सालों से आदिवासी करते रहे हैं।

आज महंगाई और बेरोजगारी चरम पर है, पर प्रधानमंत्री कुछ नहीं बोल रहे हैं। वर्ष 2014 में जब गैस सिलिंडर का दाम चार सौ रुपये था, तब पूरे देश में आंदोलन कर रहे थे और अब दाम 12 सौ पहुंच गया है तो बोल नहीं रहे हैं। श्री तिर्की ने कहा कि प्रधानमंत्री चाईबासा की सभा में झारखंड और कोल्हान के लिए कुछ नहीं बोले, पिछले दस साल में जो काम किया, उसे जनता को बताना चाहिए था।

वहीं आदिवासी जन परिषद के अध्यक्ष प्रेमशाही मुंडा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी हमेशा कहते हैं अच्छे दिन आऐंगे।

हमारी आबादी 27 प्रतिशत से ज्यादा है। फिर भी आदिवासी पिछड़ा गरीब, मजदूर बना है। झारखंड में सबसे ज्यादा राज करने वाला बीजेपी ने किया। हम आज भी विस्थापन, जल-जंगल-जमीन पर कब्जा, फर्जी मुकदमेबाजी, मुठभेड़ और भूखमरी जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं।

लक्ष्मीरायण मुंडा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आदिवासियों की हक अधिकार , उनकी दशा कैसे सुधरे, रक्षा , पलायन पर रोक हो उस पर बात नहीं करती। वे सिर्फ अपने अजीज मित्र आडनी, अबनी को अदिवासी की जमीन लूट कर दे ये फिक्र करती रहती हैं।

कुन्दररसी मुंडा ने कहा प्रधानमंत्री से सवाल करते हुए कहा कि 2014 में अच्छे दिन का वायदा किया था। दो करोड़ हर साल नौकरी, सस्ता पेट्रोल-डीजल और विदेशों से काला धन लाकर सभी को 15-15 लाख रुपये देने का वायदा किया था, जो जुमला साबित हुआ।

निरजना हेरंज ने कहा कि मोदी सरकार का जुमला बाज वादी सरकार है। हसदेव जंगल से हजारों आदिवासी समाज को उजाड़ने का काम किया है। वहीं लोहरा समाज के अध्यक्ष अभय लोहरा ने कहा कि बीते दस वर्षों से प्रधानमंत्री देश की जनता को गुमराह कर रहीं हैं।अब आदिवासी इनका जुमले पर नहीं आने वाली है।

मारवाड़ी युवा मंच राँची समर्पण शाखा के नये सत्र की दूसरी कार्यकारिणी की हुई बैठक

बिभा संवाददाता

रांची : मारवाड़ी युवा मंच राँची समर्पण शाखा के नये सत्र (2024 - 25) की दूसरी कार्यकारिणी बैठक शाखा नवनिर्वाचित अध्यक्षा श्रीमति विनीता सिंघानिया की अध्यक्षता में दिनांक 4 मई हरमू रोड स्थित होटल माइस में हुई ।

मीटिंग में पिछली बैठक की कार्यवाही सभापटल में रखी गई । उसके बाद सचिव ने अप्रैल माह का प्रतिवेदन पेश किया । शाखा अध्यक्ष ने अपने स्वागत उद्गार में सभी प्रभारियों के अच्छे कार्य की प्रशंसा की और सभी दानदाताओं का धन्यवाद दिया ।

बैठक में मई माह में होने वाले कार्यक्रमों पर चर्चा की गई जिसमे विशेष रूप से मदर्स डे , रक्तदान शिविर, स्वस्थ जाँच शिविर, स्थायी अमृतधरा, मंडलीय सभा में उपस्थिति , सावन मेला का आयोजन जैसे कई कार्यक्रमों पर चर्चा हुई । कोषाध्यक्ष दीपिका टेकरेवाल जी ने अपनी रिपोर्ट पेश की।

बैठक में उपस्थित शाखा के सभी पूर्व अध्यक्ष एवं कार्यकारिणी सदस्यों को सह सम्मान उनके नाम का बैच पहनाया गया।सभी मेंबर्स अपने नाम के बैच देख कर काफी खुश हुए और इस पहल के लिए अध्यक्ष को बधाई दी ।तत्पश्चात सचिव शुभा अग्रवाल जी द्वारा बैठक की समाप्ति की घोषणा

संक्षिप्त खबरें

झारखंड राज्य कबड्डी संघ की बैठक संपन्न

बोकारो : स्पेशल जनरल बॉडी की मीटिंग हुई बैठक की अध्यक्षता चंचल भट्टाचार्य ने की इस बैठक में विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई। बैठक में विभिन्न जिला के अध्यक्ष सचिव एवं क्लब के अध्यक्ष सचिव ने भाग लिया । सभी पदाधिकारियों ने अपने-अपने विचार जिला संघ एवं राज्य संघ के संगठन के मजबूती पर अपने विचार दिए हाउस द्वारा सभी बातों को एक स्वर में बहुमत से प्रस्ताव पारित किया । सभी जिलों में 30 दिनों के अंदर जिला कबड्डी संघ का पूर्ण गठन खेल संहिता 2011 के अनुरूप करने का निर्णय लिया गया एवं दिल्ली हाई कोर्ट के निर्णय के अनुसार एवं जिला संघ को निबंधन कार्यालय से निबंधन करने का भी निर्णय लिया गया । दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल का सुनील कच्छप एवं बीरबल लोहरा पलामू प्रमंडल दीपक तिवारी एवं मोहम्मद अशफाक, अहमद मुन्ना, उत्तरी छोटानागपुर प्रमंडल का मिंटू ठाकुर मनोज शर्मा सह प्रभारी आर्यन, संथाल परगनाप्रमंडल मोहम्मद हकीम एवं गुंजन झा ,कोल्हान प्रमंडल का श्यामल दत्ता एवं एमपी सिंह बनाए गए । आज के इस बैठक में संघ के अध्यक्ष तपन रावत सचिव संजय कुमार झा कोषाध्यक्ष हरीश कुमार मनोज शर्मा मोहम्मद हकीम राजेश कुमार वर्मा रामधीन साव एमपी सिंह तिलक साव रमेश कुमार साव जसवंत साहू संतोष प्रसाद अनुपूर्ति अंगद सिंह श्यामल दास दीपक तिवारी मोहम्मद अशफाक अहमद मुन्ना रमाशंकर सिंह राजेश कुमार सिंह गॉडविन शिव महतो राजीव श्रीवास्तव आर्यन, इंद्र कुमार ऋषि काजल कुमार गंगा कुमारी राहुल शर्मा गौरव मिश्रा, धन्यवाद ज्ञापन एम पी सिंह, मंच संचालन हरीश कुमार,सभी राज्य संघ के पदाधिकारियों , जिला संघ एवं यूनिट के पदाधिकारियों को रांची जिला संघ के सचिव सुनील कच्छप ने अंग वस्त्र एवं पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया। इस मौके पर राष्ट्रीय खिलाड़ी एवम कोच भी उपस्थित थे ।

ज्ञानी जैल सिंह की जयंती विश्वकर्मा समाज द्वारा मनाई गई

बोकारो : विश्वकर्मा मंदिर सेक्टर 4जी के प्रांगण में विश्वकर्मा समाज बोकारो के तत्वावधान में पूर्व राष्ट्रपति स्वर्गीय ज्ञानी जैल सिंह की जयंती मनाई गई। इस अवसर पर पूर्व महामंत्री श्री नुनूलाल विश्वकर्मा ने ज्ञानी जैल सिंह की जीवनी पर प्रकाश डाला और उन्हें अपने समाज का गौरव बताया तत्पश्चात समाज के पदाधिकारियों ने उनकी तस्वीर पर श्रद्धा सुमन अर्पित किया । मौके पर उपसमाजपति श्री बृहस्पति शर्मा, श्री रामनाथ शर्मा, श्री रामबिहारी शर्मा, श्री कैलाश शर्मा, श्री सुभाष शर्मा, श्री अरूण शर्मा, श्री लाल बाबू शर्मा,चंदन कुमार, आशुतोष कुमार एवं प्रवीण कुमार उपस्थित थे ।

बोकारो में कुल 2785 अभ्यर्थियों ने दी नीट की परीक्षा

बोकारो। मेडिकल शिक्षण संस्थानों में दाखिले को लेकर आवश्यक परीक्षा नेशनल एलिजिबिलिटी कम एंट्रेंस टेस्ट यानी नीट (यूजी) 2024 का आयोजन रविवार को बोकारो में पांच केंद्रों पर किया गया। राष्ट्रीय परीक्षा एजेंसी (एनटीए) द्वारा आयोजित यह परीक्षा सभी केंद्रों पर पूरी तरह शांतिपूर्ण, कदाचार-मुक्त एवं सफल रही। इसके लिए एनटीए के सिटी कोऑर्डिनेटर एवं डीपीएस बोकारो के प्राचार्य डॉ. ए एस गंगवार ने सभी वीक्षकों, पर्यवेक्षकों, केंद्राधीक्षकों एवं विशेष रूप से जिला प्रशासन के अधिकारियों के प्रति आभार व्यक्त किया है। डॉ. गंगवार ने बताया कि बोकारो में कुल 2884 अभ्यर्थियों ने नीट (यूजी) 2024 के लिए अपना पंजीकरण कराया था। इनमें से 99 अभ्यर्थी अनुपस्थित रहे और डॉक्टर बनने का सपना संजोए कुल 2785 कैंडिडेट इस उच्च प्रतिष्ठित परीक्षा में शामिल हुए। सेक्टर-4एफ स्थित एमजीएम हायर सेकेंडरी स्कूल में बनाये गए सेंटर पर कुल पंजीकृत 840 अभ्यर्थियों में से 816, होलीक्रॉस स्कूल बालीडीह में 720 में 702, सेक्टर- 5 के गुरु गोविंद सिंह पब्लिक स्कूल में 720 में 684, सेक्टर- 6 स्थित क्रिसेंट पब्लिक स्कूल में 480 में 468 और सेक्टर- 4 स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस बोकारो) में 124 में से 115 अभ्यर्थी परीक्षा में शामिल हुए। परीक्षा केंद्रों पर सभी आवश्यक सुरक्षा जांच के उपरांत अभ्यर्थियों को अंदर प्रवेश करने दिया गया। दोपहर 11.00 बजे से सेंटरों के बाहर उनकी अच्छी-खासी भीड़ लगनी शुरू हो गयी। 2.00 बजे से परीक्षा शुरू हुई और शाम 5.20 मिनट तक चली।

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी शरत चंद पवार पक्ष ने कांग्रेस प्रत्याशी के समर्थन में जनसंपर्क अभियान चलाया

बोकारो : राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के जिला कार्यकारिणी के द्वारा प्रदेश नेता रणधीर सिंह के नेतृत्व में विभिन्न सेक्टर में कांग्रेस प्रत्याशी के पक्ष में मतदान करने के लिए जनसंपर्क अभियान चलाया इस अभियान के तहत श्री सिंह ने कहा कि नौजवान और बुजुर्ग अभिभावक मतदान के दिन सभी काम को छोड़कर सबसे पहले अपने बहुमूल्य मत का प्रयोग कांग्रेस प्रत्याशी के पक्ष में करें श्री सिंह ने कहा कि आज यह बोकारो इस्पात संयंत्र कांग्रेस की देन है जिसमें आज भी हजारों मजदूर कायत है इसके अलावे हजारों कमी सेवानिवृत हो गए आने वाले समय में अगर कांग्रेस की सरकार बनती है तो यहां के कामगारों के साथ-साथ सेवानिवृत कर्मियों एवं विस्थापितों की समस्या का भी समाधान होगा जनसंपर्क अभियान में मुख्य रूप से राष्ट्रवादी इस्पात मजदूर संघ के पदाधिकारी मौजूद थे।

सीपीआई लोकसभा की धनबाद और गिरीडीह सीट पर इंडिया गठबंधन को समर्थन देगा

बिभा संवाददाता

बोकारो : भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) की बोकारो जिला कमिटी की बैठक सेक्टर 9 में बी डी प्रसाद की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में धनबाद से इंडिया गठबंधन की कांग्रेस प्रत्याशी अनुपमा सिंह और गिरीडीह से झामुमो प्रत्याशी मथुरा प्रसाद महतो को समर्थन देने का निर्णय किया गया. बैठक को संबोधित करते हुए जिला सचिव भागीरथ शर्मा ने कहा कि पार्टी की अखिल भारतीय चुनावी कार्यनीति जिसमें भाजपा और उसके सहयोगियों को पराजित कर केंद्र में एक धर्मनिरपेक्ष सरकार का गठन सुनिश्चित किए जाने का लक्ष्य तय किया गया है. इसे ही मद्देनजर नजर रखते हुए और राज्य की राजनीतिक परिस्थिति को देखते हुए सीपीआई (एम) ने उपरोक्त निर्णय लिया है.

उन्होंने कहा कि दोनों क्षेत्रों से जीते हुए सांसद की निष्क्रियता और लोकसभा क्षेत्र के ज्वलंत समस्याओं के प्रति उनकी उदासीनता के चलते मतदाताओं में भारी आक्रोश है.कोयला और इस्पात का महत्वपूर्ण क्षेत्र होने के बावजूद एनडीए के सांसदों ने पिछले दस सालों से इन क्षेत्रों को और पीछे धकेल दिया है। बेरोजगारी और पलायन यहां चरम पर है।विस्थापन और विस्थापितों के प्रति इनकी बेरुखी जगजाहिर है।छोटानागपुर में कापोरेंट घरानों द्वारा यहां उपलब्ध खनिज की लूट के लिए आदिवासियों और अन्य गरीबों की जमीन हथियाने के खिलाफ तथा इस क्षेत्र में खनन से उत्पन्न हो रहे बढ़ते प्रदूषण के खिलाफ भी सांसद की रहस्यमय चुप्पी से आम मतदाता काफी नाराज हैं .

बहरहाल सीपीआई (एम) की यह स्पष्ट समझ है कि 18 वीं लोकसभा का चुनाव अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि देश की राजनीति जिस चौराहे पर खड़ी है इस चुनाव का नतीजा उसकी दिशा तय करेगा. इस चुनाव में हमारे संविधान का धर्मनिरपेक्ष चरित्र, जनवाद और देश का संघीय ढांचा सभी कुछ दाव पर लगा हुआ है. पिछले 10 सालों से केन्द्र में जिस पार्टी की सरकार है उसने केवल जनता को बांटने और हमारे देश के लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर करने के साथ-साथ देश की राष्ट्रीय संपत्ति की लूट में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी है. इसलिए इस चुनाव में भाजपा और उसके सहयोगियों को पराजित करना सभी देशभक्त नागरिकों का मुख्य कर्तब्य है. हम इंडिया गठबंधन के एक प्रमुख घटक होने के नाते और अपनी राजनीतिक जिम्मेवारी को बखुबी समझते हुए बोकारो जिला के अंतर्गत आने वाले धनबाद और गिरीडीह लोकसभा चुनावों में इंडिया गठबंधन के उम्मीदवारों के समर्थन का ऐलान करते हैं . आज की बैठक को राज्य सचिव मंडल सदस्य राम चन्द्र ठाकुर ने भी संबोधित किया। बैठक में श्याम सुंदर महतो, प्रदीप कुमार विश्वास, राज कुमार गोरांई, दौलत महतो,शकुर अंसारी, दूबराज दास, राकेश कुमार, सत्यनारायण महतो, मनोज कुमार पासवान, अख्तर खान, खेमलाल महतो, जटाधारी सिंह आदि मौजूद थे।

बूथ स्तरीय कार्यकर्ता बैठक का आयोजन

बिभा संवाददाता

बोकारो : धनबाद लोकसभा सीट के लिए 25 में को मतदान होना है इसके लिए प्रत्याशी क्षेत्र में जोरदार तरीके से दौरा कर जनसंपर्क अभियान चला रहे हैं इसी कर्म मे भारतीय जनता पार्टी बोकारो नगर के द्वारा बूथ स्तरीय कार्यकर्ता बैठक का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बोकारो नगर के अध्यक्ष अनिल कुमार सिंह ने किया। कार्यक्रम में मुख्य तौर पर भाजपा धनबाद लोकसभा के प्रत्याशी ढुल्लू महतो, बोकारो विधानसभा के विधायक बिरंची नारायण जी,बोकारो विधानसभा के प्रभारी धनबाद के पूर्व महापौर चंद्रशेखर अग्रवाल जी,लोकसभा के सह संयोजक रोहित लाल सिंह जी,बोकारो के उपाध्यक्ष कमलेश राय जी, बोकारो नगर के प्रभारी वीरभद्र सिंह जी, कृष्ण कुमार मुन्ना जी, पूर्व ज़िला अध्यक्ष अम्बिका खवास जी,नगर उपाध्यक्ष मनजीत सिंह,प्रकाश सिंह मोंटी ,कुमार राहुल, महामंत्री अमित सिंह, गोलू जी, युवा मोर्चा के अध्यक्ष विशाल गौतम, महामंत्री अंकित पांडे,रवि कुमार,राजा कुमार,देव त्रिपाठी,शंकर त्रिपाठी एवं सभी कार्यकर्ता गण, किशन मोर्चा के अध्यक्ष बबलू पाण्डे जी,महिला मोर्चा की अध्यक्षा श्रीमती ममता गोस्वामी एवं सभी पदाधिकारी गण , ओबीसी मोर्चा के सभी कार्यकर्ता गण , अनुसूचित जाति मोर्चा के अध्यक्ष अमित कुमार , अनुसूचित जनजातीय मोर्चा के अध्यक्ष विक्की लोहरा एवं सभी कार्यकर्ता गण एवं विधानसभा के अन्तर्गत बोकारो नगर के सभी बूथ के प्रभारी, अध्यक्ष एवं संयोजक उपस्थित रहे।मौके पर भाजपा को जीत दिलवाने के लिये विस्तार रूप से चर्चा की गई।

डाकमतपत्र से पुलिस सुरक्षा जवानों ने किया मतदान, लोकतंत्र के महापर्व में हुए शामिल

बिभा संवाददाता

बोकारो : लोकसभा आम निर्वाचन 2024 के तहत आगामी 13 मई 2024 पश्चिमी सिंहभूम, लोहरदगा एवं पलामू संसदीय क्षेत्र में मतदान होना है। इससे संबंधित जिले के पुलिस जवानों,झारखंड शस्त्र पुलिस बल (जेएपीएफ) ,केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआइएसएफ) आदि सुरक्षा बलों ने रविवार को डाकमतपत्र के माध्यम से अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया।

इसके लिए जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त श्रीमती विजया जाधव के निर्देश पर 02 सुविधा केन्द्र क्रमश प्रशिक्षण केन्द्र बोकारो इस्पात सीनियर सेकेंडरी स्कूल (इक्ररर) सेक्टर-2/सी एवं पुलिस केन्द्र, सेक्टर-12, बोकारो स्थापित किया गया था। जहां जवानों नें पूर्वाह्न 09.30 बजे से अपराह्न 05 बजे तक अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया।

दोनों स्थापित सुविधा केंद्रों में मतदाताओं के लिए मूलभूत सुविधाओं (शेड/शीतल पेय/पंखा/रौशनी आदि) की व्यवस्था सुनिश्चित की गई थी। दोनों केंद्रों पर कुल 168 मतदाताओं ने मतपत्र के माध्यम से अपने मताधिकार का इस्तेमाल कर लोकतंत्र के इस महापर्व में शामिल हुए। आज पलामू संसदीय क्षेत्र के लिए कुल 62 मतदाता, लोहरदगा संसदीय क्षेत्र के लिए कुल 86 मतदाता एवं पश्चिमी सिंहभूम संसदीय क्षेत्र के लिए कुल 20 मतदाताओं ने मतदान किया। सोमवार को भी दोनों केंद्रों में संबंधित मतदाता अपने मताधिकार का इस्तेमाल करेंगें।

आठ वर्षीय बच्ची से दुष्कर्म के बाद गला रेतकर हत्या

बिभा संवाददाता

बोकारो : बोकारो जिले पेटरवार थाना इलाके में दिल दहला देने वाली घटना सामने आयी है. एक 8 वर्षीय आदिवासी बच्ची से दुष्कर्म के बाद गला दबा कर हत्या कर दी गई। इस वारदात से पुरे इलाके में सनसनी फैल गई है। बच्ची शादी समारोह में शामिल होने आई थी।

घटना स्थल पर पहुंचे सब-डिविशनल पुलिस ऑफिसर, बेरमो, विशिष्ठ नारायण सिंह ने घटना की पुष्टि करते हुए बताया कि बच्ची का शव घर से महज कुछ ही दूरी पर मिला है। उसके गर्दन पर निशान पाया गया है। पुलिस ने जाँच शुरू कर दी है। अपराधियों का पता लगाया जा रहा है।

मृतक बच्ची के पिता ने आरोप लगाया है कि बच्ची से रेप के बाद उसकी गला दबा कर हत्या कर दी गई है। पोस्टमार्टम में दुष्कर्म के बाद गला दबाकर हत्यी की बात सामने आई है।

पोस्टमॉर्टम के बाद डॉ शम्भू प्रसाद ने कहा कि प्रथम दृष्टि से मामला बलात्कार और गला दबा कर मारने का लग रहा है। प्राइवेट पार्ट में चोट पाई गई है। स्वाब लेकर जाँच के लिए रांची फॉरेंसिक साइंस लेबोरेटरी भेजा जा रहा है। जिसकी रिपोर्ट आने के बाद मामले का खुलासा हो पायेगा।

परिजनों ने बताया कि बच्ची दादी के मायके शादी समारोह में शामिल होने आई थी. कार्यक्रम में शामिल होकर वापस घर लौटने की तैयारी कर रहे थे. एकाएक बच्ची गायब हो गई. जिसके बाद काफी खोजबीन की गई, पर उसका कोई पता नहीं चल सका. सुबह खून से लथपथ शव घर के बगल सुनसान झाड़ियों में मिलने की सूचना मिली. पुलिस घटना की बिंदुओं पर जांच कर रही है.

अलायंस के प्रत्याशी मथुरा प्रसाद महतो के नामांकन को लेकर सभी घटक दलों ने भागीदारी जताई

बिभा संवाददाता

बोकारो : बोकारो समाहरणालय में झामुमो और इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्कलुसिव अलायंस के प्रत्याशी मथुरा प्रसाद महतो के नामांकन और पुस्तकालय मैदान की सभा में आम आदमी पार्टी अन्य घटक दलों के साथ सशक्त भागीदारी निभाएगी।

आम आदमी पार्टी के प्रदेश संयोजक देवनाथ सिंह के नेतृत्व में गिरिडीह, बोकारो और धनबाद जिलों से सैकड़ों कार्यकर्ता कार्यक्रम में शामिल होंगे। यह जानकारी आप के प्रदेश मीडिया सह प्रभारी कुमार राकेश ने दी है।

उन्होंने बताया कि सभी जिलों के जिला संयोजक और प्रदेश पदाधिकारियों ने तैयारी बैठक कर अधिक से अधिक संख्या में उपस्थिति सुनिश्चित कर लिया है। विशेष तौर पर बोकारो में जिला संयोजक विधान चंद्र राय अधयक्षता में जिला कार्यालय में तैयारी बैठक की गयी। धनबाद से भी जिला संयोजक अशोक महतो के नेतृत्व में सैकड़ों की संख्या में आप कार्यकर्ता नामांकन में शिरकत करेंगे।

लोकसभा चुनाव के मद्देनजर रांची पुलिस लाइन में छह मई तक स्कूल बसों को जमा करने के निर्देश

बिभा संवाददाता

रांची। लोकसभा चुनाव में गाड़ियों की जरूरतों को देखते हुए रांची जिला प्रशासन तैयारियों में लग गया है। रांची जिले के अंतर्गत संचालित सभी बस संचालकों (स्कूल बस) को कहा गया है कि छह मई की रात आठ बजे तक गाड़ियों को पुलिस लाइन, रांची में जमा कर दें। इस संबंध में रविवार को जिला परिवहन पदाधिकारी, रांची ने कहा कि पांच मई को सुबह 10 बजे से छह मई की शाम तक गाड़ियों को जमा कर देना है।

परिवहन पदाधिकारी ने कहा कि किसी भी परिस्थिति में किसी बाधा के बगैर ससमय चुनाव कार्य पूरा कराना अनिवार्य है। ऐसे में वाहनों का अधिग्रहण लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 160 के अंतर्गत किया गया है। वाहन जमा करने के आदेश की लापरवाही चुनाव अपराध के तौर पर लिया जाएगा। निर्धारित प्रावधान के तहत एक वर्ष की सजा या अर्थदण्ड या दोनों के साथ-साथ वाहन मालिकों के खिलाफ एफआईआर भी हो सकता है। संबंधित वाहनों को ब्लैकलिस्ट भी किया जा सकता है। ऐसे में निर्धारित तिथि तक गाड़ियों को जमा करा दिया जाए।

अवैध बालू तस्करी पर बुढ़मू पुलिस की कार्रवाई जारी,चोरी छुपे ले जा रहे 3 ट्रेक्टर जप्त

रांची/बुढ़मू । बुढ़मू पुलिस की अवैध बालू माफियाओ पर कार्रवाई जारी है, इसी कड़ी मे रविवार 5 मई की देर रात्रि अवैध बालू लदा 3 ट्रेक्टर को जप्त कर अग्रतर कार्रवाई की जा रही है ,विदित हो की अवैध बालू के खिलाफ पुलिस की कार्रवाई जारी है।इसी कड़ी मे रविवार को गुप्त सुचना मिली की 3 ट्रेक्टर बालू लोड कर चोरी छुपे निकाल रहे है। गुप्त सूचना पर थाना प्रभारी रामजी कुमार ने त्वरित कार्रवाई करते हुए 3 ट्रेक्टर को जप्त की है । जिससे माफियाओ मे एक बार फिर हड़कम मच गया है। इस दौरान थाना प्रभारी ने कहा की किसी भी हाल मे बालू की अवैध तस्करी नहीं करने दी जायगी। अवैध तस्करी को लेकर बुढ़मू पुलिस लगातार कार्रवाई कर रही है आगे भी जारी रहेगी।

लोकसभा चुनाव की तैयारी की समीक्षा बैठक में शामिल हुए प्रशासन के अधिकारी

रांची। लोकसभा चुनाव की तैयारी को लेकर आईजी अभियान की अध्यक्षता में रविवार को समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से आयोजित हुई। जिसमें जिले के वरीय अधिकारी शामिल हुए। इस दौरान चुनाव को लेकर अब तक क्या तैयारी एवं कमियों को लेकर विचार विमर्श किया गया। बैठक में कई आवाश्यक दिशा निर्देश भी दिए गए। गौरतलब है कि झारखंड में चौथे, पांचवे, छठवें और सातवें चरण में मतदान होगा। चार लोकसभा सीटों सिंहभूम, खूंटी, लोहरदगा और पलामू में 13 मई को चौथे चरण में मतदान होगा। 20 मई को चतरा, कोडरमा और हजारीबाग में पांचवे चरण का मतदान होगा। गिरिडीह, धनबाद, रांची और जमशेदपुर में 25 मई को छठवें चरण में मतदान होगा और राजमहल, दुमका और गोड्डा में एक जून को सातवें चरण में मतदान होगा। झारखंड की बात करें तो यहां 14 लोकसभा सीटें हैं, जिनमें पांच सीटें एसटी और एक सीट एससी के लिए आरक्षित है। झारखंड में कुल मिलाकर 2.54 करोड़ से अधिक मतदाता हैं। इनमें 22 लाख मतदाता पहली बार मतदान करेंगे।

निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन

रांची। झारखंड स्वास्थ्य मिशन, रांची के तत्वावधान में निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन रुक्मणि नेस्ट अपार्टमेंट राम मंदिर के समीप डोरंडा में किया गया। इस स्वास्थ्य जांच शिविर में 110 लोगो का निःशुल्क नेत्र जांच एवम ब्लड प्रेशर जांच किया गया। इस मिशन का लक्ष्य है कि शहर से लेकर गांव तक सभी जगहों पर निःशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर एवम रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाए। ताकि कोई भी व्यक्ति स्वास्थ्य लाभ से वंचित न रहे। इस कार्यक्रम के सफल आयोजन में झारखंड स्वास्थ्य मिशन, रांची के अध्यक्ष संतोष सोनी, सचिव अश्वनी, नितेश पांडे, पार्वती नेत्रालय के डायरेक्टर डॉ नीरज कुमार , शिविर के आयोजनकर्ता ब्राइट फ्यूचर इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर मधु तिर्की, अधिवक्ता अंकित विजय की भूमिका सराहनीय रही।

झामुमो की सरकार चौतरफा भ्रष्टाचार और लूट के दलदल में फंसी: प्रतुल शाहदेव

बिभा संवाददाता

रांची। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव ने झारखंड मुक्ति मोर्चा और हेमंत सोरेन पर बड़ा हमला बोला। उन्होंने कहा कि झारखंड मुक्ति मोर्चा की सरकार चौतरफा भ्रष्टाचार और लूट के दलदल में फंस गई है। झामुमो की मान्यता अब जनता ही समाप्त कर देगी। वे रविवार को रांची के मारू टावर स्थित मीडिया सेंटर में पत्रकार वार्ता को संबोधित कर रहे थे।

प्रतुल ने कहा कि हाई कोर्ट ने पूर्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की गिरफ्तारी को चुनौती देने वाली याचिका न सिर्फ खारिज किया है, बल्कि राजनीतिक बदले का जो आरोप लगाया गया था, उसे एक हारे हुए मुवकिल की आखिरी कोशिश की संज्ञा दे दी। उन्होंने कहा कि हाई कोर्ट ने तल्ख टिप्पणी में यह भी कहा कि ईडी ने अब तक जितने साक्ष्य जुटाए हैं उसमें प्रथम दृष्टया हेमंत सोरेन की इस घोटाले में संलिप्तता उजागर होती है। कोर्ट ने हेमंत सोरेन के दिल्ली स्थित आवास में ईडी की छापेमारी में 36 लाख की रुपये की रिकवरी पर भी बड़ा प्रश्न खड़ा किया। कोर्ट ने हेमंत सोरेन की दलील को अनटेनेबल यानी असमर्थनीय माना।

प्रतुल ने कहा कि इसी तरीके से राज्य सरकार ने साहिबगंज के नींबू पहाड़ के अवैध खनन मामले में सीबीआई की जांच के आदेश को चुनौती दी थी। सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई के दौरान जानना था कि राज्य सरकार इस जांच को रोकने के लिए क्यों इतनी उत्सुक है? अंततः राज्य सरकार की याचिका खारिज हो गई और सीबीआई जांच जारी रहेगी। इससे स्पष्ट है कि हेमंत सोरेन के कार्यकाल में जो भ्रष्टाचार हुआ था, अब उस घोटाले पर न्यायिक दृष्टिकोण भी सख्त होता जा रहा है और न्यायालय पैनी नजर रख रही है।

प्रतुल ने कहा कि सदर थाने में जमीन घोटाले के संबंधित जो एफआईआर हुआ था, उसमें षड्यंत्र की धारा को जोड़ा गया था लेकिन इस षड्यंत्र की धारा (120 बी) को पेन से काट कर मिटाने की घटना को भी हाई कोर्ट ने बहुत गंभीरता से लिया है और कहा कि उसे समय हेमंत सोरेन की सरकार का कार्यकाल था।

श्री सर्वेश्वरी समूह ने निःशुल्क प्याऊ की व्यवस्था की

रांची। श्री सर्वेश्वरी समूह की रांची शाखा ने रविवार को रातू प्रखंड अंतर्गत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के समीप निःशुल्क प्याऊ का शुभारंभ किया। निःशुल्क प्याऊ लगने से इस भीषण गर्मी में स्वास्थ्य केंद्र में आने वाले मरीजों सहित अन्य लोगों को स्वच्छ एवं शीतल जल मिलेगी। निःशुल्क प्याऊ की शुरूआत से पूर्व विधिवत पूजन और आरती की गई। इसके उपरांत लोगों को पानी देने की शुरूआत की गयी। बताया जाता है कि श्री सर्वेश्वरी समूह की तरफ से हर साल निःशुल्क प्याऊ की व्यवस्था की जाती है। साथ ही शाखा पंछी को दाना-पंछी को पानी कार्यक्रम के अंतर्गत सकोरा का वितरण और रिम्स में हाथ का पंखा भी वितरण करती है। इसी कड़ी में इस वर्ष भी दो महीने यानी ग्रीष्म ऋतु तक लोगों के लिए निःशुल्क पेयजल की व्यवस्था करायी जा रही। कार्यक्रम में समूह शाखा रांची की ओर से रणजीत सिंह, धर्मेन्द्र सिंह, आशुतोष कुमार, गिरेन्द्र नाथ शाहदेव, रोहित कुमार सिंह, सौरभ कुमार, समर सिंह, यदुनाथ शाहदेव, रितिका शाहदेव सहित शाखा व मोहल्ले के करीब 15 लोग शामिल हुए।

संक्षिप्त खबरें

तपकरा में इण्डिया गठबंधन कार्यालय का किया गया उद्घाटन

खूँटी । तोरपा प्रखंड के अन्तर्गत तपकरा में रविवार को इण्डिया गठबंधन के चुनावी कार्यालय का उद्घाटन प्रखंड अध्यक्ष अजय गुप्ता की अगुवाई में की गयी। वहीं संयुक्त रूप से दयामनी बारला एवं अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के खूँटी लोकसभा समन्वयक वैभव शुक्ला एवं सुमैर सिंह ने संयुक्त रूप से किया। मौके पर जिला प्रवक्ता रविकांत मिश्रा, उपाध्यक्ष तैयब आन्सारी, इमरान खान, पवन साहू, अख्तरी अहमद, नमन तोपनो, सलीम तोपनो एवं सैकड़ों गठबंधन के कार्यकर्ता उपस्थित थे।

कुजियम्बा में कांग्रेस ने किया चुनावी सभा का आयोजन

खूँटी । जिले के अड़की प्रखंड के नौढ़ी पंचायत अन्तर्गत कुजीयाम्बा ग्राम में कांग्रेस ने चुनावी सभा आयोजित किया। जिसमें कांग्रेस जिलाध्यक्ष सहित अनेक लोगों ने संबोधित करते हुए इण्डिया गठबंधन के उम्मीदवार काली चरण मुण्डा के पक्ष में मतदान करने का आग्रह किया। मौके पर ग्राम प्रधान गोपाल पुरान, जिला सचिव संजय साहू, जिला उपाध्यक्ष तिब्रनाथ सिंह मुंडा, प्रदेश आदिवासी कांग्रेस के उपाध्यक्ष विलसन तोपनो, अनमोल होरो, गणेश पुराण, गाजी महली, सतोष पुराण, प्रहलाद पुराण, जगदीश मुण्डा एवं सैकड़ों संख्या में ग्रामीण उपस्थित थे।

पुलिस ने दारु भट्टी तोड़कर शराब व जावा किया नष्ट

खूँटी । जिले के अड़की थाना अंतर्गत बान्दू गाँव में अवैध तरीके से चुलैया शराब निर्माण कार्य किये जाने की गुप्त सूचना मिलने पर रविवार को अड़की पुलिस द्वारा छापामारी अभियान चलाया। जिसमें छापामारी किये जाने के क्रम में एक शराब भट्टी को ध्वस्त किया गया। वहीं बगल में रखे जावा महुआ एवम अवैध शराब को भी नष्ट कर दिया गया। हालाँकि कोई भी व्यक्ति पकड़ में नहीं आया।

भाजपा के महिला कार्यकर्ताओं ने गाँवों में जाकर मांगी वोट

खूँटी । जिले के मुरहू प्रखण्ड के विभिन्न गाँवों में भाजपा के महिला कार्यकताओं ने जनसंपर्क अभियान चलाकर विकसित भारत के नाम भारतीय जनता पार्टी को वोट देकर अर्जुन मुंडा को विजय बनाने की अपील की। इस दौरान गनालोया में उर्मिला देवी ने महिलाओं के संग घर घर जाकर सम्पर्क करके केंद्र सरकार की उपलब्धियों को गिनाया। वहीं दबगाना डांडियादाग आदि गांव में महिलाओं को भाजपा की उपलब्धि साझा की? । जबकि कोड़ाकेल कॉलोनी में रीता देवी की अगुवाई में रंदाय नाग सहित अनेक भाजपा कार्यकताओं ने चुनाव पर चर्चा करते हुए भाजपा के पर्चा बाँटे। वहीं कर्रा व गोविंदपुर में सीमा देवी ने भाजपा कार्यकताओं के साथ लोगों तक पहुँच चुनावी चर्चा की। इस दौरान ग्रामीणों में भी हर्ष का माहौल देखा गया। वहीं ग्रामीणों ने केंद्र सरकार से मिले लाभ पर खुशियाँ जाहिर की व आगामी 13 मई को

मतदान करने जाने के लिए उत्साहित होकर सहमति जतायी।

कर्रा में भाजपा ने किया चुनावी कार्यालय का उद्घाटन

खूँटी । जिले के कर्रा प्रखण्ड में रविवार को मण्डल स्तरीय निर्वाचन नियंत्रण कार्यालय का उद्घाटन किया गया। मौके पर, भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष सह खूँटी विधायक नीलकंठ सिंह मुंडा व लोकसभा संयोजक रविन्द्र राय आदि ने संयुक्त रूप से फीता काटकर बीजेपी चुनावी कार्यालय का उद्घघाटन किया। इस दौरान नीलकंठ सिंह मुंडा ने कहा कि यह मतदान केवल पार्टी को जिताने के लिए नहीं बल्कि देश जिस प्रकार विकास की राह पर अमन चैन शांति के साथ विकास कर रहा है तो उसमें अपने मतदान का समर्थन जुड़ा हुआ है। वहीं खूँटी को भी मोदी टीम का एक कमल साथ में हैं तो खूँटी के लिए गौरव की बात है। यही कारण है कि आज तक न तो ऐसे जनजातीय क्षेत्रों में कोई प्रधानमंत्री आए और न ही राष्ट्रपति। कार्यकर्ता लोगों तक पहुँच भाजपा के गौरवमयी कार्य को बतलाते हुए मतदान करने की अपील करें। मौके पर, इस दौरान खूँटी जिला प्रभारी सत्यनारायण सिंह, भाजपा जिलाध्यक्ष चंद्रशेखर गुप्ता बालकिशुन महतो, कैलाश राम, द्वारिका प्रसाद, मंजू देवी, सीमा देवी, दिलीप कुमार, कलिंदर राम सहित अनेक भाजपा कार्यकर्ता सहित समर्थक जन शामिल थे।

हर वोटर है ब्रांड एंबेसडर, महा हैसटैग अभियान में शामिल होकर लोगों को करें प्रेरित : डीसी

बिभा संवाददाता

रामगढ़। लोकसभा चुनाव एक महापर्व है। इसमें हर वोटर ब्रांड एंबेसडर है। इस बार के चुनाव में हर मतदाता खुद अपने आसपास के लोगों को जागरूक करेगा। यह बात रविवार को रामगढ़ डीसी चंदन कुमार ने कही। उन्होंने बताया कि मतदाताओं को जागरूक करने के लिए इस बार कोई बड़े पर्दे का अभिनेता हमारे बीच नहीं आएगा। चुनाव का हीरो वोटर है, और वोटर खुद घर से बाहर निकाल कर लोगों को प्रेरित करेगा। डीसी ने बताया कि हजारीबाग लोकसभा क्षेत्र में 20 मई को मतदान की तिथि निर्धारित है। उस दिन हर मतदाता अपने घर से निकलकर बूथ तक पहुंचे इसके लिए एक बड़े पैमाने पर कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

सात मई को शाम छह बजे से आठ बजे तक # मैं भी इलेक्शन अम्बेसडर के तहत महा हैशटैग अभियान चलाया जाना है। अभियान के सफल आयोजन में जिला स्तरीय विभागों, बूथ अवेयरनेस समूहों, प्रज्ञा केन्द्रों, शिक्षकों, जन वितरण प्रणाली के दुकानदारों, कृषि मित्रों, वोटर अवेयरनेस फोरम, सोशल मीडिया इनफ्लुएंसर्स सहित अन्य के द्वारा

किए जाने वाले कार्यों को लेकर विस्तार से चर्चा की गई।

उपायुक्त ने कहा कि शहरी क्षेत्र के मतदाता विकास से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों की पूरी जानकारी होने के बावजूद मतदान के दिन मतदान करने नहीं जाते हैं। उनमें नई ऊर्जा भरने की जरूरत है। इस बार के मतदान को सफल बनाने के लिए शहरी क्षेत्र के सभी मतदाताओं से स्वयं सामने आकर मतदान करने एवं अन्य लोगों को भी अपने मताधिकार का प्रयोग करने के प्रति जागरूक करने की अपील की।

सात मई को शाम छह बजे से आठ तक मतदाता जागरूकता से संबंधित फोटो, वीडियो, स्लोगन, पेंटिंग सहित कोई भी विशेष पहल को अपने सोशल मीडिया हैंडल्स पर #मैं भी इलेक्शन अम्बेसडर एवं #रामगढ़करेगावोट हैशटैग के साथ शेयर करने की अपील की। वहीं उन्होंने एक साथ बड़े स्तर पर लोगों द्वारा एक ही हैशटैग के साथ कंटेंट शेयर करने के कारण पूरे देश में लोगों को अपने मताधिकार के प्रति जागरूक करने में आने वाली सहूलियत के प्रति भी जानकारी दी।

जागरूकता फैलाने के लिए रामगढ़ शहर अंतर्गत थाना चौक से प्रातः छह बजे से वॉकाथन का आयोजन किया जाएगा। इसके उपरांत इस बार पहली बार वोट करने वाले मतदाताओं के साथ जिला समाहरणालय परिसर में 11 बजे से रकॉफी विद डीसीर कार्यक्रम का आयोजन होगा। 11:30 बजे से युवा मतदाताओं को मतदाता आईकॉन शालिनी दुबे से मिलने का अवसर प्राप्त होगा। वहीं जिला प्रशासन द्वारा रील मेकिंग प्रतियोगिता, फोटोग्राफी प्रतियोगिता सहित अन्य प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाएगा।

ऐतिहासिक बुढ़ा महादेव के मण्डा महोत्सव में सैकड़ों भगतिया किये प्रवेश

बिभा संवाददाता

खूँटी । नगर पंचायत क्षेत्र के महादेव मंडा में प्रत्येक वर्ष अक्षय तृतीया को लगने वाले मंडा मेला इस बार हर्षोल्लास के साथ वृहत तरीके से किया जाना है। वहीं रविवार से ही इसका नजारा देखने को मिलेगा। आगामी दस मई अक्षय तृतीया को होनेवाले झूलन कार्यक्रम से पहले तक उपवास करने वाले 101 भगतिया गृह त्याग कर महादेव मण्डा मंदिर प्रांगण में निवास कर रहे हैं। इस बेतहाशा गर्मी में भगतिया शिवभक्ति की तपस्या करनेवालों में सबसे कम आयु के छोटे छोटे बच्चे भी हैं। जो दिनभर उपवास करके 24 घंटा में एक बार पूरी? पवित्रता के साथ अक्षय तृतीया तक रहेंगे। इस वार्षिक मण्डा पूजा में पाट-भगता बबलू सिंह की अगुवाई में भगतिया पूरा अनुष्ठान करते हैं। वहीं सबसे कम आयु के बालकों में ग्राम तिरला के दूर्गा पाहन का पुत्र 10 वर्षीय शिव पाहन, बड़ाइक टोली निवासी बिट्टू

कुमार का 12 वर्षीय पुत्र अंश कुमार तथा सेरेंगडीह निवासी हरसिंग भेंगरा का पुत्र 13 वर्षीय सुखनाथ भेंगरा है। जो सभी भगतिया गाँव गाँव में पाट महाप्रभु को सिर में ढोकर निकटतम इलाकों में भ्रमण करने लगे हैं। वहीं इस बार महादेव मण्डा प्रबंध समिति की अगुवाई में भव्य तरीके से आयोजन किया जाएगा। कार्यक्रम की जानकारी देते हुए प्रबंधन समिति के अध्यक्ष पुरुषोत्तम सिंह बड़ाइक ने बताया कि काफी वर्षों वर्षों से बूढ़ा महादेव मंदिर में बड़ाईक परिवार की अगुवाई में मंडा पूजा महोत्सव होता आ रहा है। इसलिए पाट-भगता भी बड़ाइक परिवार से ही होते हैं। इस बार पूरा कार्यक्रम महादेव मण्डा प्रबंध समिति की अगुवाई में कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा जिसमें आगामी बुधवार को रात्रि में भगत या धुआं सी लेंगे गुरुवार 9 मई को रात्रि जागरण होगा। जिसमें भजन संध्या एवं शिव तांडव मंचन की प्रस्तुति की जाएगी। ?वहीं 10 मई शुक्रवार को ब्रम्हमुहूर्त से दहकते अंगारों भगतिया चलकर फूलखुंदी अनुष्ठान किया जाएगा साथ ही, अक्षय तृतीया के दिन भगतिया झूलन कार्यक्रम अनुष्ठान और मेले का आयोजन किया जाएगा।

कूड़ा डम्पिंग यार्ड में फैले कूड़े पर लगा आग, कूड़ा किया गया विभक्त

बिभा संवाददाता

खूँटी । नगर पंचायत क्षेत्र के डम्पिंग यार्ड में शनिवार की दूसरी बेला अचानक आग लगने से यार्ड में फैला कूड़ा धू-धू करके जलने लगा जो रविवार को भी बुझने का नाम नहीं लिया। डम्पिंग यार्ड में नगरपंचायत क्षेत्र के उड़ेला हुआ कूड़ा का अम्बार में आग फैलने से अग्निशमन विभाग को बुलाया गया। लेकिन आग का फैलाव दूर दूर तक हो जाने के कारण बुझाने में काफी दिक्कत होने लगी है। लेकिन फिर आग पर काबू पाने के लिए जेसीबी से कूड़ा को विभक्त करने का काम किया जा रहा है। ताकि आग आगे नहीं बढ़ सके। वहीं गनीमत है कि डम्पिंग यार्ड के निकट कोई घर नहीं है। जिसके कारण खतरा होने की सम्भावना नहीं होने की बात बतायी गयी। बता दें कि डम्पिंग यार्ड में विगत छह वर्षों से बन रहा क्रशिंग और रिसाइकिल मशीन नगर पंचायत के सुशुप्तावस्था के कारण अब तक चालू नहीं हो पाया है। जिसके कारण डम्पिग यार्ड में कूड़ा का अम्बार फैल गया है। वहीं अगर कूड़ों का रिसाइकिल मशीन चालू रहता तो कूड़ा इतना जमा नहीं हो पाता। हालांकि निकट में ही जंगल है। अगर आग जंगल की ओर बढ़ जाए तो परेशानी हो सकती है। हालांकि अग्निशमन विभाग पूरी मुस्तैदी के साथ आगे को काबू करने में जुटा रहा। हालांकि बाद में नगर पंचायत द्वारा जेसीबी से कूड़ा विभक्त करने का काम किया जा रहा है। लेकिन डम्पिंग यार्ड में विगत पांच छह वर्षों से बन रहा क्रसर मशीन और रिसाइक्लिंग मशीन अब तक चालू नहीं किया जाना कहीं न कहीं मिलीभगत से सरकारी योजना और मदों का दुरुपयोग दर्शा रहा है। नहीं तो दोषी पर अब तक कार्रवाई हो जाना चाहिए था।

निःशुल्क नेत्र जांच शिविर का आयोजन

रांची : धुर्वा में श्री पद्धनाभा आई इंस्टीट्यूट, पि.पि कम्पाउंड रांची के सौजन्य से एक दिवसीय निःशुल्क नेत्र जांच शिविर लगाकर 75 से अधिक लोगो का नेत्र का जांच-पड़ताल किया गया इस शिविर मे हर उम्र के महिला एवं पुरुष ने अपना नेत्र जांच कराए जांच टीम में डा० प्रिया, निकिता निखिल, मुकेश कुमार सिंह, अमन सिंह, उत्कर्ष मौर्या मौजूद थे, इस शिविर को सफलतापूर्वक संपन्न होने मे श्री डि० एन० वर्मा जी का विषेश योगदान रहा। सामाजिक कार्यकर्ता बीरेंद्र साहु ने इस सफल आयोजन पर आयोजकों को बधाई दी है।

जलमीनार के निर्माण केवल ठीकेदारी, तपिंगसेरा के लोग परेशान

बिभा संवाददाता

खूँटी । जिले के मुरहू प्रखंड अंतर्गत तापिंगशेरा गाँव में बने जलमीनार वर्तमान समय में हाथी के दाँत साबित हो रहा है। क्योंकि हाल ही में बने जलमीनार से पानी निकल नहीं रहा है। ग्रामीणों के अनुसार यह जलमीनार का निर्माण ग्रामीणों को लाभ दिलाना नहीं बल्कि ठीकेदार को कमाई करवाने की योजना बना दी गयी है। जिसे संबंधित अभियंता द्वारा गुणवत्ता पूर्ण निर्माण कार्य किए जाने की प्रमाणिकता दे दिया गया है। लेकिन दुर्भाग्य इस बात का है कि भरी गर्मी में तापिंगशेरा के लोग नल जल योजना का लाभ उठा पाने से वंचित हैं। जिसकी जानकारी लोगों को दी गयी पर इसे दुरुस्त नहीं किया गया।

बिरबांकी में भाजपा ने किया चुनावी कार्यालय का उद्घाटन

बिभा संवाददाता

खूँटी । जिले के अड़की प्रखण्ड अंतर्गत बिरबांकी गाँव में दक्षिणी अड़की के लिए भारतीय जनता पार्टी ने रविवार को चुनावी कार्यालय का उद्घाटन किया। इस दौरान अनुसूचित जनजाति मोर्चा खूंटी जिलाध्यक्ष संजय मुंडा, मंडल अध्यक्ष मोती पातर, लुकिंन मुंडा ने संयुक्त रूप से चुनाव कार्यालय का विधिवत फीता काटकर किया। जिसमें मुख्य रूप से तमाड़ विधानसभा प्रभारी विनोद सिंह, संतोष साहू उपस्थित थे। इस दौरान ग्रामीणों ने बताया कि एक समय ऐसा था कि दक्षिणी अर्की प्रखंड मुख्यालय और जिला मुख्यालय

से कटा हुआ था। लेकिन अर्जुन मुंडा के अथक प्रयास के कारण सड़क निर्माण कराने से आज के दिनों में आवागमन सुलभ हो गया है। क्षेत्र से बाहर कहीं भी जाने और आने के लिए दो दिन लगते थे लेकिन अब एक ही दिन में पूरा कार्य करके लौट आने संभव हो जाता है। वह दिन और आज के दिनों में सड़क निर्माण के कारण काफी बदलाव हुआ है। इसके अलावा अस्पताल का निर्माण भी करा दिया गया है। ये सभी भाजपा सरकार के कारण ही सम्भव हो पाया है। इस कार्यक्रम में एतवा पूर्ति, माड़की मुंडा, सनिका मुंडा, सोमा मुंडा, घासू मुंडा, माड़की पूर्ती आदि अनेक कार्यकर्ता व समर्थक उपस्थित थे।

सेवानिवृत्त शिक्षक गुहीराम पातर मुण्डा को अबतक नहीं मिला लाभ, स्थिति दयनीय

बिभा संवाददाता

खूँटी । जिले के तोरपा प्रखंड अंतर्गत तपकरा गाँव स्थित राजकीय उर्दू म०वि० तपकरा में सेवा देकर सेवानिवृत्त होनेवाले अवकाश प्राप्त सहायक शिक्षक गुही राम पातर मुण्डा के घर की माली हालत खराब हो गयी है। सारे लोग घर परिवार अच्छा से चले इसलिए सरकारी नौकरी चाहते हैं। परंतु सेवानिवृत्त होने के बावजूद लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। सोनाहातु प्रखण्ड के राहे गाँव निवासी गुही राम पातर मुण्डा का घर गिरने के कगार पर है। जिसने बच्चों को शिक्षा के क्षेत्र में आगे ले जाने हेतु सहायक शिक्षक शिक्षक के रुप में सेवाएँ दी। और वर्तमान समय में एक गुरु के पारिवारिक स्थिति खराब हो गयी है। गुहीराम पातर मुण्डा ने बताया कि उनका सेवानिवृति लाभ का भुगतान नहीं किया गया है। वहीं पूर्व के जिला शिक्षा अधीक्षक द्वारा कार्य न करके लौटाया जाता

रहा, वहीं शिक्षक ने अपने न्याय के लिए शिक्षा सचिव तक को लिखित आवेदन दिया। पर, शिक्षा सचिव के द्वारा खूंटी जिला शिक्षा अधीक्षक को लिखा गया पत्र के बावजूद सुनवाई नहीं हो रही है। झारखंड सरकार की स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के अवर सचिव जागो चौधरी ने जिला शिक्षा अधीक्षक को लिखे पत्र में बताया कि उपर्युक्त विषयक प्रासंगिक पत्र के द्वारा प्राप्त गुही राम पातर मुण्डा, सहायक शिक्षक, रा०उर्दूम०वि० तपकरा, प्रखड तोरपा, जिला-खूँटी के छुट्टी स्वीकृति संबंधी आवेदन के आलोक में कहना है कि विभागीय अधिसूचना संख्या 2126 दिनांक 07.09.2022 द्वारा मध्य विद्यालय के शिक्षकों का 60 दिन से अधिक अवधि हेतु (आकस्मिक छुट्टी, क्षतिपूर्ति छुट्टी, निरोधा छु?ट्टी, विशेष आकस्मिक छुट्टी, मातृत्व छुट्टी को छोड़कर) अन्य छुट्टी श्रेणी के लिए छुट्टी स्वीकृति प्राधिकार

जिला शिक्षा अधीक्षक को बनाया गया है। अतएव उक्त प्रावधान के आलोक में प्रासंगिक पत्र द्वारा प्राप्त कागजात वापस लौटाते हुए निदेश दिया जाता है कि विषयांकित शिक्षक के विभिन्न अवधि की आवेदित छु?ट्टी के संदर्भ में यथाशीघ्र नियमानुसार कार्रवाई की जाए। लेकिन अब तक इस पर विचार नहीं किया गया है। वहीं गुहीराम के वृद्धावस्था काल में उनके घर की स्थिति बदतर हो गयी है। वहीं आर्थिक तंगी से परेशान परिवार समस्या से जूझने को मजबूर हैं।

सिनियर सिटीजन चुनावी प्रचार के लिए पहुँच रहे हैं गाँव गाँव

बिभा संवाददाता

खूँटी । जैसे-जैसे मतदान का दिन निकट आते जा रहा है वैसे वैसे खूँटी जिले में चुनावी सरकार में तेज होते जा रही है। जहां एक और पुरुष वर्ग अपने पक्ष में मतदान कराने के लिए लोगों के बीच जाकर समर्थन मांग रहे हैं। वहीं विकसित भारत, शांति भारत और सबका साथ सबका विकास भारत के लिए सीनियर सिटीजन भी पीछे नहीं है। इस दौरान खूंटी के विभिन्न क्षेत्रों में हुए विकास योजनाओं और देश की गौरवपूर्ण क्रांति की बात बतलाने के लिए 86 वर्षीय पद्म भूषण कड़िया मुंडा , सेवानिवृत प्रधानाध्यापिका सह पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष रानी टुटी , सेवानिवृत्त शिक्षिका गौरा देवी, सेवानिवृत्त शिक्षिका नौरी पूर्ति, अखिल भारतीय सरना समाज के अध्यक्ष भीमसिंह मुण्डा, शिशु मंदिर प्रबंधन समिति के सदस्य छोटराय मुण्डा आदि अनेक लोगों ने वयोवृद्धता को पीछे पछाड़ते हुए भरी गर्मी में देश संजोने के नाम भाजपा के पक्ष में मतदान कराने की अपील करने गाँव गाँव पहुँच रहे हैं। वहीं दूसरी ओर इनके ग्रामीण इलाकों में पहुँचने से लोग उत्साहित हैं और मतदान करने के लिए आश्वस्त भी कर रहे हैं।

विपक्ष के टूलकिट मुद्दों की निकली हवा

मृत्युंजय दीक्षित

जन-जन के आराध्य प्रभु राम को काल्पनिक कहने वाली कांग्रेस पहले तो मुद्दे को लटकाने और भटकाने के लिए जी जान लगाती रही, इसमें असफल रहने पर अपने मुस्लिम तुष्टीकरण को मजबूती प्रदान करने के लिए प्राण प्रतिष्ठा समारोह का बहिष्कार कर बैठी। उसके बाद राहुल गांधी व विपक्ष के नेता जनसभाओं में बयान देने लगे कि राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह में दलित आदिवासी होने के कारण राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को नहीं बुलाया गया। पिछले दिनों राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने अयोध्या में रामलला के दर्शन करके राहुल गांधी के इस झूठ का करारा उत्तर दिया। राम मंदिर के गर्भगृह में राष्ट्रपति की उपस्थिति ने कांग्रेस नेता के आरोप को बुरी तरह से धो डाला।

स्वतंत्रता के बाद देश में अभी तक जितने भी लोकसभा या विधानसभा चुनाव हुए हैं उनमें पहली बार कांग्रेस के नेतृत्व में बना गठबंधन हर दृष्टि से कमजोर नजर आ रहा है । जब से लोकसभा चुनाव के लिए कांग्रेस व इंडी गठबंधन के नेताओं ने प्रचार आरम्भ किया है तभी से राहुल गांधी व उनके प्रवक्ता तमाम मंचों पर केवल एक ही बहस कर रहे हैं कि अगर मोदी जी तीसरी बार 400 सीटों के साथ प्रधानमंत्री बन जाते हैं तो भाजपा संविधान को फाड़ कर फेंक देगी। दोबारा चुनाव नहीं। इसके अतिरिक्त यह लोग प्रधानमंत्री और केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के डीप फेक वीडियो वायरल कर झूठ फैला रहे हैं। शाह के वीडियो प्रकरण में गिरफ्तारी भी हुई हैं।

चुनाव प्रचार में जुटे प्रधानमंत्री मोदी ने इस फर्जी वीडियो प्रकरण को अपने पक्ष में मोड़कर मुद्दा बनाने में सफलता प्राप्त कर ली है साथ ही। वो संविधान और आरक्षण के नाम पर विगत 70 साल में पिछली सरकारों ने जो किया उसे बेनकाब कर रहे हैं। विपक्ष वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भाजपा सरकार आने के बाद से ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के खिलाफ आरक्षण विरोधी होने का अभियान चला रहा है। बिहार में 2015 के विधानसभा चुनाव में नीतीश कुमार और लालू यादव के बीच गठबंधन हुआ था तब इन दलों ने संघ के खिलाफ विष वमन किया था।

मायावती ने भी एक पुस्तक घर-घर बंटवाकर संघ को आरक्षण विरोधी करार करने की कोशिश कर चुकी हैं। अब समय बदल चुका है। यह 2024 की बदली हुई भाजपा और संघ है। दोनों दुष्प्रचार के प्रति पूरी तरह सतर्क और सशक्त हैं। इस बार कांग्रेस नेताओं का यह दांव जमीनी धरातल पर नहीं उतर पा रहा है। संघ ने साफ कर दिया है कि वह हमेशा संविधान सम्मत आरक्षण का पक्षधर रहा है।

संघ का मानना है कि जब तक सामाजिक भेदभाव है या आरक्षण देने के कारण हैं तब तक आरक्षण जारी रहे।

राहुल गांधी आजकल भाजपा को संविधान विरोधी साबित करने में दिन-रात एक किए हुए हैं जबकि वास्तविकता यह है कि अगर आज आम नागरिक अपने संविधान को जान रहा है, पढ़ रहा है और उसके अनुरूप आचरण करना चाह रहा है और उसके पीछे प्रधानमंत्री मोदी के प्रयास ही हैं। अब हर वर्ष 26 नवंबर को संविधान दिवस मनाया जा रहा है। भारतीय संविधान को अब वेबसाइट पर आसानी से पढ़ा जा सकता है। नए संसद भवन के उद्घाटन और सेंगोल स्थापना के अवसर पर सदन के सदस्यों को भी संविधान की मूल प्रति दी गई ।

सच यह है कि संविधान का सत्यानाश कांग्रेस ने ही किया है। इंदिरा गांधी ने अपनी सत्ता बचाने के लिए संविधान में मूलभूत परिवर्तन करके उसमें धर्मनिरपेक्ष और समाजवादी जैसे शब्द जोड़कर उसकी आत्मा ही नष्ट कर दी। आपातकाल लगाकर अपनी विकृत तानाशाही मानसिकता का परिचय दिया। मनमर्जी से विपक्षी दलों की प्रदेश सरकारों को गिराया । कांग्रेस के कार्यकाल में संविधान एक परिवार का बंधक होकर रह गया था व एक धर्म विशेष का तुष्टीकरण कर रहा था। इसी प्रकार कांग्रेस अयोध्या में प्रभु राम की जन्मभूमि और उस पर बन रहे भव्य मंदिर के प्रति भी नकारात्मक रही है।

जन-जन के आराध्य प्रभु राम को काल्पनिक कहने वाली कांग्रेस पहले तो मुद्दे को लटकाने और भटकाने के लिए जी जान लगाती रही, इसमें असफल रहने पर अपने मुस्लिम तुष्टीकरण को मजबूती प्रदान करने के लिए प्राण प्रतिष्ठा समारोह का बहिष्कार कर बैठी। उसके बाद राहुल गांधी व विपक्ष के नेता जनसभाओं में बयान देने लगे कि राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह में दलित आदिवासी होने के कारण राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को नहीं बुलाया गया। पिछले दिनों राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने अयोध्या में रामलला के दर्शन कर-के राहुल गांधी के इस झूठ का करारा उत्तर दिया। राम मंदिर के गर्भगृह में राष्ट्रपति की उपस्थिति ने कांग्रेस नेता के आरोप को बुरी तरह से धो डाला। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय ने राहुल के बयान को मिथ्या बताया।

राहुल गांधी अपनी जनसभाओं में यह आरोप भी लगा रहे हैं कि वहां कोई गरीब, महिला, किसान और युवा दर्शन के लिए नहीं गया। सच यह है कि अब तक दो करोड़ से अधिक लोग राम मंदिर के दर्शन कर चुके हैं। इसके अलावा हताश कांग्रेस और विपक्ष बार-बार अपनी पराजय का बहाना खोजने के लिए ईवीएम पर ही संदेह पैदा कर रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट तक गए। वहां से मिले जवाब से बोलती बंद हो गई है। जब कुछ नहीं मिला तो कोरोना वैक्सीन कोविशील्ड को लेकर विपक्ष ने प्रधानमंत्री की छवि को खराब करने का अभियान प्रारम्भ कर दिया है। एक टूल किट की तरह इन आभासी मुद्दों को बार-बार सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्मों पर उठाया जा रहा है । अपने झूठे और फरेबी टूल किट की वजह से वह गहरे दलदल में फंसता जा रहा है। (लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

संपादकीय

सांप्रदायिक विचारों की लामबंदी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का कांग्रेस पर हमले के अभियान में पाकिस्तान एक नया कनेक्शन है। हालांकि शुरू आती चुनाव से ही पाकिस्तान को भारत के विरुद्ध खतरे के रूप में चिह्नित किया जाता रहा है। ताजा आरोप है कि पाकिस्तान शहजादेइ यानी राहुल गांधी की ताजपोशी के लिए बहुत उछल रहा है। यह चुनाव को प्रभावित करनेइ का एकरेखीय आरोप नहीं है, जैसा कि चीन-रूस के बारे में अमेरिका का होता है। प्रधानमंत्री मोदी पाकिस्तान की राहुल में दिलचस्पी के दुष्परिणामों को आंतरिक और बाह्य, दोनों स्तरों पर दिखाते हैं। इससे देश में इस्लामिक

जेहाद-आतंकवाद जोर पकड़ेगा, राष्ट्रीय एकता-अखंडता खंडित होगी, सुरक्षा-व्यवस्था कमजोर पड़ेगी और नागरिकों को भुगतना पड़ेगा। यह कांग्रेसी राज का दुर्भाग्यपूर्ण फिनोमिना रहा है। इससे भारत की चहुंदिस जारी वैश्विक प्रगति भी थम जाएगी। रिकॉर्ड्स पर टिके मोदी के इस आकलन से शायद हीअसहमति होगी। पाकिस्तान से दो-दो लड़ाइयां जीतने के बावजूद कांग्रेसी हुकूमत के बनिस्बत मोदी की सुरक्षा व्यवस्था निस्संदेह पुख्ता है-कश्मीर में आतंकवाद की छिटपुट वारदात के बावजूद। घर में घुस कर मारनेइ की बात अब चेतावनी नहीं होती। इसलिए दुश्मन में दहशत पैदा करती हैं। पर क्या पाकिस्तान वास्तव में इस हालत में रह गया है कि वह आज के भारत को नुकसान पहुंचा सके? आतंक के मोर्चे पर यह आज भी सही है। इसलिए ही, पाकिस्तान आम भारतीयों में अलगाववाद और खून-खराबे के जेहाद का नाम है। इसका केवल चुनाव के समय ही नहीं, बाकी दिनों में भी किया गया उल्लेख अधिकतर भारतीयों के विचारों को ध्रुवीकृत कर देता है। ऐसे में इंडिया गठबंधन की सपा प्रत्याशी की वोट जेहाद की अपील, जो एक सांप्रदायिक विचारों की लामबंदी से है, बहुसंख्यक मतों का ध्रुवीकरण कर सकती है। मोदी इन मुद्दों का फायदा उठाना चाहते हैं। आरक्षण और संविधान, जो चुनाव में अंडरकरंट मुद्दे हैं, उनमें भी मत-विभाजन का लाभ चाहते हैं। इस मामले में बैकफुट पर चल रहे मोदी को कांग्रेस पर हमले के नये तर्क मिल गए हैं। वे उसके अल्पसंख्यक-प्रेम को ओबीसी कोटे की हकमारी बताते हैं। अब ऐसा नहीं होगा, इसकी वे कांग्रेस से लिखित गारंटी चाहते हैं। यह भय का वैसा ही तर्क है, जैसा कांग्रेस जनमानस में बिठा रही है कि मोदी आए तो लोकतंत्र, संविधान और आरक्षण कुछ भी नहीं बचेगा।

सूक्ति

धर्म करते हुए मर जाना अच्छा है पर पाप करते हुए विजय प्राप्त करना अच्छा नहीं।
- महाभारत

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।(कर्म करने में ही तुम्हारा अधिकार है, फल में कभी भी नहीं)
- गीता

चिंतन-मनन

नफरत का बोझ

बहुत पुरानी कथा है। एक बार एक गुरु ने अपने सभी शिष्यों से अनुरोध किया कि वे कल प्रवचन में आते समय अपने साथ एक थैली में बड़े-बड़े आलू साथ लेकर आएं। उन आलुओं पर उस व्यक्ति का नाम लिखा होना चाहिए, जिससे वे नफरत करते हैं। जो शिष्य जितने व्यक्तियों से घृणा करता है, वह उतने आलू लेकर आए। अगले दिन सभी शिष्य आलू लेकर आए। किसी के पास चार आलू थे तो किसी के पास छह। गुरु ने कहा कि अगले सात दिनों तक ये आलू वे अपने साथ रखें। जहां भी जाएं, खाते-पीते, सोते-जागते, ये आलू सदैव साथ रहने चाहिए। शिष्यों को कुछ समझ में नहीं आया, लेकिन वे क्या करते, गुरु का आदेश था। दो-चार दिनों के बाद ही शिष्य आलुओं की बदबू से परेशान हो गए।

जैसे-तैसे उन्होंने सात दिन बिताए और गुरु के पास पहुंचे। सबने बताया कि वे उन सड़े आलुओं से परेशान हो गए हैं। गुरु ने कहा- यह सब मैंने आपको शिक्षा देने के लिए किया था। जब सात दिनों में आपको ये आलू बोझ लगने लगे, तब सोचिए कि आप जिन व्यक्तियों से नफरत करते हैं, उनका कितना बोझ आपके मन पर रहता होगा। यह नफरत आपके मन पर अनावश्यक बोझ डालती है, जिसके कारण आपके मन में भी बदबू भर जाती है, ठीक इन आलुओं की तरह। इसलिए अपने मन से गलत भावनाओं को निकाल दो, यदि किसी से प्यार नहीं कर सकते तो कम से कम नफरत तो मत करो। इससे आपका मन स्वच्छ और हल्का रहेगा। सभी शिष्यों ने वैसा ही किया।

राजनीति - वार पर वार करने से क्या फायदा ?

राकेश अचल

अजब राजनीति है ,गजब राजनीति है। आज की राजनीति में राजनीति पर बात ही नहीं हो रही। राजनीति पर बातचीत के अलावा हर विषय पर बात हो रही है। और तो और अब काल्पनिक उपाधियाँ राजनीति का विकल्प बन गयीं है विमर्श के लिए। राजनीतिक दलों को एक -दूसरे पर वार करते देख हमारे पड़ौसी पाकिस्तान ने भी हमारी सेना पर आतंकी हमला कर दिया । क्योंकि वार प्रति वार में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र भाई मोदी बार-बार पाकिस्तान को घसीट रहे थे ,जबकि बेचारा पाकिस्तान अपनी ही समस्याओं से बाहर निकल नहीं पा रहा है। बात शरू करते हैं उपाधियों से। माननीय नरेंद्र भाई दामोदर दास मोदी जी ने कांग्रेस के नेता माननीय राहुल राजीव गांधी को शहजादे कहना शुरू किया तो कांग्रेस दस साल तो मौन रही लेकिन अब शाहजादे की सहोदरा प्रियंका ने मोदी जी को ही शंहशाह बताना शुरू कर दिया है। प्रियंका कहतीं है कि उनके भाई ने तो पैदल 4 हजार किलोमीटर की यात्रा कर भारत को जोड़ने की कोशिश की है लेकिन शंहशाह माननीय नरेंद्र भाई मोदी महलों में रहते हैं। आपने कभी टीवी पर उनका चेहरा देखा है ? एकदम साफ सुथरा सफेद कुर्ता, एक दाग नहीं है धूल का। एक बाल इधर से उधर नहीं होता है। वो कैसे समझ पाएंगे कि आप किस दलदल में धंसे हुए हो. महंगाई से आप दब चुके हो. हर तरफ महंगाई, मेरी बहनें... मिट्टी का तेल आज कितने का है? सब्जी खरीदने जाती हो,मिलती है क्या? भाव क्या है उसका ?

आपको बता दूँ कि जैसे मै टीवी पर नेताओं के दर्शन नहीं करता, उनके प्रवचन नहीं सुनता वैसे ही अखबारों में भी नेताओं की बातों पर ध्यान नहीं देता । मै नौन,तेल ,लकड़ी से ही नहीं उबर पाता फिर भी सबकी बातें कानों में पड़ ही जातीं हैं। मै कभी-कभी सोचता हूँ कि यदि राहुल गांधी शाहजादे हैं तो फिर अम्बानी और अडानी के तो जिल्लेइलाही से बढ़कर ही होंगे,क्योंकि उनके पास तो राहुल गाँधी और नरेंद्र भाई मोदी से ज्यादा धन-दौलत है । अडानी और अम्बानी तो कभी देश जोड़ने सड़कों पर नहीं निकलते। उन्हें तो देश में नौन ,तेल,लकड़ी आटा का भाव मालूम नहीं होगा !

हमारे देश की जनता बड़ी भोली-भाली है ,आजकल तो आधी जनता अंधभक्ति में भी डूबी है। जनता माननीय मोदी जी की बात पर भरोसा कर जैसे राहुल गांधी को शाहजादा नहीं मान रही मुझे लगता है कि प्रियंका के कहने पर मोदी जी को शहंशाह नहीं मानेगी।बकौल मोदी जी कांग्रेस और कांग्रेस के नेता विश्वास खो चुके हैं। इस समय देश में शहंशाह तो हमारे अमिताभ भाई बच्चन ही हैं। हाँ मोदी जी राजनीति के शहंशाह हो सकते हैं ,क्योंकि उनके पास सब कुछ है लेकिन एक अदद साइकल नहीं है।अब तो माँ भी नहीं है । पत्नी को वे पहले ही त्याग चुके हैं भारत में जिस देश के पास साइकिल भी न हो,माँ न हो ,पत्नी न हो उसे शहंशाह कहना भारत में शहंशाह रहे तमाम शंशाहों की तौहीन है। खुला अपमान है। बहरहाल दाल-भात में मूसलचंद की तरह माननीय मोदी जी ने जब बार-बार पाकिस्तान को भारत के चुनावों में घसीटा तो वो सचमुच भारत आ ही गया । पाकिस्तान के आतंकवादियों ने पूंछ में भारतीय वायुसेना के काफिले पर हमला कर दिखा दिया कि पाकिस्तान के आतंकी किसी 56 इंच के सीने वाले से नहीं डरते। पाकिस्तान को इस हिमाकत की सजा मिलना चाहिए। मुमकिन है कि मतदान का तीसरा चरण पूरा होते-होते ये छोटा सा आतंकी हमला पुलवामा काण्ड की तरह बड़ा स्वरूप ले ले। भले ही ये सब देशहित में नहीं होगा लेकिन इससे सत्तारूढ़ दल की डूबती नाव तो बचाई जा सकती है। मुझे कभी -कभी आशंका होती है कि मोदी जी राहुल की तरह बार-बार पाकिस्तान को भी उकसाते रहते हैं कि -आ बैल मुझे मार मोदी जी सनातनी आदमी हैं। सनातन को मानते हैं लेकिन केंद्रीय चुनाव आयोग को नही। वैसे ये उनके मन की बात है । पिछले दिनों जब इसरो के वैज्ञानिकों ने अपना तमाम कामकाज छोड़कर माननीय के निर्देश पर रामलला को सूर्यतिलक कराया था तब माननीय मोदी जी आदर्श आचार संहिता का पालन करते हुए अयोध्या नहीं गए था । उन्होंने अपने हैलीकाप्टर में ही वीडियो कांफ्रेंसिंग के जरिये बाकायदा अपने जूते उतारकर इस दृश्य को देखा था। लेकिन अब मोदी जी का मन बदल गया है। वे उत्तरप्रदेश में राहुल गांधी की वापसी के बाद अयोध्या जाकर न सिर्फ वहां रोड शो करेंगे बल्कि रामलला के दर्शन भी करेंगे । अब किसी आदर्श आचार संहिता का उललंघन नहीं होगा। हो भी जाये तो कौन परवाह करता है।? रामलला बड़े कि केंचुआ ? संयोग से हमारे देश की आदर्श चुनाव संहिता में चुनाव प्रक्रिया के चलते दल-बदल करने पर कोई रोक नहीं है। इसी का लाभ लेते हुए भाजपा कांग्रेस के हाथों से उनके बम ही नहीं छुड़ा रही बल्कि फेयर एंड लवली को भी अपनी पार्टी में शामिल करने से नहीं हिचक रही। एन मतदान के दिन तक दल-बदल स्वीकार कर रही है । मियाँ-बीबी राजी तो क्या करेगा काजी ? कांगेसी यदि भाजपा में शामिल हो रहे हैं तो मोदी जी क्या करें ? शरणार्थी को वापस लौटा दें ? ये तो राजधर्म नहीं है न ? राम जी ने कभी बिभीषण और उसके बाद आने वाले राक्षसों को वापस लौटाया था क्या ? अर्थात रामभक्त और रामदास भाजपा का शरणार्थी शिविर खुला था सो खुला ही रहेगा कांग्रेसियों के लिए। कांग्रेस में जब भी किसी का दिल टूटे,उपेक्षा हो तो वो बेधड़क भाजपा में शामिल हो सकता है। भाजपा का कांग्रेसीकरण ही भाजपा कि प्राथमिकता है। कांग्रेसियों को शासन करने और भ्रष्टाचार करने में महारत हासिल है और भाजपा को इसकी सख्त जरूरत है चार सौ पार करने के लिए। माननीय मोदी जी कितने दरियादिल हैं इसका उदहारण हाल ही में देखने में आया। माननीय मोदी जी ने बिहार में विहार करते हुए दरभंगा में पूर्व केंद्रीय मंत्री लालू प्रसाद के बेटे तेजस्वी यादव को भी शाहजादे की उपाधि दे दी। ठीक वैसे ही जैसे कि -जो संपति सिव रावनहि, दीन्हि दिएँ दस माथ।. सोइ संपदा बिभीषनहि, सकुचि दीन्हि रघुनाथ। मोदी जी आखिर मोदी जी हैं। किसी को भी राजा और किसीको भी रंक बना सकते हैं। अरविंद केजरीवाल को ही देख लीजिये। हेमंत को देख लीजिये। इधर अडानी को देख लीजिये ,अम्बानी को देख लीजिये। प्रत्यक्ष को प्रमाण की जरूरत नहीं। मोदी जी कि दरियादिली का लाभ पूर्व संसद बृजभूषण सिंह के बेटे को भी मिला और पंडित टैनी के बेटे को भी। मै इस आधार पर कह सकता हूँ कि जितना समाजवाद भाजपा में है उतना किसी और दल में नहीं। मुझे भी 7 मई को मतदान करने जाना है। सोच रहा हूँ कि मैं भी किसी शाहजादे कि तरह वोट डालने जाऊं । हालांकि मै शाहजादा नहीं हू। मेरे पिता सरकारी अफसर जरूर थे। हाँ मैंने कभी चाय नहीं बेचीं। शाहों के लड़के चाय बेचते भी नहीं हैं। वे क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड को कंट्रोल करते हैं। कुल जमा ये कि आप इस उठापटक के बीच 7 मई को तीसरे चरण के मतदान में निष्ठा से हिस्सा लीजिये। आपको शहंशाह चुना है या जिल्लेइलाही ? ये आप खुद तय करें ?

चुनाव में सभी दलों की निगाहें युवाओं पर टिकी

अगर लोकतंत्र के महायज्ञ की बात करें तो समारोह की घोषणा 28 मार्च को माननीय मुख्य चुनाव आयुक्त द्वारा शुरू हो गया मुख्य चुनाव आयुक्त ने 2024 के लोकसभा चुनाव कार्यक्रम की घोषणा की, जो 19 अप्रैल से 22 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में सात चरणों में होगा। उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल में सभी सात तारीखों पर मतदान होगा, जबकि जम्मू और कश्मीर में पांच चरणों में मतदान होगा, सात जिलों में मतदान की प्रक्रिया 19 अप्रैल को खत्म हो गई और 1 जून तक सभी सात जिलों में मतदान पूरा हो जाएगा। । पूरे देश में वोटों की गिनती 4 जून को होगी। 4 जून दोपहर तक नई सरकार की तस्वीर लगभग साफ हो जाएगी। सत्ता की चाभी विशेषकर महत्वाकांक्षी युवा मतदाताओं के हाथ में लगती दिख रही है। सभी प्रमुख राजनीतिक दल युवाओं को लुभाने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं। दरअसल, युवा मतदाताओं की मुखरता नतीजों में झलक रही है। लोकसभा के पिछले दो चुनावों में वह युवा मतदाताओं यानी श्री नरेंद्र मोदी और भारतीय जनता पार्टी के साथ रहे हैं। हालाँकि, जिन देशों में क्षेत्रीय दल और सरकारें सत्ता में रही हैं, उनमें युवाओं ने क्षेत्रीय दलों को प्राथमिकता दी है। इसका कारण यह नहीं है कि युवा भाजपा के समान ही हैं, बल्कि युवा, राष्ट्रवाद और राजनीतिक दलों का स्तर भी अलग-अलग स्तर पर देखा गया है। युवा और महिला मतदाताओं ने वोट देने की पहल की है और इसमें कोई संदेह नहीं है, 2009 और 2014 के चुनावों में महिलाएं और युवा भाजपा के लिए मजबूत मतदाता पाए गए हैं। हमारा लोकतंत्र दुनिया का सबसे जटिल लोकतंत्र है। मतदाताओं की बहुसंख्यक आबादी, विविधताएं और भौगोलिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक परिस्थितियां बेहद गंभीर हैं, खासकर चुनाव आयोग और चुनाव आयोग के लिए। लेकिन हमें गर्व है कि हमारा चुनाव आयोग और चुनाव प्रणाली दुनिया के देशों में सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है। दुनिया, उसके देश और हमारी सरकार व चाहतों पर नजर रहती है। पहले चुनावों ने देश में पर्यटन को भी बढ़ावा दिया है और दुनिया भर के लोग हमारे चुनावों और मतदान के साथ-साथ मतगणना में भी रुचि रखते हैं। वे देखने और समझने आते हैं। पूरी दुनिया, देशों की नजर हमारे सपनों पर रहती है। यहां खास बात यह है कि चुनाव आयोग ने चुनाव प्रक्रिया को पारदर्शी, सरल और मतदाता अनुकूल बनाने के लिए लगातार प्रयास किये हैं। प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ निष्पक्ष एवं पारदर्शी व्यवस्था भी होनी चाहिए, इसलिए प्रतिस्पर्धा आयोग द्वारा बंद व्यवस्था की आलोचना की गई है। मतदाता मतदान आसान, सुलभ हो गया है और राजनीतिक दलों या अन्य बाहरी प्रभावों पर मतदाताओं की निर्भरता समाप्त हो गई है। जबकि दुनिया के अन्य देशों में लोकतंत्र समान है, हमारे इंडिया में कुल मतदाताओं की तुलना में 18 से 29 वर्ष के आयु वर्ग के मतदाता अधिक हैं। इसके अलावा 26 से 35 वर्ष तक के मतदाता भी युवा और युवा वर्ग की श्रेणी में आते हैं। हमारे देश में विश्व के सबसे अधिक मतदाता संख्या वाले देशों की कुल संख्या से भी अधिक मतदाता हैं। इस साल 18वीं विधानसभा के लिए होने वाले मतदान में 98।6 फीसदी मतदाता हिस्सा लेंगे, जबकि यूरोपीय संघ में 40 फीसदी, इंडोनेशिया में 20।4 फीसदी, अमेरिका में 16 फीसदी और पाकिस्तान में 12।8 फीसदी मतदाता होंगे। वह एक बिगड़ैल वोटर हैं।जो धर्म के नाम पर चुनाव का नतीजा तय करती है खैर, यह अलग बात थी, लेकिन लोकसभा में पहले दो मुकाबलों के नतीजों से यह साफ हो गया कि युवाओं ने जिस पर भरोसा जताया, वही सरवेरा बन गया। दिलचस्प बात यह है कि युवाओं और महिलाओं में यह विश्वास ही नई सरकार की कुंजी है, खासकर भारत सरकार को मजबूत करने में युवाओं और महिलाओं की सक्रिय भागीदारी। रहा है। चुनाव आयोग द्वारा जारी नतीजों के मुताबिक, 18वीं लोकसभा के चुनाव में 543 सीटों के लिए 96।8% पंजीकृत मतदाता अपने मताधिकार का प्रयोग करेंगे। इनमें से 82 लाख नए पंजीकृत मतदाता हैं, 47।15 लाख महिला मतदाता हैं और 49।7 नए पंजीकृत मतदाता हैं। जहां 17वीं लोकसभा चुनाव में लगभग 1।5 प्रतिशत नए मतदाता या पहली बार मतदाता थे, वहीं 18वीं लोकसभा चुनाव में 1।82 प्रतिशत नए मतदाता या पहली बार मतदाता थे। वे क्या उपयोग करेंगे? दूसरे, पिछले लोकसभा चुनाव में युवाओं को दो श्रेणियों यानी 18 से 25 साल और 26 से 35 साल में बांटकर वोटिंग प्रतिशत का आकलन और विश्लेषण किया गया था। बात यह है कि युवाओं में, समाज के दोनों वर्गों में भाजपा और कांग्रेस की तुलना में मतदान का अंतर बहुत अधिक था। 2019 के लोकसभा चुनाव में 18 से 25 साल के 44 फीसदी युवाओं ने भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) को वोट दिया, जबकि 26 से 35 साल के 46 फीसदी युवाओं ने बीजेपी पर भरोसा जताया। दिलचस्प बात यह है कि दोनों आयु वर्ग में 26-26 फीसदी मतदाताओं ने ब्रिटिश प्रेस पर भरोसा जताया, जबकि 28 से 30 फीसदी युवाओं ने दूसरी पार्टियों पर भरोसा जताया। लेकिन अलगयुवा युवाओं के बीच कांग्रेस और बीजेपी के बीच विश्वास को लेकर कोई बड़ी बात नहीं है और यहां बताया गया है कि वे बीजेपी और नरेंद्र मोदी को क्यों पसंद करते हैं?क्योंकि वो मजबूत चेहरा के रूप में श्री नरेंद्र मोदीजी और उप्र के मुख्य मंत्री योगीजी उभरे हैं। 2019 में वोट बंटवारे से यह भी स्पष्ट हो गया कि विपक्षी दलों में बिना पेंदी के लोटा जैसा है और सभी पार्टियों के मन में प्रधानमंत्री का सपना है। चाहे युवा हों, महिलाएं हों या नए मतदाता हों, तीनों ही श्रेणियों में बीजेपी को कांग्रेस के मुकाबले बहुत ज्यादा समर्थन मिला है।क्योंकि कांग्रेस परिवारवाद से ऊपर नहीं उठ रही है और जिस तरह श्री राहुल गाँधी की भाषा पब्लिक के सामने आई है वो नहीं चाहती है देश और भी संकट में जाए इससे यह स्पष्ट होता है कि 2024 का चुनाव युवाओ और महिलाओ के कारण दिशा तय करेंगी इस शताब्दी के पूर्वार्ध में अनुमानित जनसंख्या वृद्धि चुनौतीपूर्ण है। अनुमान के आधार पर, मध्य शताब्दी तक 9 से 10 अरब लोग होंगे। वर्तमान जनसंख्या केवल 7 अरब से कम है, जिसका अर्थ है कि इस सदी की शुरूआत से मध्य तक लगभग 50 प्रतिशत की वृद्धि होगी। कोई विशेष मॉडलों की सापेक्ष सटीकता पर बहस कर सकता है, लेकिन वे सभी इस बात से सहमत हैं कि आने वाले दशकों में खिलाने के लिए कई और अधिक मुंह होंगे। आईटी ने मानव प्रयास के कई अन्य पहलुओं को बदल दिया है और व्यापक सामाजिक आवश्यकताओं का जवाब देने के लिए सिस्टम बनाने में मदद की है। दरअसल, परिवहन, संचार, राष्ट्रीय सुरक्षा और स्वास्थ्य प्रणालियाँ बुनियादी कार्यों को करने के लिए भी पूरी तरह से आईटी पर निर्भर हैं। हालाँकि, सूचना और इसके स्वचालित तकनीकी अवतार ने कृषि को समान स्तर पर प्रभावित नहीं किया है। कृषि का महत्व कृषि एक प्रमुख क्षेत्र है जो आधुनिक मनुष्य के अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है। पौधे खाद्य श्रृंखला में उत्पादक हैं, और उनके बिना, जीवन चक्र संभव नहीं होगा। कृषि उपज, हालांकि अन्य खाद्य स्रोतों की तुलना में अच्छा है या खराब ये किसान आंदोलन से नहीं किसानों के वोट तय करेंगे किसान अपने फसलों का उपयोग कई खाद्य स्रोतों को स्वयं या उप-उत्पादों जैसे ब्रेड, पाउडर, अन्य वस्तुओं में कार्बनिक योजक आदि के माध्यम से उत्पादित करने के लिए किया जाता है। कृषि से प्राप्त उपज एक देश से दूसरे देश में व्यापार को बढ़ाती है, किसानों के लिए आय लाती है, अन्यथा बेकार पड़ी भूमि का उत्पादक उपयोग करती है, और मेज पर भोजन लाती है। यह हर किसी के दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, हालांकि इसे प्रत्यक्ष कारक के रूप में नहीं देखा जा सकता है क्योंकि उपज उन सभी के हाथों तक पहुंचने से पहले एक लंबा रास्ता तय करती है जो इससे लाभान्वित होते हैं। भारतीय कृषि भारत की जीडीपी में 18।6 प्रतिशत का योगदान देती है और लगभग 59 प्रतिशत भारतीय कृषि क्षेत्र से अपनी आजीविका प्राप्त करते हैं। समाज के लिए इसके महत्व के कारण, इसे समय के साथ विकसित होना चाहिए और आधुनिक लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए समायोजित होना चाहिए। कृषि प्रगति को बेहतर बनाने में मदद के लिए आईटी को अपनाने और उसका उपयोग करने से, इन क्षेत्रों के मिलन से सभी को लाभ होता है। एक उल्लेखनीय उदाहरण के रूप में हमारे राज्य ने पिछले पांच वर्षों में चौथी बार प्रतिष्ठित कृषि कर्मण पुरस्कार जीता है।

- संजय गोस्वामी

विश्व के पालनहार माने जाते हैं भगवान विष्णु

भगवान विष्णु परमेश्वर के तीन मुख्य रूपों में से एक हैं। विष्णु को विश्व का पालनहार माना जाता है। वे अपने चार हाथों में क्रमशः शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण करते हैं। भगवान विष्णु अत्यंत दयालु हैं। उनकी शरण में जाने पर कल्याण हो जाता है। जो भक्त भगवान विष्णु के नामों का कीर्तन, स्मरण, उनके अर्चाविग्रह का दर्शन, वंदन, गुणों का श्रवण और उनका पूजन करता है, उसके सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। भगवान विष्णु के दस अवतार माने जाते हैं। यह हैं- मत्स्य अवतार, वराह अवतार, कूर्म अवतार, नृसिंह अवतार, वामन अवतार, परशुराम अवतार, राम अवतार, कृष्ण अवतार, बुद्ध अवतार और कल्कि अवतार। इनमें कल्कि अवतार के बारे में कहा जाता है कि यह अवतार अभी होना है।

भगवान विष्णु के 39 नाम माने जाते हैं जो इस प्रकार हैं- विष्णु, नारायण, कृष्ण, बैकुण्ठ, विष्टरश्रवस, दामोदर, हृषीकेश, केशव, माधव, स्वभू, दैत्यारि, पुण्डरीकाक्ष, गोविन्द, गरुड़ध्वज, पीताम्बर, अच्युत, शांगी, विष्वक्सेन, जनार्दन, उपेन्द्र, इन्द्रावरज, चक्रपाणि, चतुर्भुज, पद्मनाभ, मधुरिपु, वासुदेव, त्रिविक्रम, देवकीनन्दन, शौरि, श्रीपति, पुरुषोत्तम, वनमाली, बलिध्वंसी, कंसाराति, अधोक्षज, विश्वम्भर, कैटभजित, विधु और श्रवस्तलाञ्छन। भगवान विष्णु के शंख का नाम पाञ्चजन्य तथा चक्र का नाम सुदर्शन, गदा का नाम कौमोदकी खड्ग का नाम नन्दक और मणि का नाम कौस्तुभ है।

विष्णुधर्मोत्तर पुराण में वर्णन मिलता है कि लवणसमुद्र के मध्य में विष्णुलोक अपने ही प्रकाश से प्रकाशित हैं। उसमें भगवान श्रीविष्णु वर्षा ऋतु के चार मासों में लक्ष्मी द्वारा सेवित होकर शेष शय्या पर शयन करते हैं। बैकुण्ठ धाम के अन्तर्गत अयोध्या पुरी में एक दिव्य मण्डप है। मण्डप के मध्य भाग में रमणीय सिंहासन है। वेदमय धर्मादि देवता उस सिंहासन को नित्य घेरे रहते हैं।

धर्म, ज्ञान, ऐश्वर्य, वैराग्य सभी वहां उपस्थित रहते हैं। मण्डप के मध्य भाग में अग्नि, सूर्य और चंद्रमा रहते हैं।

कूर्म, नागराज तथा संपूर्ण वेद वहां पीठ रूप धारण करके उपस्थित रहते हैं। सिंहासन के मध्य में अष्टदल कमल है, जिस पर देवताओं के स्वामी परम पुरुष भगवान श्रीविष्णु लक्ष्मी के साथ विराजमान रहते हैं। भक्त वत्सल भगवान श्रीविष्णु की प्रसन्नता के लिए जप का प्रमुख मंत्र- ओम नमो नारायणाय तथा ओम नमो भगवते वासुदेवाय है।

पुराणों में विष्णु, शिव और ब्रह्मा को एक माना गया है। ये त्रिदेव सृष्टी के जनक हैं, पालनहार हैं, और संहारकर्ता हैं। विभिन्न पुराणों में दिये गये कथानकों के माध्यम से त्रिमूर्ति की शक्ति के बारे में पता चलता है। मत्स्यावतार में प्रलय काल के उपरान्त जीव की उत्पत्ति और बचाव का कथानक, कूर्मावतार में डोलती पृथ्वी को विशाल कछुए की पीठ पर धारण करने का कथानक, नृसिंहावतार में भक्त प्रह्लाद के पिता दैत्यराज हिरण्यकशिपु के वध का कथानक, वामनावतार में दैत्यराज बलि के गर्व हरण तथा तीनों लोकों को भगवान द्वारा तीन पगों में नापने का कथानक है, परशुरामावतार में क्षत्रियों के गर्व हरण का कथानक, रामावतार में राक्षस राज रावण के अहंकार को नष्ट कर उसके वध का कथानक, कृष्णावतार में कंस वध और महाभारत युद्ध में कौरवों के विनाश का कथानक और बुद्धावतार में जीव हत्या में लिप्त संसार के दुखीजन को अहिंसा का महान संदेश देने का कथानक समाज को सही राह तो दिखाते ही हैं साथ ही ईश्वर की परम शक्ति का अहसास भी कराते हैं।

मनोकामनाएं पूर्ण करेंगे श्री गणेश के सिद्ध मंत्र

श्री गणेश शक्ति और शिवतत्व का साकार स्वरूप है। इन दोनों तत्वों का सुखद स्वरूप ही किसी कार्य में पूर्णता ला सकता है। बुधवार को गणपति जी की विशेष पूजा अर्चना करने से आप के जीवन में आए हुए सभी प्रकार के दुख दर्द का नाश होता है, मान-प्रतिष्ठा बढ़ती है, आयुष्य और बल में वृद्धि होती है और सर्वत्र आप की कीर्ति फैलती है। श्री गणेश अपने भक्तों के समस्त विघ्नों को दूर करने के लिए विघ्नों के मार्ग में विकट स्वरूप धारण करके खड़े हो जाते हैं।

किसी भी शुभ कार्य के आरम्भ में भगवान् श्री गणेश की पूजा-अर्चना करने का विधान है। कहते हैं कि महादेव पुत्र श्री गणेश के नाम का शुद्ध चित्त भाव से चिंतन करने तथा उनकी श्रद्धा भाव से आराधना करते रहने से जीवन के कष्ट और दुर्भाग्य दूर होते हैं।

भगवान गणेश का स्वरूप अत्यन्त ही मनोहर एवं मंगलदायक है। वे एकदन्त और चतुर्बाह हैं। अपने चारों हाथों में वे क्रमश पाश, अंकुश, मोदक पात्र तथा वर मुद्रा धारण करते हैं। वे रक्तवर्ण, लम्बोदर, शूर्पकर्ण तथा पीत वस्त्र धारी हैं। वे रक्त चंदन धारण करते हैं तथा उन्हें रक्त वर्ण के पुष्प विशेष प्रिय हैं। वे अपने उपासकों पर शीघ्र प्रसन्न होकर उनकी समम्त मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं।

श्री गणेश का मन्त्र जप करने से मन में सदविचार और सकारात्मक भाव आने लगते हैं। जिन मनुष्यों का आत्म विश्वास कमजोर होता है उनमें भी श्री गणेश की आराधना से विश्वास की भावना मजबूत होने लगती है। श्री गणेश मंत्र जप के लिए श्री गणेश जी की प्रतिमा को पीत वस्त्र से ढंकी चौकी पर स्थापित करके सिंदूर, अक्षत, जनेऊ, बूंदी या बेसन का लड्डू, मिठाई आदि समर्पित करते हुए पूर्ण श्रद्धा भाव से श्री गणेश का पूजन करना चाहिए।

श्री गणेश जी से अपने द्वारा किए हुए गलत कार्यों को क्षमा करने की प्रार्थना करते हुए सुख, समृद्धि, सौभाग्य एवं शांति की कामना करनी चाहिए। शीघ्र फल प्राप्ति के लिए प्रत्येक बुधवार अथवा माह की चतुर्थी तिथि को उपवास रखते हुए पूर्ण विश्वास और शुद्ध आचरण के साथ श्री गणेश का पूजन एवं उपासना करनी चाहिए।

पूजन विधि- सुबह नित्य कर्मों से निवृत्त होकर भगवान श्री गणेश का पंचोपचार पूजन करें। उन्हें दुर्वा व फूल चढ़ाएं। लड्डू का भोग लगाएं और इस मंत्र का जप पन्ने की माला से करें।

मंत्र- नमस्तस्मै गणेशाय ब्रहविद्यारदायिने। यस्यागस्त्यायते नाम विघ्वसागरशोषणे।।...

बिगड़े काम बनाने के लिए बुधवार को गणेश मंत्र का स्मरण करें-

त्रायीमयायाखिलबुद्धिदात्रे बुद्धिप्रदीपाय सुराधिपाय। नित्याय सत्याय च नित्यबुद्धि नित्यं निरीहाय नमोस्तु नित्यम्।

अर्थात भगवान गणेश आप सभी बुद्धियों को देने वाले, बुद्धि को जगाने वाले और देवताओं के भी ईश्वर हैं। आप ही सत्य और नित्य बोधस्वरूप हैं। आपको मैं सदा नमन करता हूं।

पिता के अनन्य भक्त थे

भगवान परशुराम

भगवान विष्णु के पांचवें अवतार भगवान परशुराम का जन्म वैशाख मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया को प्रदोषकाल के समय हुआ था। पौरागिक ग्रंथों में बताया गया है कि पिता जमदग्नि और माता रेणुका ने तो अपने पांचवें पुत्र का नाम राम ही रखा था, लेकिन तपस्या के बल पर भगवान शिव को प्रसन्न करके उनके दिव्य अस्त्र परशु प्राप्त करने के कारण वे राम से परशुराम हो गए। भगवान परशुराम भगवान विष्णु के अवतार होने के साथ ही ब्राम्ह्ण जाति के कुल गुरु भी हैं इसलिए इनकी जयंती देशभर में बड़े धूमधाम से मनाई जाती है।

भगवान परशुराम अपने पिता के अनन्य भक्त थे, पिता की आज्ञा से इन्होंने अपनी माता का सिर काट डाला था, लेकिन पुनः पिता के आशीर्वाद से इनकी माता की स्थिति यथावत हो गई। दरअसल कथाओं के अनुसार हुआ यह था कि एक बार माता रेणुका स्नान के लिए नदी किनारे गईं, संयोग से वहीं पर राजा चित्ररथ भी स्नान करने आया था, राजा चित्ररथ सुंदर और आकर्षक था। राजा को देखकर रेणुका भी आसक्त हो गईं, किंतु ऋषि जमदग्नि ने अपने योगबल से अपनी पत्नी के इस आचरण को जान लिया। उन्होंने आवेशित होकर अपने पांचों पुत्रों को अपनी मां का सिर काटने का आदेश दिया। किंतु परशुराम को छोड़कर सभी पुत्रों ने मां के स्नेह के बंधकर वध करने से इंकार कर दिया, लेकिन परशुराम ने पिता के आदेश पर अपनी मां का सिर काटकर अलग कर दिया। क्रोधित ऋषि जमदग्नि ने आज्ञा का पालन न करने पर परशुराम को छोड़कर सभी पुत्रों को चेतनाशून्य हो जाने का शाप दे दिया, वहीं परशुराम को खुश होकर वर मांगने को कहा। तब परशुराम ने पूर्ण बुद्धिमत्ता के साथ वर मांगा। जिसमें उन्होंने तीन वरदान मांगे- पहला, अपनी माता को फिर से जीवन देने और माता को मृत्यु की पूरी घटना याद न रहने का वर मांगा। दूसरा, अपने चारों चेतनाशून्य भाइयों की चेतना फिर से लौटाने का वरदान मांगा। तीसरा वरदान स्वयं के लिए मांगा जिसके अनुसार उनकी किसी भी शत्रु से या युद्ध में पराजय न हो और उनको लंबी आयु प्राप्त हो।

श्रीजमदग्नि जी के आश्रम में एक कामधेनु गौ थी, जिसकी अलौकिक ऐश्वर्य शक्ति को देखकर कार्तवीर्यार्जुन उसे प्राप्त करने के लिए दुराग्रह करने लगा था। अंत में उसने गौ को हासिल करने के लिए बल का प्रयोग किया और उसे माहिष्मती ले आया। किंतु जब परशुराम जी को यह बात विदित हुई तो उन्होंने कार्तवीर्यार्जुन तथा उसकी सारी सेना का विनाश कर डाला। जिस पर पिता ने परशुराम जी के इस चक्रवर्ती सम्राट के वध को ब्रम्ह् हत्या के समान बताते हुए उन्हें तीर्थ सेवन की आज्ञा दी। वे तीर्थ यात्रा पर चले गये, वापस आने पर माता-पिता ने उन्हें आशीर्वाद दिया।

दूसरी ओर सहस्त्रार्जुन के वध से उसके पुत्रों के मन में प्रतिशोध की आग जल रही थी। एक दिन अवसर पाकर उन्होंने छद्म वेष में आश्रम आकर जमदग्नि का सिर काट डाला और उसे लेकर भाग निकले। जब परशुराम जी को यह समाचार ज्ञात हुआ तो वे अत्यन्त क्रोधावेश में आग बबूला हो उठे और पृथ्वी को क्षत्रिय हीन कर देने की प्रतिज्ञा कर ली तथा 21 बार घूम-घूमकर पृथ्वी को निःक्षत्रिय कर दिया। फिर पिता के सिर को धड़ से जोड़कर कुरुक्षेत्र में अन्त्येष्टि संस्कार किया। पितृगणों ने इन्हें आशीर्वाद दिया और उन्हीं की आज्ञा से इन्होंने सम्पूर्ण पृथ्वी प्रजापति कश्यपजी को दान में दे दी और महेन्द्राचल पर तपस्या करने चले गये।

सीता स्वयंवर में श्रीराम द्वारा शिव-धनुष भंग किये जाने पर वह महेन्द्राचल से शीघ्रतापूर्वक जनकपुर पहुंचे, किंतु इनका तेज श्रीराम में प्रविष्ट हो गया और ये अपना वैष्णव धनु उन्हें देकर पुनरू तपस्या के लिए महेन्द्राचल वापस लौट गये। मान्यताओं के अनुसार, भगवान परशुराम के क्रोध का सामना गणेश जी को भी करना पड़ा था। दरअसल उन्होंने परशुराम जी को शिव दर्शन से रोक दिया था। क्रोधित परशुराम जी ने उन पर परशु से प्रहार किया तो उनका एक दांत नष्ट हो गया। इसी के बाद से गणेश जी एकदंत कहलाये।

भगवान परशुराम चिरजीवी हैं। ये अपने साधकों-उपासकों तथा अधिकारी महापुरुषों को दर्शन देते हैं। इनकी साधना-उपासना से भक्तों का कल्याण होता है। पौराणिक मान्यता है कि वे आज भी मन्दराचल पर्वत पर तपस्यारत हैं। ऋषि संतान परशुराम ने अपनी प्रभुता व श्रेष्ठवीरता की आर्य संस्कृति पर अमिट छाप छोड़ी। शैव दर्शन में उनका अद्भुत उल्लेख है जो सभी शैव सम्प्रदाय के साधकों में स्तुत्य व परम स्मरणीय है। देश में अनेक स्थानों पर भगवान जमदग्नि जी के तपस्या स्थल एवं आश्रम हैं, माता रेणुका जी के अनेक क्षत्र हैं, प्रायरू रेणुका माता के मंदिर में अथवा स्वतंत्र रूप से परशुराम जी के अनेक मंदिर भारत भर में हैं, जहां उनकी शांत, मनोरम तथा उग्र रूप मूर्ति के दर्शन होते हैं।

परशुराम दरअसल राम के रूप में सत्य के संस्करण हैं, इसलिए नैतिक-युक्ति का अवतरण हैं। भगवान परशुराम को उनके हठी स्वभाव, क्रोध और अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने के लिए याद किया जाता है। उन्होंने अपने जीवन के लिए अपने ही नियम बना रखे थे। परशुराम जयंती के शुभ दिन उनके चरित्र का स्मरण और अनुसरण कर कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में सफलता की ऊंचाइयों को प्राप्त कर सकता है। भगवान शिव, परशुराम जी के गुरु हैं। वह तेजस्वी, ओजस्वी, वर्चस्वी महापुरूष हैं।

वास्तु

घर की सुरक्षा और अनेक बाधाओं को दूर करने के उपाय

वास्तु शास्त्र के अनुसार घर का मुख्य दरवाजा कैसा हो जिससे घर में सुख, शांति एवं समृद्धि की वृद्धि होती रहे, इसका ज्ञान अवश्य होना चाहिए। थोड़ी-सी अज्ञानता के कारण वास्तुदोष उत्पन्न हो जाते हैं और घर में कलह, अशांति आदि की वृद्धि होने लगती है। ऐसा न हो, इसकी जानकारी यहां प्रस्तुत की जा रही है :-

1 पेड़ जहां भी लगे होते हैं, वहीं पर छाया एवं ठंडक रहती है। पेड़ अगर फलदार होता है तो और भी अच्छा है, किन्तु वास्तुशास्त्र के अनुसार घर के मुख्यद्वार के सामने वृक्ष होना अशुभ माना जाता है। वृक्ष होने के कारण गृहस्वामी अधिकतर बीमार रह सकता है तथा उस पर एक न एक मुसीबतें आती ही रहती हैं। इसके अलावा कोर्ट केस पुलिस

केस सहित अन्य मुसीबतें भी आ सकती हैं।

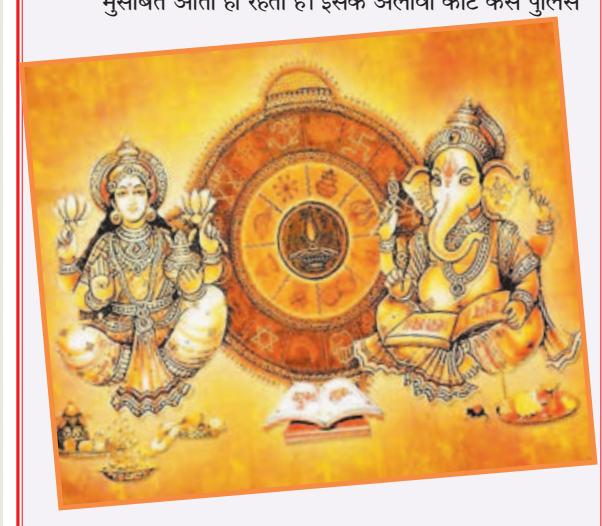

2 फेंग-शुई के अनुसार गृहस्वामी एवं परिवार के सदस्यों पर मुख्य द्वार पर पेड़ होने के कारण अनेकानेक मुसीबतें आती ही रहती हैं। अगर पेड़ हो ही और काटना असंभव हो तो मुख्य द्वार के ऊपर बाहर की ओर अष्ट कोणीय दर्पण (आईना) लगा देने से नकारात्मक ऊर्जा परावर्तित होकर वापस बाहर की ओर चली जाती है। इससे मुख्य द्वार का दोष समाप्त होकर घर में सुख-शांति की वृद्धि होने लगती है।

3 घर के दरवाजे के पास पानी होना बहुत ही मंगलकारी माना जाता है। उत्तर, पूर्व तथा दक्षिण-पूर्व दिशा की ओर अगर घर का मुख्य द्वार है और वहां पानी हो तो अत्यंत शुभकारक होता है। दरवाजे के पास एक पानी का पात्र सावधानी से रख देना हितकारी है।

4 पानी से भरे हुए पात्र को दरवाजे के पास केवल बाईं ओर ही रखें ताकि जब आप घर में खड़े हों और बाहर की ओर देख रहे हों तो वह जल पात्र आपके बाईं ओर ही रहे। दरवाजे के दाईं ओर पानी नहीं रखना चाहिए। इसका परिणाम यह होता है कि गृह स्वामी किसी अन्य महिला के प्रति आकर्षित हो सकता है।

5 दिनांक एवं वार आदि के साथ-साथ व्रत-त्यौहार आदि देखने के लिए कैलेंडर का उपयोग हर घर में किया जाता है। कैलेंडर को किसी भी दरवाजे के आगे या पीछे की ओर अथवा दरवाजे के मार्ग में कभी भी नहीं लटकाना चाहिए। फेंगशुई के अनुसार दरवाजे के ऊपर कैलेंडर लटकाने से घर के सदस्यों की आयु क्षीण होती है। मुख्य द्वार के ऊपर कैलेंडर लटकाना विशेष रूप से हानिकारक एवं दोषपूर्ण माना जाता है। प्रतीकात्मक रूप से इसका अर्थ यह होता है कि आपकी जिन्दगी के कितने दिन शेष बचे हैं? कैलेंडर को किसी अन्य जगह पर लगा कर इस दोष को सुधारा जा सकता है।

6 मकान में प्रतिवर्ष कुछ न कुछ मुरम्मत, रंग-रोगन, सफाई इत्यादि का कार्य करवाना ही होता है। अगर मकान का मुख्य द्वार अन्य निर्माण कार्य के कारण अवरुद्ध हो रहा हो तो यह फेंग-शुई के अनुसार खराब माना जाता है। इसके कारण गृह स्वामी को हृदयाघात तक हो सकता है। किसी भी कारण से मुख्य द्वार के सामने बांस-बल्ली न गाड़ कर थोड़ा हट कर ही गाडना चाहिए। अगर ऐसा करना अत्यंत ही आवश्यक हो तो द्वार के चौखट के पास सात सिक्कों को गाड़ देना चाहिए। इससे दोष मिट जाता है।

7 घर के मुख्य द्वार के सामने से सीढ़ी या लिफ्ट को नहीं लगाना चाहिए। लिफ्ट का दरवाजा बार-बार खुलता एवं

बंद होता रहता है। इसके प्रभाव से गृह स्वामी के भाग्य एवं भविष्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। अगर ऐसा है तो मुख्य द्वार पर बाहर की ओर से अष्टकोणीय दर्पण लगवा दें। इसके अलावा मुख्य द्वार की दहलीज को भी थोड़ा ऊंचा कर देना चाहिए।

8 मुख्य द्वार के ठीक सामने गाय, बैल, भैंस, कुत्ता आदि किसी भी पालतू पशु को नहीं बांधना चाहिए। ऐसा होने पर घर के अंदर शुभ स्थितियों का प्रवेश बंद हो जाता है। मुख्य द्वार के सामने पशुओं के बंधे रहने से घर की स्त्रियों पर कुप्रभाव पडने़ लगता है। फेंग-शुई के अनुसार घर के मुख्य द्वार के सामने तोता या अन्य पिंजरा रखना भी हितकारी नहीं माना जाता है। पिंजरे को मुख्य द्वार से कुछ हटा कर रखना चाहिए।

9 घर के प्रवेश द्वार के ऊपर ऐसे स्थान पर गणपति का चित्र लगाना चाहिए जिससे द्वार से निकलते समय गणपति सम्मुख सामने हों। द्वार के बाहर दोनों ओर स्वस्तिक का चिन्ह लाल रंग से बना देना शुभ होता है तथा बाधाएं घर के अंदर प्रवेश नहीं कर पातीं।

इस प्रकार कुछ विधियों को अपना कर घर की सुरक्षा की जा सकती है और अनेक बाधाओं से दूर रहा जा सकता है।

वायुसेना के काफिले पर हमला करने वालों को साजिद जट ने दी थी ट्रेनिंग

– हमले में एक जवान की मौत और चार अन्य घायल हो गए थे

नई दिल्ली। जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में भारतीय वायुसेना के काफिले पर हुए आतंकी हमले में एक जवान की मौत हो गई। चार अन्य जवान घायल हो गए थे। अब इस मामले में बड़ा खुलासा हुआ है। खुफिया सूत्रों के मुताबिक जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में के काफिले पर हमला साजिद जट द्वारा प्रशिक्षित लश्कर-ए-तैयबा के चार आतंकवादियों का काम था। वायुसेना के काफिले पर हमले की घटना शनिवार शाम करीब 6 बजे हुई, जब कॉनवॉय जारनवाली से वायुसेना स्टेशन लौट रहा था। भारतीय वायुसेना का मूवमेंट संभवत: राडार ऑपरेशन के लिए था। अनंतनाग-राजौरी लोकसभा क्षेत्र में मतदान से पहले आतंकवादियों ने भारतीय वायुसेना के काफिले पर घात लगाकर हमला किया, जिसमें एक जवान की मौत हो गई और चार अन?य घायल हो गए। पुंछ में 25 मई को छठे चरण में मतदान होना है। भारतीय वायुसेना ने सोशल मीडिया एक्स पर एक पोस्ट कर बताया कि जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में शाहसितार के पास आतंकवादियों ने भारतीय वायुसेना के काफिले पर हमला किया था। स्थानीय सैन्य इकाइयों द्वारा क्षेत्र में फिलहाल घेराबंदी कर तलाशी अभियान जारी रही है। भारतीय वायसुना ने एक और पोस्ट कर कहा कि आतंकवादियों के साथ गोलीबारी में जवानों ने जवाबी फायरिंग करके लड़ाई लड़ी। इस प्रक्रिया में पांच जवानों को गोली लगी थी उन्हें तत्काल सैन्य अस्पताल ले जाया गया। एयरफोर्स के एक जवान की मौत हो गई है। निकटवर्ती राजौरी के साथ-साथ सीमावर्ती पुंछ जिले में पिछले दो सालों में बड़े आतंकवादी हमले हुए हैं, जो इस क्षेत्र में आतंकवादी गतिविधियों की वापसी का संकेत हैं। यह इलाका आतंकवाद से मुक ?त हो गया था। साल 2021 से 2023 के बीच यह इलाका शांत रहा। बता दें कि इससे पहले 22 अप्रैल को राजौरी के कुंडा टॉप में आतंकवादियों ने एक जवान के भाई और सरकारी कर्मचारी मोहम्मद रजाक और 28 अप्रैल को उधमपुर के बसंतगढ़ इलाके में ग्राम रक्षा गार्ड मोहम्मद शरीफ की हत्या कर दी थी उसके बाद अब एयरफोर्स के काफिले पर हमला किया है।

अनंत सिंह 15 दिन पैरोल पर आए बाहर, समर्थकों ने किया स्वागत

पटना। बिहार के पूर्व बाहुबली विधायक अनंत सिंह रविवार को जेल से बाहर आ गए हैं। गृह विभाग से अनंत सिंह को जेल से 15 दिनों की पैरोल मिल गई है। वह सुबह तड़के चार बजे जेल से बाहर निकले। जेल के बाहर जुटे उनके समर्थकों ने फूल माला पहनाकर उनका स्वागत किया। इसके बाद वह कार में बैठकर वहां से रवाना हो गए। अनंत सिंह को बिहार सरकार ने पुश्तैनी जमीन के बंटवारे के लिए पैरोल पर छोड़ा है। अनंत सिंह कई सालों से जेल में बंद हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक अनंत सिंह पर एके-47 रखने का आरोप है। इसके लिए कोर्ट ने उन्हें दस साल की सजा सुनाई थी। वह पटना की बेऊर जेल में सजा काट रहे हैं। अनंत सिह को 15 दिन में जमीन मामले को निपटाकर वापस जेल जाना होगा।

परिवर्तन : एअर इंडिया में केवल 15 किग्रा तक सामान ले जाने की रहेगी छूट

नई दिल्ली। टाटा ग्रुप के स्वामित्व वाली भारतीय एयरलाइन कंपनी एअर इंडिया ने अपनी फ्री बैगेज पॉलिसी में बदलाव किया है। घाटे में चल रही एअर इंडिया ने डोमेस्टिक फ्लाइट्स पर न्यूनतम किराए वाली श्रेणी में एक यात्री के लिए केबिन में रखने के लिए सामान का न्यूनतम वजन 20 किलोग्राम से घटाकर 15 किलोग्राम कर दिया है। एयरलाइन ने कहा कि सभी के लिए एक आकार का नजरिया अब आदर्श नहीं है। एयरलाइन के एक प्रवक्ता ने कहा कि किराया मॉडल में तीन श्रेणियां हैं - कम्फर्ट, कम्फर्ट प्लस और फ्लैक्स। ये अलग-अलग मूल्य पर अलग-अलग सुविधाएं प्रदान करते हैं। कम्फर्ट और कम्फर्ट प्लस श्रेणियों के तहत 2 मई से निशुल्क केबिन बैगेज सुविधा को 20 किलोग्राम और 25 किलोग्राम से घटाकर 15 किलोग्राम कर दिया गया है। मौजूदा किराया मॉडल से पहले एयर इंडिया की डोमेस्टिक फ्लाइट्स में यात्रियों को 25 किलोग्राम केबिन सामान बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के ले जाने की अनुमति थी।गौरतलब है कि एअर इंडिया दिल्ली से ज्यूरिख के लिए डायरेक्ट फ्लाइट सर्विस 16 जून से शुरू करेगी। इसके साथ ही ज्यूरिख भारत से एयर इंडिया की डायरेक्ट फ्लाइट सर्विस वाला सातवां यूरोपीय शहर हो जाएगा। कंपनी ने शुक्रवार (3 मई) को बयान में कहा कि फ्लाइट्स का संचालन हफ्ते में 4 दिनज्सोमवार, बुधवार, शुक्रवार और रविवार होगा। फ्लाइट के लिए बोइंग 787 विमान का उपयोग किया जाएगा।

पुंछ में आतंकी हमले में एक जवान शहीद, 4 घायल

जम्मू। जम्मू-कश्मीर के पुंछ जिले में एक आतंकी हमले में घायल पांच सैनिकों में से एक वायुसेना के जवान ने शनिवार रात उधमपुर के कमांड अस्पताल में दम तोड़ दिया। अधिकारियों ने बताया कि आतंकवादियों ने शनिवार शाम करीब छह बजकर 15 मिनट पर पुंछ जिले के मेंढर तहसील के गुरसाई वन क्षेत्र में वायुसेना के दो वाहनों पर गोलीबारी की। एक अधिकारी ने कहा कि घायल सैनिकों को सेना के उत्तरी कमान के मुख्यालय उधमपुर के कमांड अस्पताल में पहुंचाया गया। एक घायल सैनिक ने दम तोड़ दिया, जबकि चार अन्य का अस्पताल में इलाज किया जा रहा है। राष्ट्रीय राइफल्स और अन्य सुरक्षा बलों ने हमलावरों का पता लगाने के लिए अभियान शुरू किया है। इससे पहले वायुसेना ने एक्स पर एक पोस्ट पर कहा था कि पुंछ जिले में शाहसितार के पास आतंकवादियों द्वारा भारतीय वायुसेना के एक वाहन पर हमला किया गया। स्थानीय सैन्य इकाइयों द्वारा क्षेत्र में फिलहाल घेराबंदी और तलाशी अभियान जारी है। काफिले को सुरक्षित कर लिया गया है और आगे की जांच जारी है।

ईवीएम एक चोर मशीन है, सुनिश्चित करें कि आपने सही पार्टी को वोट दिया है : फारूक अब्दुल्ला

श्रीनगर। नेशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला ने रविवार को कश्मीर के मतदाताओं से लोकसभा चुनाव के लिए मत डालते समय ईवीएम में हेरफेर की आशंका के प्रति सतर्क रहने को कहा। अब्दुल्ला ने कहा, 'सभी मतदाताओं के लिए यह जानना जरूरी है कि ईवीएम एक चोर मशीन है। मतदान के दिन, आप पहचान की प्रक्रिया से गुजरेंगे और फिर आपकी उंगली पर स्याही लगाई जाएगी। जब आप ईवीएम बूथ पर जाएं तो उस पर लगी (एलईडी) लाइट की

जांच कर लें।' उन्होंने ने कहा, 'वोट डालने के बाद मशीन से एक बीप की आवाज आनी चाहिए। अगर मशीन पर कोई रोशनी नहीं है, तो आपको बाहर आना चाहिए और (निर्वाचन) कर्मचारियों से इसके बारे में पूछना चाहिए।' पूर्व मुख्यमंत्री पार्टी उम्मीदवार आगा रुहुल्ला मेहदी के लिए प्रचार कर रहे थे, जो श्रीनगर लोकसभा सीट से चुनाव लड़ रहे हैं। इस सीट पर 13 मई को मतदान होगा। अब्दुल्ला ने मतदाताओं से यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया कि वीवीपैट पर्चियों पर वही चुनाव चिन्ह छपा हो जिसे उन्होंने वोट दिया था। उन्होंने कहा, 'अपना वोट डालने के बाद, एक (वीवीपीएटी) पर्ची आएगी। आपको यह जांचना चाहिए कि क्या पर्ची पर निशान वही है जिसे आपने वोट दिया है।' अब्दुल्ला ने पार्टी नेताओं से यह सुनिश्चित करने का आग्रह किया कि वे चुनावों के लिए 'निष्ठापूर्ण ईमानदार' लोगों को मतदान एजेंट के रूप में नियुक्त करें। नेशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी चुनावी लाभ के लिए सांप्रदायिक भय फैला रहे हैं। उन्होंने कहा, 'वह (मोदी) हिंदुओं को यह कहकर डराने की कोशिश कर रहे हैं कि अगर उनके पास दो घर हैं, तो वे (विपक्ष) एक छीन लेंगे और मुसलमानों को दे देंगे। फिर वे हिंदू महिलाओं को यह कहकर डराते हैं कि उनका मंगलसूत्र छीन लिया जाएगा और बेच दिया जाएगा। बिक्री से प्राप्त धनराशि मुसलमानों को दी जाएगी।' उन्होंने कहा, 'वे (भाजपा) नहीं जानते कि कोई भी मुसलमानों का हितैषी नहीं है। यह ईश्वर है जो भोजन देता या रोकता है।' अब्दुल्ला ने कहा कि मौजूदा चुनाव विकास के लिए नहीं बल्कि देश को बचाने के लिए है। उन्होंने कहा, 'आज लड़ाई सड़क और बिजली की नहीं है। लड़ाई देश को बचाने की है। क्योंकि अगर देश बचेगा तो हम भी सरक्षित रहेंगे।

बिना हिंदू-मुसलमान बोले उनका खाना नहीं पचता: खरगे

– कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने सीएम योगी पर किया पलटवार

मालदा, (एजेंसी)। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि हमारे घोषणापत्र में नारी न्याय, युवा न्याय, किसान न्याय आदि की बात की गई है तो क्या यह मुसलमानों के लिए है? बिना हिंदू-मुसलमान बोले उनका खाना नहीं पचता है..। खरगे ने राहुल गांधी की रायबरेली से चुनाव लड़ने पर कहा कि जनता की इच्छा है कि वे वहां से चुनाव लड़ें और जीतें। लाखों वोटों से वे जीतेंगे।

मल्लिकार्जुन खरगे ने बीजेपी पर निशाना साधते हुए कहा बिना हिंदू-मुसलमान बोले उनका खाना नहीं पचता है...। कांग्रेस के घोषणापत्र को लेकर यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की टिप्पणी के संबंध में उन पर पलटवार किया। उन्होंने कहा कि 45 साल में इतनी बेरोजगारी बढ़ी जिसकी चिंता उन्हें नहीं है...बेरोजगारी के बारे में बोलते हैं दो में से एक भैंस कांग्रेस गायब कर देगी। उन्होंने कहा-हम बोलते है महंगाई हो गई है कुछ करो तो बोलते हैं आपकी जमीन छीन लेंगे। अमीर गरीब की बढ़ती खाई पर बोलते हैं कांग्रेस आई तो सब लूट कर ले जाएगी।

खरगे ने कहा कि उन्होंने चुनावी बॉन्ड के नाम पर पैसा वसूला बीजेपी ने चंदा दो धंधा लो का काम किया, सबसे पैसे लेकर टेंडर दिए। कांग्रेस भ्रष्ट है, ये ही बोल कर तुम पावर में आए तुम क्या कर रहे हो? ये हमारी पार्टी के लोगों को तोड़-तोड़ कर लेते हैं। जो भ्रष्ट लोग उनको शामिल करा रहे हैं मैं पूछता हूं क्या वो वहां जाते ही अच्छे हो गए? खरगे ने कहा कि अमित शाह ने कहा था कि हमारी पार्टी में जो लोग आए उनको हम एक-एक कर देखेंगे उसके बाद जो कलंकित है उसे निकाल देंगे।

लोकसभा चुनाव के शुरुआती दो चरणों में हम काफी आगे : अमित शाह

धर्मवरम । केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा है कि लोकसभा चुनाव के शुरुआती दो चरणों में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी काफी आगे हैं और सीटों का आंकड़ा 100 के करीब आ गया है। इससे उनके 400 से ज्यादा सीटें आने का भरोसा पक्का हो गया है। शाह ने ये बात आंध्र प्रदेश में चुनाव प्रचार अभियान के दौरान कही। शाह ने राज्य के धर्मवरम विधानसभा क्षेत्र में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री वाई एस जगन मोहन रेड्डी और वाईएसआर कांग्रेस पार्टी (वाईएसआरसीपी) पर निशाना भी साधा। शाह ने कहा कि ये आंध्र प्रदेश में भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे हैं। राज्य में माफिया बढ़ रहे हैं और अपराध बढ़ता जा रहा है। शाह ने कहा कि वह राज्य में भ्रष्टाचार, अपराध, माफिया और धर्मांतरण के खिलाफ भाजपा, तेलुगु देशम पार्टी और जनसेना गठबंधन की लड़ाई को मजबूत करने के लिए प्रदेश आए हैं। उन्होंने कहा कि हमने राज्य में अपराधियों के कथित शासन, बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार और रेत माफिया को खत्म करने के लिए ही तेलुगु से गठबंधन किया है। शाह ने कहा कि देश मोदी को तीसरी बार प्रधानमंत्री बनाने के लिए उत्साहित होकर मतदान कर रहा है। उन्होंने इस दौरान विपक्ष पर जमकर निशाना साधा।

30 साल बाद दिग्विजय सिंह अपनी पारिवारिक सीट से लड़ रहे चुनाव

– राजगढ़ सीट बनी देश में चर्चा का विषय

राजगढ़ (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव 2024 के महाकुंभ में नए चेहरों के साथ कई दिग्गज भी मैदान हैं और अपनी किस्मत आजमा रहे हैं। मध्यप्रदेश की बात करें तो यहां राजगढ़, गुना और विदिशा सीट पर पूरे देश की नजर है। वो इसलिए कि यहां से केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, पूर्व सीएम शिवराज सिंह चौहान और पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह चुनावी मैदान में उतर चुके हैं।

मध्यप्रदेश का शांत और छोटा जिला राजगढ़, संसदीय क्षेत्र के तौर पर इस बार देश भर में सुर्खियां बटोर रहा है, इसकी वजह है करीब 30 साल बाद कांग्रेस के कद्दावर नेता और पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह इस उम्र में यहां से एक बार फिर लोकसभा के लिए चुनावी मैदान में कठिन परिश्रम कर रहे हैं। राजगढ़ सीट से उनका मुकाबला भाजपा के मौजूदा सांसद रोडमल नागर से हैं, नागर के पक्ष में चुनाव प्रचार करने में संगठन पूरी ताकत झोंक रहा है और अनेक राष्ट्रीय नेता भी प्रचार कर चुके हैं कि किसी भी तरह दिग्विजय सिंह को मात दी जा सके।

दिग्विजय सिंह के लिए ये सीट इसलिए भी अहम हैं कि यह उनकी पारिवारिक सीट रही है। इस संसदीय क्षेत्र में उनकी गृह विधानसभा गुना जिले का राघौगढ़ भी आता है। वह इस संसदीय सीट से 80 और 90 के दशक में एक-एक बार पहले भी सांसद चुने जा चुके हैं। इसके बाद उनके छोटे भाई लक्ष्मण सिंह भी यहां से तीन बार कांग्रेस से और एक बार भाजपा से सांसद रह चुके हैं।

राजगढ़ की इस सीट पर सात मई को मतदान होना है। आज प्रचार खत्म होने के दिन तक दिग्विजय सिंह ने खुद चुनाव प्रचार अभियान की कमान संभाली है। भीषण गर्मी में वे गांव-देहात में पहुंच रहे हैं और अपने परिवार के सदस्यों के साथ कांग्रेस और अपने पक्ष में मतदान करने की अपील कर रहे हैं। नर्मदा परिक्रमा के बाद से दिग्विजय सिंह की पदयात्रा प्रदेश में चर्चाओं में रहती हैं और चुनाव के प्रचार के दौरान भी सिंह लगातार पदयात्राओं के जरिए जनता के बीच पहुंच रहे हैं। राज्यसभा सांसद दिग्विजय सिंह सार्वजनिक तौर पर यह कह चुके हैं कि ये उनका आखिरी चुनाव है और यही अपील करते हुए जनता से उनका समर्थन करने का अनुरोध कर रहे हैं।

वहीं दूसरी ओर बीजेपी के नेता भी इसे उनका आखिरी चुनाव बताने से नहीं चूक रहे। राजगढ़ से बीजेपी उम्मीदवार रोडमल नागर के समर्थन में पिछले दिनों यहां चुनावी सभा करने आए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने दिग्विजय सिंह के संदर्भ में बिना नाम लिए यहां तक कह दिया कि आशिक का जनाज़ा है, जरा धूम से निकले। हालांकि उनके इस बयान पर दिग्विजय सिंह ने भी बीजेपी नेताओं को निशाने पर लेते हुए पलटवार किया था। बीजेपी के नेता सिंह के मुख्यमंत्रित्व काल के दौरान की राज्य की स्थिति को लेकर लगातार उन पर हमले बोल रहे हैं।

बीजेपी के मौजूदा सांसद रोडमल नागर यहां से लगातार दो बार चुनाव जीत चुके हैं। पिछले चुनाव में उन्होंने कांग्रेस की मोना सुस्तानी को कराया था, जिसके बाद श्रीमती मोना ने पिछले साल हुए विधानसभा चुनाव में कांग्रेस छोड़कर बीजेपी ज्वाइन कर ली थी। कांग्रेस और बीजेपी के प्रत्याशियों समेत इस संसदीय क्षेत्र से कुल 15 उम्मीदवार चुनावी मैदान में हैं।

राजगढ़ संसदीय सीट नरसिंहगढ़, ब्यावरा, खिलचीपुर, राजगढ़, सारंगपुर, आगरमालवा जिले की सुसनेर और गुना जिले की राघौगढ़ और चाचौड़ा विधानसभा क्षेत्रों से मिल कर बनी है। इनमें से वर्तमान में राघौगढ़ और सुसनेर विधानसभा क्षेत्र में कांग्रेस का कब्जा है। सात मई को मतदान के बाद इस अंचल के मतदाताओं ने किसका समर्थन किया है, इसका खुलासा चार जून को परिणाम आने के बाद हो जाएगा।

स्वामी प्रसाद मौर्य की बसपा में हो सकती हैं वापसी, कुशीनगर से लड़ सकते हैं चुनाव

– बसपा सुप्रीमो मायावती ने कुशीनगर सीट होल्ड कर रखी

कुशीनगर (एजेंसी)। राष्ट्रीय शोषित समाज पार्टी (आरएसएसपी) के मुखिया स्वामी प्रसाद मौर्य की बसपा में वापसी हो सकती हैं। राजनीतिक हल्कों ने चर्चा है कि जल्द ही स्वामी बहुजन समाज पार्टी के सिम्बल पर कुशीनगर लोकसभा सीट से चुनाव लड़ सकते हैं। यही वजह है कि नामांकन के कुछ दिन ही बचे और बसपा सुप्रीमो मायावती ने कुशीनगर सीट होल्ड कर रखी है। ऐसा माना जा रहा है कि बसपा यहां से बड़े फैसले का एलान कर सकती हैं। पार्टी ने इस मसले में अभी चुप्पी साध रखी है।

बसपा उत्तरप्रदेश की सभी 80 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। उसने 78 सीटों पर अपने उम्मीदवार भी घोषित कर दिए हैं। देवरिया और कुशीनगर सीट पर प्रत्याशियों का मंथन तेज है। इसमें कुशीनगर सीट होल्ड पर है। इस सीट पर स्वामी प्रसाद मौर्य से चल रही अंदरुनी बात के परिणामों का इंतजार किया जा रहा है। वहीं बसपा और आरएसएसपी का चुनाव में क्या रोल रहेगा इन मुद्दों पर रणनीति बनाई जा रही हैं। इसके बाद अंतिम फैसला बसपा चीफ मायावती करेंगी। कुशीनगर में सात मई से नामांकन पत्र दाखिल करने की प्रक्रिया शुरू होगी।

अपने विवादित बयानों के चलते सुर्खियों में रहने वाले स्वामी प्रसाद मौर्य अपना सियासी ठिकाना बदलने के लिए भी जाने जाते हैं। 2016 में बसपा प्रमुख पर कई आरोप लगाकर पार्टी को अलविदा कहने वाले स्वामी अब फिर हाथी की सवारी करने को बेताब हैं। स्वामी ने 1980 के दशक से लोकदल से राजनीति शुरू की। इसके बाद स्वामी 1991-1995 तक जनता दल के प्रदेश महासचिव रहे। 1996 में वह बसपा में आए फिर यहीं से उनके सियासत की असली कहानी शुरू हुई।

साल 1997 में ही वह बसपा-बीजेपी गठबंधन की सरकार में मंत्री बने. इसके बाद 2001 में वह नेता प्रतिपक्ष नियुक्त किए गए. 2002 में वह पडरौना से विधायक चुने गए. इस दौरान साल 2002-2003 में बसपा सरकार में मंत्री बने. बसपा सरकार गिरने के बाद वह मायावती ने उन्हें नेता प्रतिपक्ष की जिम्मेदारी दी. साल 2007 में जब बसपा ने यूपी में प्रचंड बहुमत हासिल किया तब स्वामी फिर मंत्री बने और साल 2012 तक पद पर बने रहे. 2012 में बसपा चुनाव हार गई, हालांकि स्वामी अपना चुनाव जीतकर नेता प्रतिपक्ष बने।

कनाडा में आतंरिक राजनैतिक कलह है इससे भारत का कोई लेना देना नहीं है : जयशंकर

भुवनेश्वर (एजेंसी)। कनाडा में खालिस्तानी अलगाववादी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या के आरोप में तीन लोगों की गिरफ्तारी हुई है। इस मामले में भारत का हाथ होने के आरोप लगाए गए थे। इस पर भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर से प्रश्न पूछा गया तो उन्होंने साफ कह दिया कि कनाडा में जो कुछ भी घट रहा है वो उनकी अपनी आंतरिक राजनैतिक कलह के कारण हो रहा है। इससे भारत का कोई लेना देना नहीं है। जयशंकर ने जबाव में कहा कि कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो भारत की आलोचना क्यों कर रहे हैं। विदेश मंत्री ने यहां वरिष्ठ पत्रकारों से बातचीत में कहा कि 'विकसित भारत' बनाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में सुधार के वास्ते देश को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की तरह मजबूत और सक्रिय नेता की जरूरत है। भारतीय विदेश मंत्री ने कहा, 'वैश्विक स्तर पर भारत की छवि अब पहले की तुलना में बहुत बेहतर है- कनाडा एक अपवाद है। आपने देखा है कि विभिन्न देशों के नेतृत्व, भारत और उसके प्रधानमंत्री की प्रशंसा करते हैं।' उन्होंने कहा कि खालिस्तान समर्थकों का एक वर्ग कनाडा के लोकतंत्र का इस्तेमाल कर रहा है, लॉबी बना रहा है और एक वोट बैंक बन गया है।विदेश मंत्री ने कहा कि कनाडा में सत्तारूढ़ दल के पास संसद में बहुमत नहीं है और कुछ दल खालिस्तान समर्थक नेताओं के भरोसे हैं। उन्होंने कहा, 'हमने उनसे कई बार कहा कि वे ऐसे लोगों को वीजा, मान्यता या राजनीतिक क्षेत्र में जगह नहीं दें जो उनके (कनाडा के) लिए, हमारे लिए और हमारे संबंधों में समस्या पैदा कर रहे हैं, लेकिन कनाडा सरकार ने कुछ नहीं किया।'

झारखंड का मंडल डैम बना चुनावी मुद्दा, पक्ष-विपक्ष मढ़ रहे एक दूसरे पर आरोप

– 2019 में पीएम मोदी ने किया था शिलान्यास, अब तक काम पूरा नहीं

गढ़वा (झारखंड) (एजेंसी)। लोकसभा चुनाव के दो चरणों का मतदान हो चुका है। तीसरे चरण का मतदान 7 मई को होना है। इस चुनाव में राजनीतिक पार्टियां एक-दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप लगा रही है। इसी बीच चुनाव के दौरान झारखंड के मंडल डैम का मुद्दा उभरकर सामने आया है। इसको लेकर पक्ष-विपक्ष एक दूसरे पर आरोप मढ़ रहे हैं।

इंडिया गठबंधन के नेता ने मंडल डैम का पीएम नरेंद्र मोदी पर झूठा शिलान्यास करने का आरोप लगाया है, तो वहीं पलामू से बीजेपी प्रत्याशी ने प्रदेश सरकार पर उदासीन रवैया अपनाने का आरोप लगाया। साल

2019 में पीएम मोदी ने मंडल डैम का शिलान्यास किया था, लेकिन आज तक निर्माण कार्य पूरा नहीं हो सका है। अब झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) पार्टी इसे मुद्दा बनाकर लोकसभा चुनाव मे जनता के बीच जा रही है। झामुमो ने पीएम मोदी से झारखंड दौरे पर आने पर मंडल डैम पर सवाल कर रही है। तो वहीं बीजेपी ने इसे प्रदेश सरकार की साजिश बताया है। झामुमो के केंद्रीय महासचिव और मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर ने कहा कि पीएम मोदी पलामू की धरती पर आए और मंडल डैम का जिक्र तक नहीं किया। आखिरी क्या वजह रही कि पांच सालों में अभी तक काम शुरू नहीं हो पाया? यहां की जनता तो पूछेगी मंडल डैम कहां है। पलामू लोकसभा सीट से बीजेपी उम्मीदवार विष्णु दयाल राम ने राज्य सरकार उपेक्षा का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार ने तो राशि उपलब्ध करा दी है, लेकिन क्या वजह है कि ये रैयतों को मुआवजा नहीं दे रहे हैं? वहां के विस्थापित को दस-दस लाख रुपए मुआवजा देना है तो ये क्या कर रहे हैं? इन्हें सिर्फ केंद्र की योजनाओं को लटकाना आता है। हमारी सरकार बनेगी तो हम इसे प्राथमिकता से बनवाएंगे।

जयगढ़ किले का खजाना....जिसे खोजने इंदिरा ने करवाई पांच माह खुदाई

–मिला क्या यह आज भी है रहस्य

नई दिल्ली (एजेंसी)। आपातकाल के दौरान जब देश के बड़े विपक्षी नेताओं को जेल में बंद कर दिया गया था। तब तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने राजस्थान के एक किले में खजाना खोजने के लिए सेना की टुकड़ी उतार दी। यह खजाना आज भी रहस्य बना हुआ है। आज तक पता नहीं चला कि अगर किले से खजाना निकला तब कहां चला गया। वैसे इंदिरा सरकार ने स्पष्ट कर दिया था कि पांच महीने चले अभियान में कोई खजाना हाथ नहीं लगा है।

बात अगस्त 1976 की है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री जुल्फिकार अली भुट्टो ने तत्कालीन पीएम इंदिरा गांधी को एक पत्र लिखा था। पाकिस्तान की ओर से कहा गया था कि जयपुर के जयगढ़ किले में जो खजाने की खोज चल रही है उसपर पाकिस्तान का भी अधिकार है। इससे पता चलता है कि इस खजाने की चर्चा इतना ज्यादा थी कि बात पाकिस्तान तक पहुंच गई। इतना ही तब के पाकिस्तान के पीएम ने उसपर अपना दावा ठोंक दिया।

दरअसल बात मुगल काल की है जब अकबर ने अपने सेनापति राजा मान सिंह को अफगानिस्तान फतह करने के लिए भेजा था। बताया जाता है कि राजा मान सिंह ने अफगानिस्तान में जीत हासिल कर बहुत सारा खजाना लेकर वापस लौटे। हालांकि उन्होंने खजाने की जानकारी अकबर को नहीं देकर खाजने को जयगढ़ के किले में बनी पानी की टंकियों (जल संरक्षण के लिए) में छिपा दिया। आरएस खानगरोट और पीएस नाथावत ने 1990 में आई किताब जयगढ़, द इनविसाइबल फोर्ट ऑफ आंबेर में इसका जिक्र किया है।

हफ्त तिलिस्मात ए आंबेर नाम की किताब में पहली बार खजाने का जिक्र किया था। बताया गया कि आंबेर के किले के पीछे बने पानी के टैंक में खजाना छिपाया गया था। ब्रिटिश काल में अंग्रेजों ने भी इस खजाने को तलाशने की कोशिश की थी लेकिन नाकाम रहे थे। आपातकाल के दौरान इंदिरा गांधी के पास अच्छा मौका था। प्रेस पर बैन था। बड़े नेता जेल में थे। तभी कांग्रेस विरोधी रही राजमाता गायत्री देवी को गिरफ्तार किया गया। इसके बाद किले में खुदई शुरू हो गई। सेना की टुकड़ी के साथ आयकर विभाग और अन्य टीमें किले में उतर चुकी थीं। पाचं महीने तक यह काम चलता रहा।

खुदाई के दौरान अक्सर किले के ऊपर हेलिकॉप्टर देखे जाते थे। इससे इस बात को और बढ़ावा मिला कि किले में जरूर खजाना है। वहीं बीच में इंदिरा गांधी अपने सुपुत्र संजय गांधी को साथ लेकर किले में गई। खुदाई पूरी होने के बाद इंदिरा गांधी ने कहा कि जयगढ़ में

230 किलो चांदी के अलावा और कोई खजाना नहीं मिला है।

जयगढ़ का यह कथित खजाना तब से रहस्य ही बना हुआ है। कई बार कोशिश आरटीआई डालकर जानकारी हासिल करने की की गई। इसके बावजूद कोई जानकारी नहीं मिली। यह भी कहा जाता है कि खुदाई के दौरान कई दिनों तक जयपुर-दिल्ली हाइवे को बंद कर दिया गया था। इस दौरान किले से 50 से 60 ट्रक दिल्ली के लिए रवाना हुए थे। हालांकि यह कभी पता नहीं चल पाया कि ट्रकों में क्या था।

प्याज निर्यात से रोक हटाने से पहले निर्वाचन आयोग की अनुमति ली गईः सूत्र

- प्रतिबंध हटने से खुदरा बाजार में कीमतों में कोई वृद्धि नहीं होगी

नई दिल्ली ।

केंद्र सरकार ने प्याज निर्यात से प्रतिबंध हटाने से पहले निर्वाचन आयोग की अनुमति ली है। सरकारी सूत्रों के अनुसार वित्त मंत्रालय के तहत राजस्व विभाग ने 40 प्रतिशत निर्यात शुल्क और 550 अमेरिकी डॉलर प्रति टन के न्यूनतम निर्यात मूल्य (एमईपी) की शर्तों के तहत प्याज निर्यात से प्रतिबंध हटाने के लिए निर्वाचन आयोग से अनुमति ली है। सरकार ने शनिवार को प्याज निर्यात से प्रतिबंध हटा दिया था। इस फैसले से बड़ी संख्या में किसानों को मदद मिलेगी। यह फैसला ऐसे समय लिया गया है जबकि महाराष्ट्र सहित कई प्रमुख उत्पादक क्षेत्रों में लोकसभा चुनाव के लिए मतदान होने वाला है। सरकार ने 550 डॉलर प्रति टन के न्यूनतम निर्यात मूल्य (लगभग 46 रुपये प्रति किलोग्राम) के साथ ही 40 प्रतिशत का निर्यात शुल्क लगाया है। इस शुल्क को देखते हुए 770 डॉलर प्रति टन या 64 रुपये प्रति किलोग्राम से कम भाव पर प्याज निर्यात की अनुमति नहीं दी जाएगी। प्याज के निर्यात से प्रतिबंध हटाने का निर्णय उपभोक्ता मामलों के विभाग की सिफारिश पर लिया गया है। विभाग देश में प्याज की उपलब्धता और कीमत की स्थिति पर नजर रखता है। पिछले साल आठ दिसंबर को केंद्र ने उत्पादन में संभावित गिरावट की चिंताओं के बीच खुदरा कीमतों को नियंत्रित करने के लिए प्याज के निर्यात पर प्रतिबंध लगा दिया था। पिछले 4-5 साल के दौरान देश से सालाना 17 लाख से 25 लाख टन प्याज का निर्यात हुआ है। उपभोक्ता मामलों की सचिव निधि खरे ने कहा कि प्रतिबंध हटने से खुदरा बाजार में कीमतों में कोई वृद्धि नहीं होगी। उन्होंने कहा कि कीमतें स्थिर रहेंगी। अगर कोई बढ़ोतरी होती है, तो यह बहुत मामूली होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार उपभोक्ताओं और किसानों दोनों के हितों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है।

कोटक महिंद्रा बैंक के शेयर में एक सप्ताह में भारी गिरावट

- बैंक ने एक दिन में गंवाए 40,000 करोड़

नई दिल्ली ।

कोटक महिंद्रा बैंक पर आरबीआई की कार्रवाई के बाद इसके शेयरों में जबरदस्त गिरावट देखने को मिली। 25 अप्रैल को कोटक महिंद्रा बैंक के शेयर 10 फीसदी से ज्यादा गिर गए। इस वजह से महज एक दिन में बैंक का बाजार पूंजीकरण 40,000 करोड़ रुपये घट गया। बैंक के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने कहा ` कि आरबीआई की कार्रवाई के बाद कोटक महिंद्रा बैंक वित्तीय प्रभाव की तुलना में हमारी प्रतिष्ठा पर पड़ने प्रभाव को लेकर अधिक चिंतित है। इस पूरे प्रकरण के बाद कोटक महिंद्रा बैंक के शेयरों की जोरदार पिटाई हुई। महज एक सप्ताह में बैंक के शेयर 13 फीसदी से ज्यादा गिर गए हैं। इससे बैंक ने बाजार में अपना मार्केट शेयर खोया है। कोटक महिंद्रा बैंक के अे धिकारी ने कहा ` कि आरबीआई की कार्रवाई का बैंक की फे`चाइजी और प्रतिष्ठा पर प्रभाव पड़ा। हमारे क्रेडिट कार्ड और 811 बिजनेस पर असर पड़ेगा। कोटक महिंद्रा बैंक ने 4 मई को तिमाही नतीजे पेश करने के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में यह बात कही।

दरअसल 24 अप्रैल को आरबीआई ने कोटक महिंद्रा बैंक को अपने ऑनलाइन और मोबाइल बैंकिंग चैनलों के माध्यम से नए ग्राहकों को जोड़ने पर रोक लगा दी थी। इसके अलावा रिजर्व बैंक ने कोटक बैंक को नए क्रेडिट कार्ड जारी करने से भी मना कर दिया था। दरअसल आरबीआई ने पिछले दो वर्षों में बैंक की आईटी सिस्टम में कमियां पाई, लेकिन बैंक रिजर्व बैंक की इन चिंताओं को दूर करने में लगातार विफल रहा है। इसके बाद आरबीआई ने कोटक महिंद्रा बैंक के खिलाफ यह कार्रवाई की गई।

ट्रेडमार्क पर विवाद को लेकर टेस्ला गुरुग्राम की कंपनी के खिलाफ कोर्ट पहुंची

नई दिल्ली ।

इलेक्ट्रिक व्हीकल बनाने वाली अमेरिकी कंपनी टेस्ला इंक ने दिल्ली हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। एलन मस्क की कंपनी ने गुरुग्राम बेस्ड कंपनी के खिलाफ दिल्ली हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटाया। यह मामला ट्रेडमार्क के उल्लंघन से जुड़ा हुआ है जिस कंपनी के खिलाफ टेस्ला इंक हाई कोर्ट पहुंची है, उसका नाम टेस्ला पावर इंडिया है। टेस्ला इंक ने हाई कोर्ट से मांग की है कि वह टेस्ला पावर इंडिया को ट्रेडमार्क टेस्ला का इस्तेमाल करने से रोके। टेस्ला इंक की ओर से कोर्ट में पेश हुए एक वरिष्ठ अधिवक्ता ने कहा कि ट्रेडमार्क के गलत इस्तेमाल से अमेरिकी कंपनी की प्रतिष्ठा पर आंच आ रही है और उसके व्यावसायिक हित प्रभावित हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि नाम के इस्तेमाल से ग्राहकों को भी भ्रम हो रहा है। टेस्ला पावर की बैटरी के खिलाफ आने वाली शिकायतें अमेरिकी कंपनी ईवी मेकर टेस्ला इंक को रिडाइरेक्ट कर दी जा रही हैं, क्योंकि ग्राहक उसे एलन मस्क की कंपनी से जुड़ा हुआ मान ले रहे हैं। अधिवक्ता का आरोप है कि गुरुग्राम बेस्ड कंपनी टेस्ला पावर अपनी बैटरियों का अखबारों में विज्ञापन दे रही है, जिनमें वह खुद को एक इलेक्ट्रिक व्हीकल कंपनी के रूप में दिखा रही है। इतना ही नहीं, बल्कि गुरुग्राम स्थित कंपनी टेस्ला पावर अमेरिकी कंपनी के लोगो का भी इस्तेमाल कर रही है। अमेरिकी कंपनी की याचिका के बाद कोर्ट ने गुरुग्राम स्थित कंपनी टेस्ला पावर को नोटिस जारी किया। कोर्ट ने अगली सुनवाई तक टेस्ला पावर को टेस्ला इंक से मिलता-जुलता ट्रेडमार्क उपयोग करने और ईवी प्रोडक्ट के साथ विज्ञापन देने से रोक दिया है। मामले में अगली सुनवाई 22 मई को होने वाली है।

देश के कई राज्यों में बढ़े पेट्रोल-डीजल के भाव

नई दिल्ली ।

वैश्विक बाजार में शनिवार और रविवार को कामकाज नहीं होने से कच्चे तेल की कीमतें स्थिर हैं। भारत में हर दिन की तरह ऑयल मार्केटिंग कंपनियों ने पेट्रोल-डीजल की नई कीमत जारी कर दी गई है।

हर रोज सुबह 6 बजे सरकारी तेल कंपनियां ईंधन के नए भाव जारी करती हैं। देश के कुछ राज्यों व शहरों में रे विवार को पेट्रोल और डीजल के भाव बढ़े हैं जबकि कुछ प्रदेशों में कीमतें घटी हैं। बिहार, छत्तीसगढ़, केरल, कर्नाटक और महाराष्ट्र समेत कुछ राज्यों में पेट्रोल-डीजल की कीमतें मामूली रूप से बढ़ी हैं। वहीं जम्मू-कश्मीर, हिमाचल, हरियाणा और झारखंड समेत कुछ प्रदेशों में भाव घटे हैं।

राजधानी दिल्ली में एक लीटर पेट्रोल की कीमत 94.72 रुपये और डीजल की कीमत 87.62 रुपये प्रति लीटर, मुंबई में पेट्रोल की कीमत 104.21 रुपये प्रति लीटर और डीजल की कीमत 92.15 रुपये प्रति लीटर, कोलकाता में पेट्रोल की कीमत 103.94 रुपये प्रति लीटर और डीजल 90.76 रुपये प्रति लीटर और चेन्नई में पेट्रोल की कीमत 100.75 रुपये प्रति लीटर और डीजल की कीमत 92.34 रुपये प्रति लीटर बनी हुई है। वहीं नोएडा में पेट्रोल 95.01 रुपये प्रति लीटर और डीजल 87.94 रुपये प्रति लीटर, गुरुग्राम में पेट्रोल 94.90 रुपये प्रति लीटर और डीजल 88.03 रुपये प्रति लीटर, चंडीगढ़ में पेट्रोल 94.24 रुपये प्रति लीटर और डीजल 82.38 रुपये प्रति लीटर, हैदराबाद में पेट्रोल 107.41 रुपये प्रति लीटर और डीजल 95.63 रुपये प्रति लीटर, जयपुर में पेट्रोल 104.88 रुपये प्रति लीटर और डीजल 90.34 रुपये प्रति लीटर, पटना में पेट्रोल 105.18 रुपये प्रति लीटर और डीजल 92.03 रुपये प्रति लीटर, लखनऊ में पेट्रोल 94.56 रुपये प्रति लीटर और डीजल 87.74 रुपये प्रति लीटर है।

मारुति सुजुकी अर्टिगा सबसे ज्यादा बिकने वाली 7 सीटर कार

- 30 किलोमीटर का माइलेज, ये है बेस्ट फैमिली कार

नई दिल्ली ।

मारुति सुजुकी अर्टिगा देश की सबसे ज्यादा बिकने वाली 7 सीटर कार बन गई है। यह 7 सीटर बेहतरीन इंजन और माइलेज के साथ आती है। कंपनी कार को सीएनजी वेरिएंट में भी ऑफर करती है। आइए आपको बताते हैं इसमें क्या खास है और क्यों ये कार लोगों की पसंद लगातार बनी हुई है। अर्टिगा की कीमत की बात की जाए तो इसका बेस वेरिएंट 8.69 लाख रुपये की एक्स शोरूम में उपलब्ध है।

वहीं कार का टॉप वेरिएंट 13.03 लाख रुपये (एक्स शोरूम) कीमत पर मिल रहा है। कार के अलग-अलग वैरिएंट में आपको 7-इंच स्मार्टप्ले प्रो टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, एंड्रॉइड ऑटो और एप्पल कारप्ले सपोर्ट, कनेक्टेड कार टेक्नोलॉजी (टेलीमेटिक्स), क्रूज कंट्रोल, ऑटो हेडलैंप्स, क्लाइमेट कंट्रोल एसी, पैडल शिफ्टर्स, 4 एयरबैग्स, एबीएस के साथ ईबीडी, ब्रेक असिस्ट, रियर पार्किंग सेंसर्स, आईएसोफिक्स चाइल्ड सीट एंकरेज, ईएसपी के साथ हिल होल्ड कंट्रोल जैसे फीचर्स देखने को मिलते हैं। कार में मैनुअल और ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन का ऑप्शन भी मिलता है। वहीं नेक्सॉन की बात की जाए तो 1.2 लीटर इंजन के साथ आती है। अब अर्टिगा के माइलेज की बात की जाए तो ये पेट्रोल पर 24 किलोमीटर प्रति लीटर और सीएनजी पर 30 किलोमीटर प्रति किलो तक का माइलेज दे देती है।मारुति अर्टिगा 1.5

लीटर का डुअलजेट पेट्रोल इंजन ऑफर करती है। ये माइल्ड हाईब्रिड टेक्नोलॉजी के साथ आता है। ये इंजन 103 बीएचपी की पावर और 136.8 एनएम का टॉर्क जनरेट करता है। वहीं सीएनजी पर भी कार की पावर कम नहीं है। सीएनजी पर ये कार 88 बीएचपी की पावर और 121 एनएम का टॉर्क जनरेट करती है।

टीपीआरईएल ने एसजेवीएल से समझौता किया

नई दिल्ली । टाटा पावर रिन्यूएबल एनर्जी लिमिटेड (टीपीआरईएल) ने कहा कि उसने 460 मेगावाट की दृढ़ और प्रेषण योग्य नवीकरणीय ऊर्जा (एफडीआरई) परियोजना स्थापित करने के लिए एसजेवीएन लिमिटेड के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। एफडीआरई संयंत्र से निर्बाध रूप से लगातार बिजली आपूर्ति की जा सकती है। इससे बिजली वितरण कंपनियों (डिस्कॉम) को उनके नवीकरणीय खरीद दायित्वों (आरपीओ) और ऊर्जा भंडारण दायित्वों (ईएसओ) को पूरा करने में मदद मिलती है। बयान के मुताबिक 460 मेगावाट की एफडीआरई की इस तरह तैयार किया गया है, ताकि यह सौर, पवन और बैटरी भंडारण प्रौद्योगिकियों के संयोजन से बिजली की अधिकतम मांग के दौरान कुशलता के साथ बिजली आपूर्ति कर सके। टीपीआईएल ने कहा कि इस संयंत्र से सालाना करीब 300 करोड़ यूनिट बिजली पैदा होने और 220 करोड़ किलोग्राम कार्बन उत्सर्जन की भरपाई होने की उम्मीद है। कंपनी के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने कहा कि एसजेवीएन लिमिटेड के साथ इस साझेदारी से टीपीआरईएल टिकाऊ ऊर्जा समाधानों को अपनाकर हरित ऊर्जा उद्देश्यों को पूरा करने में योगदान कर सकेगी।

एयर इंडिया में अब ले जा सकेंगे 15 किलो तक का सामान

मुंबई । विमानन कंपनी एयर इंडिया ने घरेलू उड़ानों पर न्यूनतम किराये वाली श्रेणी में एक यात्री के लिए केबिन में रखने के लिए सामान का न्यूनतम वजन 20 किलोग्राम से घटाकर 15 किलोग्राम कर दिया है। टाटा समूह के स्वामित्व वाली एअर इंडिया ने पिछले अगस्त में पेश मूल्य निर्धारण मॉडल में बदलाव किया है। एयरलाइन ने कहा कि सभी के लिए एक आकार का नजरिया अब आदर्श नहीं है। एयरलाइन के एक प्रवक्ता ने कहा कि किराया मॉडल में तीन श्रेणियां हैं- कम्फर्ट, कम्फर्ट प्लस और फ्लैक्स। ये अलग-अलग मूल्य पर अलग-अलग सुविधाएं प्रदान करते हैं। कम्फर्ट और कम्फर्ट प्लस श्रेणियों के तहत दो मई से निशुल्क केबिन बैगेज सुविधा को 20 किलोग्राम और 25 किलोग्राम से घटाकर 15 किलोग्राम कर दिया गया है। मौजूदा किराया मॉडल से पहले एयर इंडिया की घरेलू उड़ानों में यात्रियों को 25 किलोग्राम केबिन सामान बिना किसी अतिरिक्त शुल्क के ले जाने की अनुमति थी।

टीबीओ टेक का आईपीओ 8 मई को खुलेगा

मुंबई । यात्रा सेवा प्रदाता टीबीओ टेक लिमिटेड का आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) बाजार में 8 मई को खुलेगा। एंकर निवेशक 7 मई को आईपीओ को सब्सक्राइब कर सकेंगे। कंपनी आईपीओ के जरिए 1,550 करोड़ रुपये जुटाने की योजना बना रही है। टीबीओ टेक का आईपीओ 08 मई से 10 मई तक सब्सक्रिप्शन के लिए खुला रहेगा। आईपीओ के लिए प्राइस बैंड 875 रुपये से 920 रुपये प्रति इक्विटी शेयर तय किया गया है। टीबीओ टेक आईपीओ का लॉट साइज 16 शेयरों का है। आईपीओ में भाग लेने के लिए खुदरा निवेशकों को न्यूनतम 14,720 रुपये निवेश करना होगा। एनआईआई के लिए न्यूनतम लॉट साइज निवेश 14 लॉट है, कुल 206,080 और बीएनआईआई के लिए, यह 68 लॉट है, कुल 1,000,960 है। आईपीओ के जरिए कंपनी 43 लाख फ्रेश शेयर जारी करेगी। वहीं ऑफर फॉर सेल के तहत 1.25 करोड़ शेयर जारी किया जाएगा।

गो फैशन चालू वित्त वर्ष में 120 से 150 नए स्टोर खोलेगी

चेन्नई । गो फैशन (इंडिया) लिमिटेड ने चालू वित्त वर्ष में 120-150 नए स्टोर खोलने की योजना बनाई है। कंपनी के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने यह जानकारी दी। गो फैशन के पास महिलाओं के लोकप्रिय ब्रांड गो कलर्स का स्वामित्व है। अे धिकारी ने कहा कि कंपनी ने पिछले वित्त वर्ष में कुल 94 स्टोर जोड़े, जिससे हमारे कुल स्टोर की संख्या संख्या 714 हो गई है। गो फैशन विभिन्न शहरों में उपभोक्ताओं तक पहुंच बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल कर रही है। वह स्टोर के अलावा उपभोक्ताओं को ऑनलाइन खरीदारी का अनुभव भी उपलब्ध करा रही है। इस बीच शहर स्थित इस कंपनी ने जनवरी-मार्च, 2024 की तिमाही में 13.1 करोड़ रुपये का मुनाफा कमाया है। इससे पिछले वित्त वर्ष की समान तिमाही में कंपनी का मुनाफा 14.8 करोड़ रुपये रहा था। बीते पूरे वित्त वर्ष में कंपनी का मुनाफा 82.8 करोड़ रुपये पर स्थिर रहा है।

पेटीएम की पेरेंट कंपनी के सीओओ ने दिया इस्तीफा

नई दिल्ली । पेटीएम की मूल कंपनी वन97 कम्युनिकेशंस के अध्यक्ष और मुख्य परिचालन अधिकारी (सीओओ) भावेश गुप्ता ने कंपनी से इस्तीफा दे दिया है। कंपनी ने एक आधिकारिक बयान में यह जानकारी दी। फिनटेक फर्म पेटीएम ने वरिष्ठ प्रबंधन में फेरबदल के तहत राकेश सिंह को पेटीएम मनी का मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त किया है। कंपनी ने अब तक पेटीएम मनी का नेतृत्व कर रहे वरुण श्रीधर को पेटीएम सर्विसेज का सीईओ बनाया है। पेटीएम सर्विसेज म्यूचुअल फंड और अन्य धन प्रबंधन उत्पादों के वितरण कारोबार में शामिल है। बयान में कहा गया कि भुगतान और उधार कारोबार की देखरेख करने वाले अध्यक्ष और मुख्य परिचालन अधिकारी भावेश गुप्ता ने व्यक्तिगत कारणों से कामकाजी जीवन से अवकाश लेने का फैसला किया है। वह साल के अंत तक पेटीएम की विकास पहलों के लिए मार्गदर्शन देते हुए सलाहकार की भूमिका में आ जाएंगे।

कोटक बैंक का मुनाफा बढ़कर 4,133 करोड़ हुआ

मुंबई । निजी क्षेत्र के कोटक महिंद्रा बैंक का मुनाफा वित्त वर्ष 2023-24 की जनवरी-मार्च तिमाही में 18 प्रतिशत बढ़कर 4,133 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। पिछले साल की समान तिमाही में यह 3,496 करोड़ रुपये था। हाल ही में घोषित वित्तीय परिणामों में बैंक ने बताया कि तिमाही के दौरान उसकी शुद्ध ब्याज आय 13 प्रतिशत बढ़कर 6,909 करोड़ रुपये हो गई, जो पिछले साल की समान अवधि में 6,103 करोड़ रुपये थी। बैंक ने अपनी परिसंपत्ति की गुणवत्ता में भी सुधार दर्ज किया है। सकल गैर-निष्पादित परसंपत्ति (एनपीए) पिछले साल के 1.78 प्रतिशत से घटकर 1.39 प्रतिशत रह गई है। शुद्ध एनपीए भी एक साल पहले के 0.37 प्रतिशत से गिरकर 0.34 प्रतिशत पर आ गया। बैंक द्वारा दिया गया ऋण मार्च के अंत में एक साल पहले के मुकाबले 20 प्रतिशत बढ़कर 3,91,729 करोड़ रुपये हो गया।

kotak
Kotak Mahindra Bank

सेंसेक्स की प्रमुख 10 में से छह कंपनियों का मार्केट कैप 68,417 करोड़ घटा

- प्रमुख 10 कंपनियों की सूची में रिलायंस इंडस्ट्रीज पहले स्थान पर बरकरार रही

नई दिल्ली ।

बीते सप्ताह सेंसेक्स की प्रमुख 10 कंपनियों में से छह के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) में सामूहिक रूप से 68,417.14 करोड़ रुपये की गिरावट आई। सबसे अधिक नुकसान भारती एयरटेल और रिलायंस इंडस्ट्रीज को हुआ। बीते सप्ताह जहां रिलायंस इंडस्ट्रीज, भारती एयरटेल, भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी), इन्फोसिस, आईटीसी और हिंदुस्तान यूनिलीवर के बाजार मूल्यांकन में गिरावट आई। वहीं टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस), एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक और भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) का मूल्यांकन बढ़ गया। रिलायंस इंडस्ट्रीज का मूल्यांकन 23,341.56 करोड़ रुपये घटकर 19,40,738.40 करोड़ रुपये पर आ गया। एलआईसी की बाजार हैसियत 5,724.13 करोड़ रुपये घटकर 6,19,217.27 करोड़ रुपये रह गई। इन्फोसिस का बाजार मूल्यांकन 5,686.69 करोड़ रुपये घटकर 5,87,949.62 करोड़ रुपये रह गया। आईटीसी के मूल्यांकन में 4,619.35 करोड़ रुपये की गिरावट आई और यह 5,44,645.97 करोड़ रुपये पर आ गया। हिंदुस्तान यूनिलीवर की बाजार हैसियत 1,409.76 करोड़ रुपये घटकर 5,20,551.94 करोड़ रुपये रह गई। इस रुख के ` विपरीत भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) का बाजार पूंजीकरण 26,907.71 करोड़ रुपये बढ़कर 7,42,126.11 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। आईसीआईसीआई बैंक ने सप्ताह के दौरान 24,651.55 करोड़ रुपये जोड़े, जिससे इसका बाजार मूल्यांकन 8,02,401.77 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। टीसीएस का बाजार पूंजीकरण 9,587.93 करोड़ रुपये बढ़कर 13,89,110.43 करोड़ रुपये पर पहुंच गया। एचडीएफसी बैंक की बाजार हैसियत 6,761.25 करोड़ रुपये बढ़कर 11,53,704.84 करोड़ रुपये हो गई। शीर्ष 10 कंपनियों की सूची में रिलायंस इंडस्ट्रीज पहले स्थान पर कायम रही। उसके बाद क्रमशः टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, भारतीय स्टेट बैंक, भारती एयरटेल, एलआईसी, इन्फोसिस, आईटीसी और हिंदुस्तान यूनिलीवर का स्थान रहा।

बीते सप्ताह सरसों तेल-तिलहन, सोयाबीन तिलहन के भाव तेज रहे

- बाकी तेल-तिलहनों के भाव गिरावट के साथ बंद हुए

नई दिल्ली ।

किसानों द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) से कम भाव पर बिकवाली से बचने की वजह बीते सप्ताह देश के तेल-तिलहन बाजारों में सरसों तेल-तिलहन तथा सोयाबीन तिलहन के भाव मजबूत बंद हुए। विदेशी बाजारों में दाम टूटने के कारण बाकी तेल-तिलहनों के भाव गिरावट के साथ बंद हुए। बाजार के जानकार ने कहा कि विदेशों में सोयाबीन डीगम तेल का दाम पहले के 930-935 डॉलर प्रति टन से घटकर 910-915 डॉलर प्रति टन रह गया है, जो पिछले कई साल का सबसे निचला स्तर है। इस गिरावट का असर यहां अधिकांश तेल-तिलहनों पर हुआ और उनके दाम कमजोर हो गये। बीते सप्ताह सरसों दाने का थोक भाव 90 रुपये के सुधार के साथ 5,350-5,390 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। सरसों दादरी तेल का भाव 50 रुपये बढ़कर 10,125 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। सरसों पक्की और कच्ची घानी तेल का भाव क्रमशः 10-10 रुपये की तेजी के साथ क्रमशः 1,730-1,830 रुपये और 1,730-1,845 रुपये टिन (15 किलो) पर बंद हुआ। समीक्षाधीन सप्ताह में सोयाबीन दाने और लूज का भाव भी क्रमशः 100-100 रुपये की तेजी के साथ क्रमशः 4,850-4,870 रुपये प्रति क्विंटल और 4,650-4,690 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।लेकिन इसके उलट सोयाबीन दिल्ली, सोयाबीन इंदौर और सोयाबीन डीगम तेल का भाव क्रमशः 275 रुपये, 200 रुपये और 255 रुपये की गिरावट के साथ क्रमशः 9,750 रुपये और 9,525 रुपये और 8,120 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।समीक्षाधीन सप्ताह में मूंगफली तेल-तिलहन में गिरावट रही।

मूंगफली तिलहन का दाम 75 रुपये की गिरावट के साथ 6,050-6,325 रुपये क्विंटल पर बंद हुआ। मूंगफली गुजरात और मूंगफली साल्वेंट रिफाइंड तेल के भाव भी क्रमशः 200 रुपये और 35 रुपये की हानि के साथ क्रमशः 14,525 रुपये क्विंटल और 2,200-2,465 रुपये प्रति टिन पर बंद हुए।समीक्षाधीन सप्ताह में कच्चा पाम तेल (सीपीओ) 175 रुपये की गिरावट के साथ 8,600 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ। पामोलीन दिल्ली का भाव 350 रुपये की गिरावट के साथ 9,750 रुपये प्रति क्विंटल तथा पामोलीन एक्स कांडला तेल का भाव 375 रुपये की गिरावट के साथ 8,800 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।गिरावट के आम रुख के अनुरूप बिनौला 100 रुपये की गिरावट के साथ 9,700 रुपये प्रति क्विंटल पर बंद हुआ।

देश में बीते वित्त वर्ष में 1.85 लाख नई कंपनियों का पंजीकरण हुआ

- इस साल मार्च में लगभग 16,600 कंपनियों की स्थापना की गई

नई दिल्ली। बीते वित्त वर्ष 2023-24 में देश में 1.85 लाख से अधिक कंपनियों का पंजीकरण किया गया। यह इससे पिछले वित्त वर्ष में पंजीकृत कंपनियों से कहीं अधिक है। इस साल मार्च में लगभग 16,600 कंपनियों की स्थापना की गई। आधिकारिक आंकड़ों से यह जानकारी मिली है। आंकड़ों के अनुसार, 2022-23 में 18,132.16 करोड़ रुपये की सामूहिक चुकता पूंजी के साथ 1,59,524 कंपनियां पंजीकृत हुई थीं। मार्च, 2024 के ओ खिरी में देश में कुल 26,63,016 कंपनियां थीं और इनमें से 16,91,495 या 64 प्रतिशत कंपनियां सक्रिय थीं। आंकड़ों से पता चलता है कि इनमें से कम से कम 9,31,644 पंजीकृत कंपनियां बंद हो गईं, 2,470 निष्क्रिय थीं और 10,385 कंपनियां परिसमापन के तहत थीं। कुल 27,022 कंपनियों को आधिकारिक रिकॉर्ड से हटाने की प्रक्रिया जारी थी। कॉरपोरेट मामलों के मंत्रालय के मार्च के बुलेटिन के अनुसार, 2023-24 में कुल 30,927.40 करोड़ रुपये की चुकता पूंजी वाली 1,85,312 कंपनियां पंजीकृत की गईं। इनमें से 71 प्रतिशत कंपनियां सेवा क्षेत्र की थीं। इसके बाद 23 प्रतिशत औद्योगिक क्षेत्र की और छह प्रतिशत कृषि क्षेत्र से संबंधित थीं।

आईपीएलः मुम्बई पर जीत दर्ज करने उतरेगी सनराइजर्स

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई इंडियंस की टीम आईपीएल में सोमवार को अपने घरेलू मैदान पर सनराइजर्स हैदराबाद का सामना करेंगी। मुंबई पहले प्लेऑफ से बाहर हो गयी है। ऐसे में वह ये मैच जीत भी जाती है तो भी उसे कोई लाभ नहीं होगा। वह अंकतालिका में अभी सबसे नीचे है। वह अपने 11 में से 8 मुकाबले हारी है। इसलिए बचे हुए मुकाबले जीतकर भी वह बाहर ही रहेगी। दूसरी ओर हैदराबाद 10 में से 6 मुकाबले जीतने के साथ ही अंक तालिक में चौथे स्थान पर होने के कारण ये मैच जीतकर प्लेऑफ के लिए अपनी दावेदारी मजबूत करने उतरेगी। ऐसे में ये मुकाबला रोमांचक रहेगा।

मुंबई के वानखेड़े क्रिकेट स्टेडियम की पिच बल्लेबाजों के अनुकूल मानी जाती है। इस मैदान पर जमकर रन बनते हैं। मैदान छोटा होने के कारण चौके-छक्के भी खूब लगते हैं। ऐसे में हैदराबाद के बल्लेबाजों को रोकना मुम्बई के लिए आसान नहीं रहेगा। मुम्बई की ओर से वैसे भी जसप्रीत बुमराह के अलावा कोई अन्य गेंदबाज लय में नहीं है। इस मैदान पर स्पिनरों को इस पिच पर मदद जरूर मिलती है। मुंबई के वानखेड़े क्रिकेट स्टेडियम में अब तक कुल 116 मुकाबले खेले गए हैं। इसमें से 53 पहले बल्लेबाजी करने वाली टीम तो 63 दूसरे बल्लेबाजी करने वाली टीम ने जीते हैं। जो भी टीम मुंबई में टॉस जीतेगी वह पहले गेंदबाजी करने को देख सकती है। पहली पारी का औसत

स्कोर आईपीएल में वानखेड़े में 170 रन है। हैदराबाद के पास विस्फोटक बल्लेबाज हैं और टॉस जीतने पर वह एक बार फिर बड़ा स्कोर बनाकर भारी अंतर से जीत दर्ज करना चाहेगी। इस सत्र में मुम्बई के बल्लेबाजी और गेंदबाज प्रभावी नहीं रहे हैं। ऐसे में हैदराबाद ही जीत की प्रबल दावेदार है।

टीम

मुंबई इंडियंस-हार्दिक पंड्या (कप्तान), रोहित शर्मा, सूर्यकुमार यादव, डेवाल्ड ब्रेविस, जसप्रीत बुमराह, पीयूष चावला, गेराल्ड कोएट्ज़ी, टिम डेविड, श्रेयस गोपाल, इशान किशन, अंशुल कंबोज, कुमार कार्तिकेय, आकाश मधवाल, क्वेना मफाका, मोहम्मद नबी, शम्स मुलानी, नमन धीर, शिवालिक शर्मा, रोमारियो शेफर्ड, अर्जुन तेंदुलकर, नुवान तुषारा, तिलक वर्मा, हार्विक देसाई (विकेटकीपर), नेहल वढेरा और ल्यूक वुड।

सनराइजर्स हैदराबाद- अभिषेक शर्मा, ट्रेविस हेड, हेनरिक क्लासेन, एडेन मार्कराम, अब्दुल समद, नितीश रेड्डी, शाहबाज अहमद, पैट कमिंस (कप्तान), भुवनेश्वर कुमार, जयदेव उनाद्कट, टी नटराजन, मयंक मारकंडे, उमरान मलिक, अनमोलप्रीत सिंह , ग्लेन फिलिप्स, राहुल त्रिपाठी, वॉशिंगटन सुंदर, उपेन्द्र यादव, जथावेध सुब्रमण्यन, सनवीर सिंह, विजयकांत व्यासकांत, फ़जलहक फारूकी, मार्को यानसेन, आकाश महाराज सिंह और मयंक अग्रवाल।

मयंक आईपीएल से बाहर हुए: कोच लैंगर

मुंबई, (एजेंसी)। आईपीएल 2024 के इस सत्र में अपनी सबसे तेज गेंदों के कारण आकर्षण का केन्द्र बने युवा तेज गेंदबाज मयंक यादव बचे हुए मैचों से बाहर हो गये हैं। मयंक अभी तक अपनी चोट से नहीं उबरें हैं। मयंक का बाहर होना उनकी टीम लखनऊ सुपर जॉयंट्स के लिए एक बड़ा झटका है। सुपर जॉयंट्स के मुख्य कोच जस्टिन लैंगर ने भी कहा है कि अब मयंक इस सत्र में आगे नहीं खेल पायेंगे। मयंक पेट के निचले हिस्से की मांसपेशी में चोट के कारण इस सत्र से बाहर हुए हैं। उन्होंने इस आईपीएल में अपनी तेज गेंदबाजी से सभी को प्रभावित किया है। इस सत्र में उन्होंने 4 मैच में 7 विकेट लिए। अपने पहले दोनो मैचों में वह प्लेयर ऑफ द मैच भी रहे।.

सुपर जॉयंट्स के मुख्य कोच जस्टिन लैंगर ने कहा ,'हम उम्मीद करेंगे कि वह आगे प्लेऑफ में खेल पाये पर उन्हें ऐसा होता हुआ नहीं दिखता। ' आईपीएल में रिकार्ड 155 की रफ्तार से गेंदबाजी करने वाले मयंक तीसरे और चौथे मैचों में अपने चार ओवर का कोटा भी पूरा नहीं कर सके थे। वहीं लैंगर ने कहा ,'मयंक का स्कैन कराया गया है और उसे उसी जगह पर चोट लगी जहां पहले लगी थी। यह दुर्भाग्यपूर्ण है, उसे बुमराह ने बताया कि चोटें तेज गेंदबाज के करियर का हिस्सा होती हैं।' मयंक ने 30 मार्च को एलएसजी की ओर से आईपीएल में अपना पहला मैच खेला था। इसमें उन्होंने 155 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से गेंदबाजी की थी।

चीन ने 16वीं बार उबेर कप जीता, फाइनल में इंडोनेशिया को 3-0 से हराया

चेंगडू (एजेंसी) । चीन ने रविवार को यहां अपनी बादशाहत जारी रखते हुए इंडोनेशिया को हराकर 16वीं बार उबेर कप अपने नाम किया। चीन दो साल पहले बैंकॉक में दक्षिण कोरिया से फाइनल में हार गया था। उसने रविवार को इंडोनेशिया को 3-0 से हराकर खिताब जीता। इंडोनेशिया 2008 के बाद पहला उबेर कप फाइनल खेल रहा था। चीन के लिए ओलंपिक चैम्पियन चेन यु फेई ने ग्रेगोरिया मारिस्का टुनजंग को 21-7, 21-16 से हराकर शानदार शुरूआत की।

इसके बाद चेन किंग चेन और जिया यि फान की दुनिया की नंबर एक जोड़ी ने सिटी फादिया सिल्वा रामाधंती और रिब्का सुगियार्तो को 21-11, 21-8 से हराकर बढ़त 2-0 कर दी। युवा एस्टर नुरूमी ने इंडोनेशिया के लिये कड़ी चुनौती पेश की लेकिन चीन की ही बिंग जियाओ ने उबरते हुए 10-21, 21-15, 21-17 से जीत हासिल ली। चीन ने 16वीं बार उबेर कप जीत लिया।

रविंद्र जड़ेजा का ऑलराउंड प्रदर्शन, चेन्नई ने पंजाब को हराया

धर्मशाला (एजेंसी)। रविंद्र जडेजा के ऑलराउंड प्रदर्शन की बदौलत चेन्नई सुपर किंग्स ने धर्मशाला में खेले गए आईपीएल 2024 के 53वें मैच में जीत दर्ज की। जडेजा ने पहले बल्लेबाजी के दौरान 26 गेंदों पर 3 चौकों और 2 छक्कों की मदद से 43 रन के बाद 20 रन देकर 3 विकेट झटके। चेन्नई ने टॉस हारने के बाद पंजाब को 168 रन का लक्ष्य दिया जिसके जवाब में पंजाब की टीम 139 रन ही बना सकी।

शानदार लय में चल रहे कप्तान रुतुराज गायकवाड़ ने 21 गेंद में 32 जबकि डेरिल मिचेल ने 19 गेंद में 30 रन का योगदान दिया। दोनों ने दूसरे विकेट के लिए 32 गेंद में 57 रन की साझेदारी की। अर्शदीप ने पारी के दूसरे ओवर में अजिंक्य रहाणे (नौ) को आउट कर सीएसके को पहला झटका दिया। क्रीज पर आये डेरिल मिचेल ने इस गेंदबाज के अगले ओवर में चौका और छक्का लगाकर हाथ खोला तो वहीं कप्तान रुतुराज गायकवाड़ ने हरप्रीत बराड़ के खिलाफ छठे ओवर में लगातार गेंदों पर छक्का और दो चौके जड़े। मिचेल ने ओवर की आखिरी गेंद को बाउंड्री पार पहुंचाया। इस ओवर से 19 रन बटोर कर सीएसके ने पावरप्ले में एक विकेट पर 60 रन बना लिये। आठवें ओवर में गेंदबाजी के लिए आये चाहर ने अपनी शुरुआती दो गेंदों पर गायकवाड़ और शिवम दुबे (शून्य) को पवेलियन की राह दिखाई। दोनो का कैच विकेटकीपर जितेश शर्मा ने पकड़ा।

दुबे लगातार दूसरी बार खाता खोले बगैर आउट हुए। अगले ओवर में हर्षल पटेल ने मचेल को पगबाधा

कर सीएसके को दो ओवर के अंदर तीसरा झटका दिया। जडेजा और मोईन अली ने इसके बाद पारी को संवारने की कोशिश की। क्रीज पर कुछ समय बिताने के बाद जडेजा ने हर्षल तो वही मोईन ने रबाडा के ओवर में दो-दो चौके लगाये। यह जोड़ी खतरनाक होती उससे पहले ही कप्तान सैम कुरेन ने धीमी गेंद पर मोईन को फंसा कर उनकी 20 गेंद में 17 रन की पारी को खत्म किया। कम होती रनगति को बढ़ाने की कोशिश में मिचेल सेंटनर (11) चाहर की गेंद को लांगआन पर खड़े कुरेन के हाथों में खेल गए।

शारदुल ठाकुर (17) ने कुरेन पर चौके के साथ खाता खोला अगली गेंद पर शशांक सिंह ने शारदुल को जीवनदान दिया जब आसान दिख रही कैच उनके हाथ से टकराकर छह रनों के लिए चली गयी। उन्होंने 18वें ओवर में चाहर के खिलाफ चौका जबकि जडेजा ने छक्का लगाया । अगले ओवर में हर्षल ने सिर्फ दो रन खर्च करते हुए लगातार गेंदों पर शारदुल और महेंद्र सिंह धोनी (शून्य) को बोल्ड कर सीएसके के प्रशंसकों को निराश किया। जडेजा ने अंतिम ओवर में आउट होने से पहले अर्शदीप के खिलाफ चौका और छक्का लगाकर टीम के स्कोर को 160 के पार पहुंचाया।

धोनी को आऊट कर 'धन्य' हुए हर्षल पटेल, बोले- मैं उनका बहुत सम्मान करता हूं

धर्मशाला ।धर्मशाला के मैदान पर 12 साल बाद आईपीएल मुकाबला खेलने आए धोनी पहली ही गेंद पर आऊट होकर सबको निराश कर गए।धोनी पंजाब किंग्स के खिलाफ 19वें ओवर में खेलने आए थे।उम्मीद थी कि वह आकर्षक शॉट लगाएंगे लेकिन पंजाब के तेज गेंदबाज हर्षल पटेल की एक धीमी गेंद उनका विकेट ले उड़ी। धोनी के आऊट होने के बाद धर्मशाला स्टेडियम में सन्नाटा सा छा गया। बता दें कि धोनी का बल्ला तेज गेंदबाज हर्षल पटेल के खिलाफ चलता नहीं है। आंकड़े देखें जाएं तो वह अब तक हर्षल की 33 गेंदें खेलकर सिर्फ 25 ही रन बना पाए हैं। इस दौरान वह उनसे तीन बार आऊट भी हुए। हर्षल पटेल ने पहली पारी खत्म होने के बाद कहा कि जब मैं उन्हें (धोनी पर) आउट करता हूं तो ज्यादा जश्न नहीं मनाता क्योंकि मेरे मन में उनके प्रति बहुत सम्मान है। एक दिन का खेल खेलने का एक फायदा यह है कि स्कायर काफी उबड़-खाबड़ होता है। तो गेंद रिवर्स होने लगती है। मेरे पहले ओवर में स्थिति उलट रही थी। यह सब उस डिलीवरी (धीमी डिलीवरी) के अनुभव के बारे में है। आप जितनी अधिक गेंदबाजी करेंगे आप उतने ही बेहतर होंगे। अधिकांश बल्लेबाज़ इसे नहीं चुनते। मैं अभी नेट्स में इसका अभ्यास कर रहा हूं और जब यह बाहर आता है तो यह आपको शानदार परिणाम देता है।

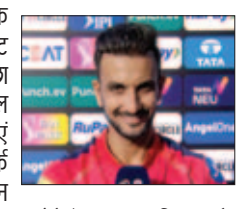

आत्मविश्वास और कभी हार नहीं मानने का रवैया सिराज की असली ताकत : गावस्कर

बेंगलुरु : महान बल्लेबाज सुनील गावस्कर ने यहां इंडियन प्रीमियर लीग में गुजरात टाइटंस पर रॉयल चैलेंजर्स बेंगलोर की चार विकेट से जीत के बाद कहा कि मोहम्मद सिराज का आत्मविश्वास और कभी हार नहीं मानने वाला रवैया उनकी असली ताकत है। पावरप्ले में सिराज ने दो विकेट चटकाते हुए शुभमन गिल और रिद्धिमान साहा को पवेलियन भेजा जिससे टाइटंस की टीम शनिवार को 19.3 ओवर में सिर्फ 147 रन ढेर हो गई। गावस्कर ने कहा, 'हर बार जब आप मोहम्मद सिराज को देखते हैं, तो आप जानते हैं कि वह अपनी जान लगा देगा। उस समय को याद करें जब उसके पिता का निधन हो गया था, जब वह ऑस्ट्रेलिया में था। वह खेलता रहा।' उन्होंने कहा, 'बहुत से लोग वापस जाना चाहेंगे क्योंकि आपके माता-पिता आपको बहुत प्यारे होते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि उसे अहसास हुआ कि भारत के लिए खेलना महत्वपूर्ण था। इसके अलावा, उस स्तर पर उसकी जगह पक्की नहीं थी। एक स्थापित खिलाड़ी शत प्रतिशत चला गया होता।' गावस्कर ने कहा, 'और याद रखें कि उन्होंने उस गाबा टेस्ट मैच में कितनी शानदार गेंदबाजी की थी। स्टीव स्मिथ जैसे खिलाड़ी को आउट करना, जब वह 55 रन पर था... तो यह मोहम्मद सिराज की असली ताकत है, आत्मविश्वास और मैदान पर कभी हार नहीं मानने वाला रवैया।'

महिला टी20 विश्व कप का शैड्यूल आया सामने, पाकिस्तान से मुकाबला इस तारीख को

दुबई (एजेंसी) । भारत को इस साल तीन से 20 अक्टूबर तक बांग्लादेश में होने वाले टी20 विश्व कप के लिए रविवार को गत चैंपियन ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और पाकिस्तान के साथ ग्रुप ए में जगह मिली। भारत के सभी ग्रुप मैच सिलहट में खेले जाएंगे। अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद द्वारा घोषित 9वें महिला टी20 विश्व कप के कार्यक्रम के अनुसार भारतीय टीम अपने अभियान की शुरुआत 4 अक्टूबर को न्यूजीलैंड के खिलाफ करेगी जबकि 6 अक्टूबर को चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान से भिड़ेगी। भारतीय टीम तीसरा मैच 9 अक्टूबर को पहले क्वालीफायर से खेलेगी जिसका अभी फैसला नहीं हुआ है।

टीम को अपना अंतिम ग्रुप मैच 13 अक्टूबर को छह बार के विश्व चैंपियन ऑस्ट्रेलिया से खेलना है। आईसीसी ने

अपनी वेबसाइट पर लिखा कि टूर्नामेंट में प्रत्येक टीम चार ग्रुप मैच खेलेगी और प्रत्येक ग्रुप से शीर्ष दो टीमें 20 अक्टूबर को ढाका में होने वाले फाइनल से पहले 17 और 18 अक्टूबर को होने वाले सेमीफाइनल मुकाबलों में जगह बनाएंगी। आईसीसी ने बताया कि ढाका और सिलहट में 19 दिन में कुल मिलाकर 23 मैच खेले जाएंगे, जरूरत पड़ने पर सेमीफाइनल और फाइनल दोनों के लिए रिजर्व दिन रखे गए हैं।

मेजबान बांग्लादेश को ग्रुप बी में दक्षिण अफ्रीका, इंग्लैंड, वेस्टइंडीज और दूसरे क्वालीफायर के साथ रखा गया है। आज क्वालीफाइंग टूर्नामेंट के फाइनल में जगह बनाने वाली दो टीम तय होने के साथ मुख्य टूर्नामेंट के लिए क्वालीफाई करने वाली 2 टीम का फैसला होगा। आयरलैंड, यूएई, श्रीलंका और स्कॉटलैंड मुख्य टूर्नामेंट में जगह बनाने की दौड़ में हैं। आयरलैंड की टीम आज पहले सेमीफाइनल में स्कॉटलैंड से खेलेगी जबकि दूसरा सेमीफाइनल भी आज ही होगा जिसमें यूएई की भिड़ंत श्रीलंका से होगी। दोनों सेमीफाइनल अबु धाबी के सेख जायेद स्टेडियम में खेले जाएंगे।

फिंच और स्मिथ बोले , हताश दिखे मुम्बई के कप्तान पंड्या

मुम्बई । ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर एरोन फिंच ने कहा है कि आईपीएल में मुंबई इंडियंस के कप्तान हार्दिक पंड्या थके हुए और नराश नजर आये। टूर्नामेंट में उनके चेहरे पर उदासी का भाव दिखा। इसके साथ ही उन्हें इस सत्र में हूटिंग का भी सामना करना पड़ा जिससे भी उनका मनोबल गिरा है। फिंच के अलावा दक्षिण अफ्रीका के ग्रीम स्मिथ का भी यही मानना है। फिंच के अनुसार कप्तान के दबाव में होने के कारण टीम भी संघर्ष करती दिखी। टीम को यहां अपने घरेलू मैदान पर भी कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) के हाथों 24 रनों से हार का सामना करना पड़ा। फिंच ने कहा, ' पंड्या इस सत्र में काफी निराश और थे हुए दिखे। ऐसा लग रहा था जैसे वह काफी दबाव में हों। साथ ही कहा कि मैंने भी इस प्रकार के हालातों का सामना किया है। इन हालातों में आप निजी तौर पर कुछ भी कोशिश करो पर लाभ नहीं होता। साथ कहा कि जब टीम अच्छा नहीं कर रही होती तो ऐसी स्थिति में रहना बहुत कठिन होता है क्योंकि आप पर टीम के प्रदर्शन की पूरी जिम्मेदारी होती है। ' वहीं स्मिथ ने कहा कि मुंबई इंडियंस ने पंड्या की कप्तानी में काफी बदलाव किये और वह भ्रम में नजर आयी। उन्होंने कहा, 'हार्दिक मैच में स्वयं बेहतर प्रदर्शन नहीं रक पाने के कारण दबाव में दिखे। उनकी बल्लेबाजी भी अच्छी नहीं रही। गेंदबजी भी वह अधिक नहीं कर पाये। युवा तिलक वर्मा और नमन धीर मध्यक्रम में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाये। धीर तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी कर रहे थे जबकि हार्दिक किसी भी नंबर पर आ रहे थे जबकि उन्हें पूरे सत्र में तिलक को तीसरे, सूर्यकुमार यादव को चौथे और स्वयं पांचवे नंबर पर उतरना चाहिये था। ' वहीं ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान शेन वॉटसन ने भी कहा कि पंड्या ने कप्तान के तौर पर सही फैसले नहं लिये। केकेआर की जब आधी टीम 57 रन पर पेवेलियन लौट गयी थी तब भी मुम्बई ने अपने सर्वश्रेष्ठ गेंदबाज को नहीं उतारा जबकि तब उसके जसप्रीत बुमराह से गेंदबाजी करानी चाहिये थी।

चहल, जडेजा, अश्विन, मिश्रा की गेंदों पर पड़े सबसे ज्यादा छक्के

नई दिल्ली। भारत में आईपीएल प्रीमियम लीग की शुरुआत 2008 में हुई थी। इस लीग का 17वां सीजन अभी खेला जा रहा है। इस आईपीएल में बल्लेबाजों का दबदबा ज्यादा है। पिच भी वैसी होती है जहां आसानी से छक्के चौके लग जाते हैं। गेंदबाज मैच के दौरान बैकफुट पर ही रहते हैं। बल्लेबाज जब चाहता है छक्के लगा देता है। इस आईपीएल में ऐसे गेंदबाज हैं जिनकी गेंदों पर सबसे ज्यादा छक्के लगे हैं। युजवेंद्र चहल आईपीएल में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज हैं। अब छक्का के मामले में भी वह जल्द ही टॉप पर पहुंच सकते हैं। एम चिन्नास्वामी स्टेडियम पर अपने आईपीएल करियर के आधे से ज्यादा मैच खेलने वाले चहल की 3401 गेंदों पर 213 छक्के लगे हैं। वहीं चेन्नई सुपर किंग्स के रविंद्र जडेजा जिन्होंने आईपीएल लीग में राजस्थान रॉयल्स के लिए 2008 में डेब्यू किया था। जडेजा लीग के सबसे सफल बाएं हाथ के गेंदबाज हैं। लेकिन इस आईपीएल में सबसे ज्यादा छक्के बाएं हाथ के गेंदबाज रविंद्र जडेजा के नाम ही है। उनकी 3751 गेंदों पर 201 छक्के लगे हैं।

बजरंग अस्थायी रूप से निलंबित, डब्ल्यूएफआई ने नाडा पर अंधेरे में रखने का आरोप लगाया

नई दिल्ली (एजेंसी)। बजरंग पुनिया को हाल ही में राष्ट्रीय ट्रायल के दौरान डोप टेस्ट के लिए अपना नमूना देने से इनकार करने पर अस्थाई तौर पर निलंबित कर दिया गया है। भारतीय कुश्ती महासंघ (डब्ल्यूएफआई) इस मामले में राष्ट्रीय डोपिंग रोधी एजेंसी (नाडा) द्वारा उसे 'अंधेरे में' रखने का आरोप लगाते हुए विश्व डोपिंग रोधी एजेंसी (वाडा) से शिकायत करने की योजना बना रहा है।

बजरंग को 23 अप्रैल को नाडा ने अस्थायी निलंबन सौंपा था। उन्हें आगे की अनुशासनात्मक कार्रवाई से बचने के लिए सात मई तक अपना जवाब भेजने को कहा गया था। बिश्केक में एशियाई ओलंपिक क्वालीफायर के लिए पुरुषों की राष्ट्रीय टीम चुनने के लिए ट्रायल 10 मार्च को सोनीपत में आयोजित किया गया था और बजरंग अपना मुकाबला हारने के बाद मूत्र का नमूना दिए बिना ही प्रतियोगिता स्थल से चले गए थे।

बजरंग ने अपने निलंबन पर कहा कि उन्होंने कभी भी नाडा अधिकारियों को अपना नमूना देने से इनकार नहीं किया। उन्होंने नाडा पर 'एक्सपायर हो चुकी किट' देने का आरोप लगाते हुए 'एक्स' पर लिखा, 'मेरे बारे में जो डोप टेस्ट के लिए खबर आ रही है उसके लिए मैं स्पष्ट करना चाहता हूं। मैंने कभी भी नाडा अधिकारियों को नमूना देने से इनकार नहीं किया, मैंने उनसे अनुरोध किया कि वे मुझे जवाब दें कि वे पहले मेरा नमूना लेने के लिए जो 'एक्सपायर किट' लाए थे, उस पर उन्होंने क्या कदम उठाए या क्या कार्रवाई की उसका जवाब दे दीजिए और फिर मेरा डोप टेस्ट ले लीजिए।' उन्होंने कहा, 'मेरे वकील विदुष सिंघानिया इस पत्र का जवाब समय अनुसार देंगे।'

बजरंग अगर तय समय में अपना जवाब देने में असफल रहते हैं तो वह पेरिस ओलंपिक क्वालीफिकेशन की दौड़ से बाहर हो जाएंगे। इस बीच डब्ल्यूएफआई अध्यक्ष संजय सिंह ने आश्चर्य व्यक्त किया कि नाडा ने उन्हें बजरंग के निलंबन के बारे में सूचित नहीं किया। संजय ने कहा, 'यह वास्तव में आश्चर्यजनक है कि नाडा ने बजरंग को निलंबित करते समय हमें सूचित नहीं किया। मैंने 25 अप्रैल को नाडा महानिदेशक और अन्य अधिकारियों के साथ बैठक की थी और उस बैठक में यह मामला नहीं उठाया गया था।'

उन्होंने कहा, 'वे रहने के स्थान संबंधी शर्तों, लंबी सूची (पेरिस ओलंपिक के लिए संभावित दावेदार) आदि जैसे मामलों पर हमारे साथ संवाद करते रहते हैं। यहां तक कि हमने हाल ही में हुए फेडरेशन कप के बारे में भी चर्चा की, जहां उन्होंने विजेताओं से नमूने इकट्ठा करने के लिए अधिकारियों को भेजा था।' उन्होंने कहा, 'उन्होंने हमें बजरंग पुनिया के निलंबन के बारे में नहीं बताया। मैंने आज सुबह नाडा अधिकारियों को फोन किया और उनके पास मेरे प्रश्न का कोई जवाब नहीं था। अब मैं नाडा को पत्र लिखने और वाडा को इस बारे में सूचित करने की योजना बना रहा हूं।'

इससे पहले ऐसी खबरें आयी थी कि विनेश

फोगाट ने भी पटियाला में महिलाओं के 50 किग्रा का ट्रायल जीतने के बाद शुरू में अपना नमूना देने से इनकार कर दिया था। संजय ने कहा, 'हमें किसी ने भी यह नहीं बताया कि ट्रायल (सोनीपत और पटियाला में) के बाद किसके नमूने लिए गए थे और उन नमूनों से क्या निकला। जरा कल्पना करें कि अगर बजरंग फेडरेशन कप में प्रतिस्पर्धा करने आए होते तो हमने उन्हें अनुमति दे दी होती क्योंकि हमारे पास कोई जानकारी नहीं थी कि उन्हें निलंबित कर दिया गया है।'

ओलंपिक के लिए विश्व क्वालीफायर्स का आयोजन नौ मई से तुर्किये में होगा। भारतीय पहलवानों के लिए पेरिस खेलों का कोटा हासिल करने का यह आखिरी मौका होगा। भारत की चार महिला पहलवानों ने अब तक ओलंपिक कोटा हासिल किए है। इसमें विनेश (50 किग्रा) अंतिम पंघाल (53 किग्रा) अंशु मलिक (57 किग्रा) और रितिका हुड्डा (76 किग्रा) का नाम शामिल है।

भारत की पुरुष 4×400 मीटर टीम विश्व रिले की हीट को पूरा करने में नाकाम

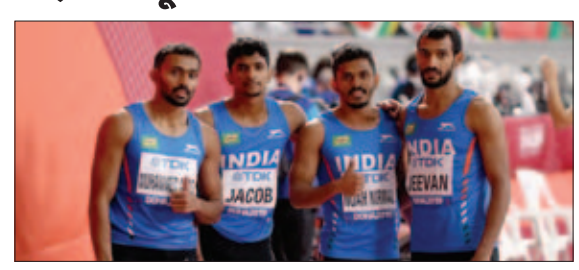

नासाउ। दूसरे चरण के धावक राजेश रमेश के पैर में जकड़न के कारण बाहर होने से भारतीय पुरुष चार गुणा 400 मीटर रिले टीम पेरिस ओलंपिक क्वालीफिकेशन के पहले दौर के दौरान रविवार को यहां विश्व एथलेटिक्स रिले में अपनी हीट (शुरुआती दौर की रेस) पूरी करने में विफल रही। मोहम्मद अनस याहिया, राजेश रमेश, मोहम्मद अजमल और अमोज जैकब की भारतीय चौकड़ी हीट नंबर चार में शीर्ष दो में रहकर पेरिस का टिकट पक्का करने की उम्मीद कर रही थी लेकिन रमेश ने अपना बायां पैर पकड़कर लड़खड़ाते हुए रेस बीच में ही छोड़ दी।

नर्क का दरवाजा बना प्रसिद्ध टूरिस्ट डेस्टिनेशन, यहां बिखरे हैं कंकाल, जहाजों के मलबे

नामिब । अफ्रीका के दक्षिणी हिस्से में स्थित नामीबिया देश में एक रेगिस्तान है नामिब। पुराने वक्त में पुर्तगाली नाविकों ने इस रेगिस्तान के पास स्थित समुद्री तट को 'नर्क का दरवाजा' बताया था। इस वजह से यहां कोई नहीं जाना चाहता। पर आपको जानकर हैरानी होगी, कि ये जगह एक प्रसिद्ध टूरिस्ट डेस्टिनेशन बन चुकी है। जानकारी के अनुसार नामीबिया का स्केलिटन कोस्ट बेहद खौफनाक अनुभव देने वाली जगह है। 'नर्क का दरवाजा', 'धरती का अंत', जैसे उपनामों से इस जगह को जाना जाता है। लोगों का मानना है कि इस इलाके को भगवान ने बेहद गुस्से में बनाया होगा। ये वो जगह है जहां पर समुद्र और रेगिस्तान एक दूसरे से मिलते हैं। यहां लंबी दूरी तक रेत के टीले फैले हैं, जंगली जानवर रहते हैं और उसके साथ-साथ चारों ओर कंकाल, जहाजों के मलबे आदि भी फैले रहते हैं।जब भी समुद्र में लो टाइड आती है, और पानी पीछे जाता है, तो कई कंकाल तट पर पड़े दिख जाते हैं। इस इलाके के पास बहुत लोग नहीं रहते हैं। यहां काफी हाथी पाए जाते हैं जो रेत में गड्ढा खोदकर अंदर से पानी निकालते हैं। इसके अलावा जिराफ, शेर, हायना, और बबून जैसे जीव भी यहां पाए जाते हैं। सीएनएन के अनुसार इस इलाके में हिंबा जनजाति के लोग भी रहते हैं। इस जनजाति के लोग नहाते ही नहीं हैं।इस इलाके में चूंकि आबादी बेहद कम है, इस वजह से यहां पर प्रदूषण भी नहीं है। इस वजह से आसमान बेहद साफ नजर आते हैं। यहां पर लोग ड्यून ट्रेकिंग करने आते हैं। गाड़ियों पर वो इस रेगिस्तान के टीलों की यात्रा करते हैं। जानकारी के अनुसार यहां पर करीब 1000 जहाज ध्वस्त हो चुके हैं, जिनका मलबा तट पर पड़ा मिल जाता है। बीच एटलस वेबसाइट ने इस तट को दुनिया के सबसे खूबसूरत गोल्डेन बीच में से एक का दर्जा दिया है। आप अब तक तो ये समझ गए होंगे कि इसका नाम स्केलिटन कोस्ट क्यों है। वो इसलिए क्योंकि यहां पर व्हेल मछली के कंकाल काफी संख्या में मिले हैं। बता दें कि दुनिया में कई ऐसी जगहें हैं, जो इतनी अजीबोगरीब हैं, कि यहां जाने वाले लोग या तो उन जगहों पर लौटकर दोबारा नहीं जाना चाहते, या फिर बार-बार जाना चाहते हैं।

वानुअतु द्वीप समूह में लगे भूकंप के झटके

हांगकांग। चीन स्थित वानुअतु द्वीप समूह में शनिवार को मध्यम स्तर के भूकंप के झटके महसूस किए गए। जीएफजेड जर्मन रिसर्च सेंटर फॉर जियोसाइंसेज ने जानकारी देते हुए बताया कि अंतरराष्ट्रीय समयानुसार शनिवार तड़के करीब 03:17 बजे भूकंप आया। इसकी तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 5.3 मापी गई है। भूकंप का केंद्र 14.63 डिग्री दक्षिण अक्षांश और 167.18 डिग्री पूर्वी देशांतर तथा जमीन की सतह से 174.4 किमी की गहराई में बताया गया है। भूकंप से किसी प्रकार के जान-माल के नुक्सान की अभी तक कोई सूचना नहीं मिली है।

ऑस्ट्रेलिया में नाइट आउट के लिए गयी महिला सांसद ने यौन उत्पीड़न को आरोप लगाया

कैनबरा । ऑस्ट्रेलिया की महिला सांसद ने आरोप लगाया है कि नाइट आउट के दौरान उसके साथ यौन उत्पीड़न हुआ है। क्वींसलैंड लेबर पार्टी की सांसद ब्रिटनी लाउगा ने कहा कि पहले कुछ लोगों ने उसे नशीला पदार्थ पिलाया फिर यौन उत्पीड़न किया। इस सांसद ने कहा कि क्वींसलैंड के येपून में उसके साथ से भयानक हादसा हुआ। जिसके बाद उन्होंने पुलिस में भी ये मामला दर्ज कराया। इस महिला सांसद लाउगा ने कहा, अस्पताल में जांच के दौरान उनके शरीर में ऐसी दवाइयों का पता चला है जो उन्होंने नहीं खायीं थीं। साथ ही कहा कि जब उन्होंने अपने साथ हुए हादसे की बात बतायी तो शहर की कई महिलाएं ने भी खुलास किया कि उनके साथ भी ऐसा हुआ था। उन्होंने कहा, इस प्रकार का हादसा किसी के साथ भी हो सकता था। हम में से कई लोगों के साथ होता है। यह सही नहीं है। हमें नशे या हमले के खतरे के बिना ही अपने शहर में घूमने फिरने में डर नहीं लगना चाहिये। साथ ही कहा, मेरे समर्थन में आगे आने वाले सभी लोगों की मैं आभारी हूं। मैं वास्तव में आपके संदेशों को महत्व देती हूं। यदि आपके पास कोई जानकारी है जो जांच में सहायता कर सकती है, तो आगे आकर पुलिस को बताएं। वहीं एक रिपोर्ट के मुताबिक, लाउगा के साथ घटी इस घटना का एक वीडियो भी सोशल मीडिया में वायरल हो गया है। इस मामले में क्वींसलैंड के प्रीमियर स्टीवन माइल्स ने कहा कि सरकार हर संभव तरीके से सांसद को न्याय दिलाने का प्रयास करेगी।

ब्राजील में बारिश से अबतक 56 की मौत, कई लापता

साओ पाउलो । ब्राजील में भारी बारिश और बाढ़ से हालात बिगड़ते जा रहे हैं। इसमें मरने वालों की तादाद भी बढ़ रही है। देश के दक्षिणी राज्य रियो ग्रांडे डो सुल में अब तक 56 लोगों की मौ हुई है जबकि जबकि 67 लापता हुए हैं। वहीं अब तक 32,900 लोगों को सुरक्षित जगहों पर भेजा गया है। रियो में इस कारण बिजली भी नहीं है। एक सप्ताह से हो रही तेज बारिश ने अब तक 281 नगर पालिकाओं को नुकसान हुआ है। नदियाँ खतरे के निशान से ऊपर बह रही हैं। यहां तक कि राज्य की राजधानी पोर्टो एलेग्रे भी डूब रही है। रियो के गवर्नर एडुआर्डो लेइट ने कहा, आने वाले दिनों में लापता लोगों की संख्या बदल सकती है क्योंकि हम घटनास्थल पर पहुंचेंगे और अन्य लापता हुए लोगों का पता लगाएंगे। वहीं ब्राजील के राष्ट्रपति लुइज़ इनासियो लूला दा सिल्वा भी बचाव अभियान को देख रहे हैं। उन्होंने सहायता के लिए राष्ट्रीय बल, एक विशिष्ट पुलिस बल के 100 सदस्यों को भेजने के बाद, तकनीकी और वित्तीय सहायता की सुविधा के लिए पोर्टो एलेग्रे में एक आपातकालीन कार्यालय खोलने को भी कहा है।

इजरायल के गंभीर नहीं होने से संघर्ष विराम विफल रहा : हमास

गाजा । गाजा में इजरायल और हमास के बीच जंग जारी है। इससे साफ है कि गाजा संघर्ष विराम को लेकर कोई संकेत मिलते नहीं दिख रहे हैं। वहीं हमास के एक प्रवक्त के अनुसार इजरायल के (स्थायी) युद्धविराम के लिए गंभीर नहीं होने के कारण बातचीत आगे नहीं बढ़ पा रही है। हमास ने समझौते के तहत गाजा से इजरायल की वापसी और संघर्ष शर्तों को पूरी तरह से समाप्त करने को कहा है जिसपर इजरायल तैयार नहीं है। वहीं एक रिपोर्ट में कहा गया है कि हमास युद्धविराम समझौते के पहले चरण में शुरुआती 20 के बजाय 33 बंधकों को रिहा करने तैयार है। संघर्ष विराम पर बात के लिए हमास का एक प्रतिनिधिमंडल भी काहिरा पहुंचा है, जिससे उम्मीद जतायी जा रही है कि कुछ बंधकों की रिहाई हो सकती है।

हमास नेता सिनवार को जिंदा या मुर्दा पकड़ने इजरायल में हुई बैठक

तेल अवीव। इजरायल-हमास के बीच युद्धविराम समझौते पर पहुंचने के लिए काहिरा में चल रही शांति वार्ता के बीच, इजरायल ने हमास के सैन्य कमांडर याह्या सिनवार को मारने के लिए प्रयास तेज कर दिए हैं। एजेंसी ने बताया कि इजराइल रक्षा मंत्री योव गैलेंट द्वारा बुलाई गई उच्च स्तरीय बैठक में सिनवार को जिंदा या मुर्दा पकड़ने पर बातचीत की गई। रक्षा मंत्री ने शीर्ष सेना और खुफिया अधिकारियों से कहा है कि सिनवार को मारना हमारी पहली प्राथमिकता है। इस बैठक में इजरायल के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार तजाची हानेग्बी, शिन बेट प्रमुख रोनेन बार और कई शीर्ष इजरायली सेना के अधिकारी शामिल हुए।

मास्को में रुस के राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन और मास्को के मेयर सरजेई सोबियान कैथेड्रल ऑफ क्राइस्ट में आरथोडोक्स ईस्टर सर्विस में उपस्थित रहे।

नर्स ने मरीजों को दी मौत, अदालत ने सुनाई 760 साल की सजा

वॉशिंगटन। डॉक्टर और नर्स मरीजों के लिए भगवान के बराबर होते हैं, लेकिन अमेरिका के पेंसिल्वेनिया में एक नर्स हीदर प्रेसडी हैवान बन गई। नर्स ने तीन मरीजों की जान ले ली और 19 मरीजों को मारने की नाकाम कोशिश की। जिसके बाद एक अमेरिकी अदालत ने हीदर को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। जानकारी के अनुसार अमेरिका में एक नर्स ने तीन साल तक कई मरीजों को जान से मारने की कोशिश में उन्हें इंसुलिन की जानलेवा डोज दिया था। दोषी नर्स को अदालत ने 380-760 साल की सजा सुनाई गई। अदालत ने बताया कि नर्स 2020 और 2023 के बीच पांच स्वास्थ्य सुविधाओं में कम से कम 17 मरीजों की मौत के लिए जिम्मेदार थीं। प्रेसडी पर 22 मरीजों को अधिक मात्रा में इंसुलिन देने का आरोप था, जिनमें कुछ ऐसे भी थे जो डायबिटिक नहीं थे। ज्यादातर मरीजों की डोज लेने के तुरंत या कुछ समय बाद मौत हो गई थी। पीड़ितों की उम्र 43 से 104 साल थी। बता दें, पुलिस जांच में प्रेसडी के खिलाफ कई अन्य आरोप लगाए गए। पूर्व में सहकर्मियों ने उसके आचरण करते हुए कहा था कि वह अपने मरीजों के लिए दिल में नफरत रखती है और अक्सर उनके बारे में गलत बातें करती हैं। अपनी मां को लिखे एक मैसेज में प्रेसडी ने मरीजों, सहकर्मियों और यहां तक कि रेस?टोरेन?ट में लोगों के साथ अपनी नाखुशी का जिक्र किया था। वह अक्सर मरीजों को नुकसान पहुंचाने के बारे में भी बात करती थी। सुनवाई के दौरान अदालत में उसने इस गुनाह को कुबूल किया। जब प्रेसडी के एक वकील ने पूछा कि उसने खुद को दोषी क्यों बताया? तो प्रेसडी ने जवाब दिया क्योंकि मैं दोषी हूं। प्रेसडी ने 2018 से 2023 तक कई नर्सिंग होम में काम किया, उसका लाइसेंस निलंबित कर दिया गया था। अब नर्स की पूरी जिंदगी जेल में कटेगी।

फिलिस्तीनियों को अमेरिका में शरण देने की योजना का विरोध शुरु, सांसद ने बताया देश की सुरक्षा को खतरा

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका में बाइडेन सरकार के उस निर्णय का विरोध शुरु हो गया है,जिसमें कहा गया था की फिलिस्तीनियों को अमेरिका में शरण दी जाएगी। इस निर्णय पर अमल होता इसके पहले ही विरोध शुरु हो गया है। जो बाइडेन सरकार की इस संभावित प्लानिंग पर अमेरिकी सांसद ने आपत्ति जताई है। रिपब्लिकन सीनेटर ने कहा कि यह कदम देश की राष्ट्रीय सुरक्षा को जोखिम में डालने जैसा कदम होगा। उन्होंने कहा कि गाजा के जिन बच्चों को हम अपने यहां लाने की सोच रहे हैं, वहां उन्हें नफरत की शिक्षा दी जाती है। उन्हें गाजा में ही बंद कर दिया जाना चाहिए। उन्होंने आरोप लगाया कि अगर इतना ही जरूरी है तो यह कदम कोई अरब देश क्यों नहीं उठाता।

गाजा में कत्लेआम से चिंतित बाइडेन सरकार योजना बना रही है कि जिन अमेरिकियों के रिश्तेदार गाजा में रह रहे हैं, उन्हें शरणार्थी के तौर पर अमेरिका में पनाह दी जाएगी। हालांकि बाइडेन सरकार के इस संभावित कदम की अमेरिकी सीनेटर रॉन जॉनसन ने कड़ी आलोचना की है। जॉनसन उन 34 सीनेट रिपब्लिकन में से एक हैं, जिन्होंने अमेरिका में रहने वाले फिलिस्तीनियों को अपने परिवार के सदस्यों को शरणार्थी के रूप में लाने की अनुमति देने की बाइडेन प्रशासन की संभावित रणनीति के खिलाफ आवाज उठाई है। उन्होंने इस योजना को राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बताया। स्थानीय मीडिया से बातचीत में जॉनसन ने कहा कि फिलिस्तीनी बच्चों को अमेरिका में शरण नहीं दी जानी चाहिए, उन्होंने कहा कि उन्हें वहां नफरत की शिक्षा दी जाती है और उन्हें गाजा में ही बंद

कर दिया जाना चाहिए। अमेरिकी कॉलेज परिसरों में फिलिस्तीन के समर्थन में विरोध प्रदर्शनों का उदाहरण देते हुए जॉनसन ने कहा कि यह भी एक बड़ा कारण है कि अरब देशों ने दशकों से फिलिस्तीनी शरणार्थियों को स्वीकार नहीं किया है। अगर उन्होंने ऐसा किया होता तो आज हमें यह समस्या नहीं होती।

सीनेटर ने उन्हें खतरनाक लोग कहा और कहा कि यही कारण है कि वे उन्हें गाजा और वेस्ट बैंक में बंद रखने की कोशिश करते हैं वरना ये घटनाएं एक ही जगह सीमित न होकर पूरी दुनिया में फैल सकती है। फ़िलिस्तीनियों को वहीं बंद रखने की वकालत करते हुए जॉनसन ने कहा, हमें इज़रायल को हमास को नष्ट करने देना होगा और फिर उन फ़िलिस्तीनियों के साथ शांति से रहने की कोशिश करनी होगी जो ऐसा करने के इच्छुक हैं। वे न केवल यहूदियों से नफरत करते हैं, वे हमसे भी नफरत करते हैं।बता दें कि इजरायल और हमास आतंकियों के बीच चल रहे कत्लेआम में सबसे ज्यादा नुकसान गाजा शहर में हुआ है। यहां मरने वालों की तादाद कम से कम 34 हजार है। अभी भी इजरायली सेना रुकी नहीं है, हमास के हर कण को मिटाने की कसम खा चुकी आईडीएफ ने गाजा और उससे सटे राफा शहर में अपना ऑपरेशन जारी रखने की बात कही है। गाजा में जान गंवाने वाले अधिकतर महिलाएं और मासूम बच्चे हैं। अमेरिका और यूएन समेत कई आधी दुनिया चिंता जता चुका है। तमाम आलोचनाओं को झेलने के बावजूद इजरायली पीएम बेंजामिन नेतन्याहू बेपरवाह हैं और अपना ऑपरेशन जारी रखने की बात दोहरा चुके हैं।

पाकिस्तान फिर 1971 वाले रास्ते पर चल रहा है : इमरान खान

-सैन्य नेतृत्व पर लगाया आरोप बोले-उनके पास कुछ बचा है तो वह उनकी 'हत्या' करना

इस्लामाबाद (एजेंसी)। जेल में बंद पाकिस्तान के पूर्व पीएम इमरान खान ने भारत और अफगानिस्तान से लगी सीमाओं पर पाकिस्तान में हालात खराब होने की चेतावनी दी है। मिली खबरों के मुताबिक इमरान खान ने कहा है कि पाकिस्तान उसी रास्ते पर चल रहा है, जिस पर वह 1971 में चला था। जब उसने अपना पूर्वी इलाका खो दिया था जो अब बांग्लादेश है।

रावलपिंडी की जेल से इमरान ने आरोप लगाया कि पाकिस्तान आतंकवाद और बलूचिस्तान में अलगाव बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि भारत पहले ही पाकिस्तान के अंदर हत्याएं करने की बात कबूल कर चुका है और पाकिस्तान की सीमाओं पर अफगानिस्तान के साथ अंतरराष्ट्रीय सीमा अस्थिरता बनी हुई है। उन्होंने पाकिस्तान के बिगड़ते हालात पर अफसोस जताया है। जहां उनके जैसे राजनीतिक नेता जेल में बंद हैं और कहा कि शक्तिशाली सैन्य नेतृत्व के लिए अगर अब कुछ बचा है तो वह उनकी 'हत्या' करना है।

उन्होंने कहा कि शक्तिशाली सेना ने पाकिस्तान के अस्तित्व के 75 साला से अधिक समय तक राज किया है। सेना ने सुरक्षा और विदेश नीति के मामलों में काफी शक्ति का इस्तेमाल किया है, जबकि सेना ने देश की राजनीति में हस्तक्षेप से इनकार किया है। क्रिकेटर से राजनेता बने इमरान खान ने अपने पिछले दावे को दोहराते हुए कहा कि अगर उन्हें या उनकी पत्नी को कुछ भी होता है, तो सेना प्रमुख जनरल असीम मुनीर जिम्मेदार होंगे। इमरान खान ने 8 फरवरी के आम चुनाव के लोकतांत्रिक ढंग से बदला लेने की सराहना की। जिसके दौरान लोग बाहर आए और उनकी पार्टी द्वारा समर्थित उम्मीदवारों के लिए भारी मतदान किया था। इमरान ने कहा कि दुर्भाग्य से लोगों के जनादेश को कबूल करने के बजाय सेना गुस्से में आ गई और हारे हुए लोगों को सत्ता में लाने के लिए चुनावी नतीजों में हेरफेर किया गया जो लोकतंत्र के खिलाफ है।

न्यूयॉर्क में अलग-अलग देशों की 500 महिलाओं ने किया साड़ियों का प्रदर्शन

- अपने अपने देशों का राष्ट्रीय ध्वज लहराया, एक साथ नृत्य भी किया

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। न्यूयॉर्क का जाना माना 'टाइम्स स्क्वायर' पर भारतीय-अमेरिकी समुदाय के साथ ही अन्य देशों की सैकड़ों महिलाओं ने एक विशेष कार्यक्रम में साड़ियों की सुंदरता, विरासत और सांस्कृतिक विविधता का प्रदर्शन किया। 'साड़ी गोज ग्लोबल' कार्यक्रम में भारतीय समुदाय के साथ ही नौ देशों की 500 से ज्यादा महिलाओं ने भाग लिया जहां नौ गज का यह परिधान लोकप्रिय है तथा उसे पसंद किया जाता है। इस कार्यक्रम में बांग्लादेश, नेपाल, ब्रिटेन, अमेरिका, संयुक्त अरब अमीरात, युगांडा, त्रिनिदाद और गुयाना शामिल हैं। खादी सहित विभिन्न प्रकार के कपड़ों पर उत्कृष्ट कढ़ाई एवं शैलियों वाली रंग-बिरंगी साड़ियां पहनी महिलाओं ने अपने संग्रह का प्रदर्शन किया और अपने अपने देश के राष्ट्रीय ध्वज लहराए। एक साथ नृत्य भी किया और अपनी साड़ियों, संस्कृति तथा विरासत के बारे में कहानियां साझा कीं।

यह कार्यक्रम 'ब्रिटिश वुमेन इन साड़ी' ने उमा संगठन के साथ मिलकर आयोजित किया जिसमें संगीत, नृत्य और साड़ी 'वॉकथन' के जरिए साड़ी की सुंदरता का प्रदर्शन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य दुनियाभर में भारत में हथकरघा कलाकारों की मदद करते हुए साड़ी के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। उमा ग्लोबल की अध्यक्ष डॉ. रीता ककाती-शाह और 'ब्रिटेन वुमेन इन साड़ी' की चेयरपर्सन डॉ. दीप्ति जैन ने दुनियाभर में एकता और महिला सशक्तीकरण के प्रतीक के तौर पर साड़ी की महत्ता पर जोर दिया। इस कार्यक्रम को दर्शकों ने खूब सराहा।

रिपोर्ट में खुलासा: गाजा के बैंकों की तिजोरियों से 580 करोड़ की लूट

- हमास पर एक नहीं बैंक की कई शाखाओं को लूटने का आरोप

गाज (एजेंसी)। इजरायल-हमास युद्ध के बीच एक रिपोर्ट में खुलासा हुआ है कि हमास ने अपने ही देश फिलिस्तीन बैंकों से करोड़ों रुपए की लूट की हैं। रिपोर्ट में बताया गया है कि फ्रांसीसी अखबार का दावा है जब गाजा में रह रहे कम से कम 25 लाख लोग इजरायली हमलों के बाद भुखमरी से जूझ रहे थे तब हमास ने एक महीने के अंदर कम से कम 580 करोड़ रुपए लूट लिए।

एक रिपोर्ट में कहा कि गाजा के सशस्त्र ग्रुप ने बैंक ऑफ फिलिस्तीन की कई ब्रांच से लूटपाट की है। बैंक के दस्तावेजों का हवाला देते हुए अखबार ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि एक नहीं बैंक की कई शाखाओं को हमास ने साफ कर दिया है। एक अनुमान के मुताबिक हमास ने 70 मिलियन डॉलर (कम से कम 580 करोड़ रुपए) लूट लिए है। बैंक ने लूटपाट की इन घटनाओं को बेहद

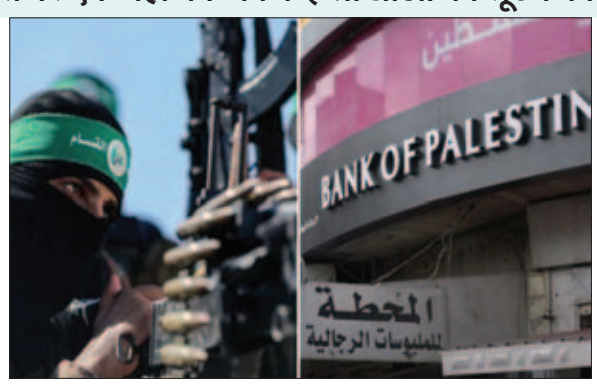

गंभीर बताया है।

रिपोर्ट ने बताया कि अखबार का दावा है 16 अप्रैल को कर्मचारियों ने रिपोर्ट किया कि बैंक ऑफ फिलिस्तीन की गाजा शाखा में लॉकर से 3 मिलियन डॉलर लूट लिए गए। डकैतों ने तिजोरी वाले कमरे की छत में एक सुराख कर पूरी तिजोरी खाली कर दी। इसी तरह अन्य शहरों से डकैती की गई है। गौरतलब है कि 1960 में स्थापित बैंक ऑफ फिलिस्तीन गाजा का प्रमुख वित्तीय संस्थान है।

संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की एक शीर्ष अधिकारी ने कहा कि इजराइल-हमास के बीच युद्ध को छह महीने से ज्यादा समय हो जाने और फलस्तीनी क्षेत्र में खाद्य आपूर्ति पर इजराइल द्वारा कड़े प्रतिबंध लगाये जाने से उत्तरी गाजा में अकाल अब अपने चरम पर है। इस बीच संयुक्त राष्ट्र की एक शीर्ष अधिकारी ने कहा कि यह भयावह है। उत्तर में अकाल चरम पर है और यह स्थिति दक्षिण की ओर बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि गाजा में तेजी से बढ़ते इस मानवीय संकट का सामना करने के लिए संघर्ष विराम और जमीन व समुद्री मार्गों के जरिये मदद पहुं?चाने में भारी वृद्धि की जरूरत है। बता दें कि गाजा में करीब 23 लाख लोग रहते हैं।

20 साल की उम्र से ही शुरु कीजिए ब्रिस्क एक्सरसाइज

-जिम जाने की जरूरत नहीं, रोज करें तेज वॉकिंग

हार्वर्ड (एजेंसी)। कई रिसर्च में यह बात साबित हो चुकी है कि जिनका वजन ज्यादा होता है वह कई बीमारियों से परेशान रहते हैं और उनकी आयु भी ज्यादा लंबी नहीं होती। इसलिए शरीर पर कभी चर्बी न बढ़े, इसके लिए क्या करना चाहिए, इस बात पर ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है।

अगर आप भी चाहते हैं कि आपके शरीर की चर्बी कभी न बढ़ें तो हार्वर्ड मेडिकल स्कूल द्वारा बताए गए इस टिप्स का पालन कीजिए। इन टिप्स को अपनाएं यदि आप चाहते हैं कि शरीर पर वजन ज्यादा न हो तो इसके लिए 20 साल की उम्र से ही नियमित रूप से ब्रिस्क एक्सरसाइज शुरू कर दीजिए। इसके लिए जिम जाने की जरूरत नहीं है बल्कि आप जो वॉक करते हैं या पैदल चलते हैं उसकी गति बढ़ा दीजिए। रोज आधे से पौन घंटा वॉकिंग, साइक्लिंग, स्विमिंग, रनिंग आदि कीजिए। इससे वजन बढ़ने का चांस ही नहीं होगा। नियमित एक्सरसाइज के बाद आपको हेल्दी फूड की जरूरत है। 20 साल की उम्र से ही हेल्दी खाना खाने की आदत बना लीजिए। रोज साबुत अनाज, हरी पत्तीदार सब्जियों और ताजे फल का सेवन करें। थाली का दो तिहाई हिस्सा सब्जियों और फलों से भरा होना चाहिए। इसके साथ ही पर्याप्त मात्रा में पानी पीना चाहिए। ज्यादा साबुत या मोटा अनाज को शामिल करें। अंकुरित अनाज कई बीमारियों से दूर रखेगा। इसके अलावा फूट और सीजनल सब्जियों का सेवन बढ़ाएं। हेल्दी फैट्स का सेवन करें। घर में बनाया हुए शेक या पेय पदार्थ ही बेहतर होता है।

हार्वर्ड मेडिकल स्कूल के मुताबिक सिगरेट, शराब, ड्रग्स आदि को छोड़ना मोटापा पर लगाम लगाने की सबसे बड़ी कोशिशों में से एक है। 20-25 साल के बाद से कोशिश कीजिए कि सिगरेट, शराब न पीएं। इसके साथ ही बाहर की चीजों से परहेज करना भी जरूरी है। 25 साल के बाद आप फास्ट फूड यानी पिज्जा, बर्गर, चाऊमिन आदि ज्यादा फैट वाली चीजों का सेवन बंद कर दीजिए। क फूड, रिफाइंड से बनी हुई चीजें, मीठी चीजें, रेड मीट, प्रोसेस्ड मीट, कोल्ड ड्रिंक, सोडा, शराब, सिगरेट से परहेज करें। शरीर पर चर्बी न चढ़ें, इसके लिए यह भी जरूरी है कि आप रोज पर्याप्त नींद लें। रोज सवेरे सोएं और सवेरे उठ जाएं। कोशिश करें कि रोज 7 से 8 घंटे की नींद लें। नींद की गुणवत्ता को बढ़ाएं। पर्याप्त नींद लेना मोटापे से बचने के लिए बहुत जरूरी है। नींद में

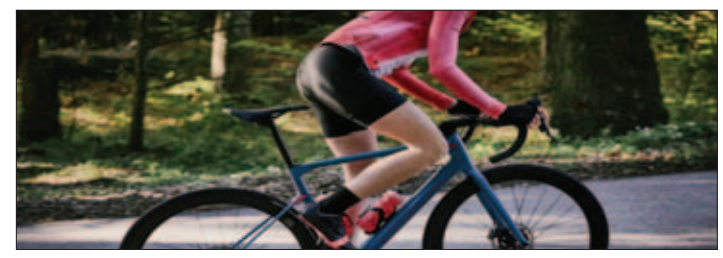

भी सुकून भरी नींद जरूरी है। आज के जेनरेशन में रात को सोते समय अमूमन लोग मोबाइल स्क्रीन को देखते हुए सोते हैं। लेकिन यह तरीका बहुत गलत है।

रात में स्क्रीन को देखने से एक तो नींद जल्दी नहीं आएगी, दूसरी ओर इससे तनाव बढ़ेगा। तनाव बढ़ने से कई बीमारियां होंगी। इसलिए रात में सोते समय मोबाइल देखते हुए न सोएं। बता दें कि दुनिया भर में करीब 2 अरब लोग मोटापे के शिकार हैं। यहां तक कि बचपन से ही लोग मोटे हो रहे हैं। वजन में बेतहाशा वृद्धि हो रही है। लेकिन सवाल यह है कि मोटा होना ही क्यों है। मोटापा कई बीमारियों की वजह है। इसलिए हम यह कोशिश क्यों न करें कि शरीर पर वजन बढ़े ही न। आखिर बहुत सारे लोग कभी मोटा नहीं होते, वे कैसे बिना वजन बढ़ाए रह लेते हैं।

कांग्रेस पार्टी की बैठक संपन्न, सुखदेव भगत को ऐतिहासिक जीत दिलाने का लिया गया संकल्प

बिभा संवाददाता

लोहरदगा/कुडू: इंडिया गठबंधन के लोहरदगा लोकसभा प्रत्याशी सुखदेव भगत को ऐतिहासिक जीत दिलाने को लेकर कांग्रेस पार्टी और इंडिया गठबंधन के हर एक कार्यकर्ता पूरी तरह से चुनावी रणक्षेत्र में डटे हुए हैं। इसी के तहत रविवार को कांग्रेस कमेटी के जिला महासचिव सह कुडू प्रखंड प्रभारी सदरूल अंसारी व प्रखंड अध्यक्ष तनवीर गौहर के संयुक्त निदेर्शानुसार प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत ग्राम पंचायत बड़की चांपी में बूथ स्तरीय कार्यकताओं के साथ बैठक आयोजित की गई। जिसकी अध्यक्षता बड़की चांपी पंचायत अध्यक्ष जैनुल अंसारी ने किया। इधर इंडिया गठबंधन प्रत्याशी सुखदेव भगत के पक्ष चलाए जा रहे जनसंपर्क और चुनावी जनसभा के दौरान हर कार्यकर्ता अपनी जिम्मेदारियों का शत-प्रतिशत निर्वहन करते हुए सुखदेव भगत को आपार मतों से विजयी दिलाए जाने हेतु कमर कस ली है। इधर लोहरदगा जिला अंतर्गत कुडू प्रखंड क्षेत्र के बड़की चांपी पंचायत में आयोजित कांग्रेस पार्टी की बैठक में उपस्थित सभी कार्यकताओं ने कहा कि लोहरदगा लोकसभा के लोकप्रिय प्रत्याशी सुखदेव भगत को जीत सुनिश्चित कराने को लेकर पूरी तन-मन से जुटे हुए हैं और जीत दिलाने तक पूरी तरह से अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करेंगे। इधर बैठक को संबोधित करते हुए कांग्रेस महासचिव सह कुडू प्रखंड प्रभारी सदरूल अंसारी ने कहा कि इंडिया गठबंधन की एकजुटता से भाजपाइयों की रातों के नींद उड़ गई है। उन्होंने कहा कि भाजपा देश में सिर्फ और सिर्फ हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई की राजनीति कर अराजकता की स्थिति लाकर खड़ा कर दिया है। हाजी सदरूल अंसारी ने कहा कि भाजपा के झूठे वादों का लोहरदगा लोकसभा समेत पूरे देश की जनता पूरी तरह से समझ चुकी है और इस बार भाजपा को देश की जनता तड़ीपार करने को लेकर काफी उत्साहित हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा और मोदी के झूठा गारंटी पर लोहरदगा लोकसभा क्षेत्र की जनता करारा जवाब देने का कार्य कर दिखाएंगे। वहीं बैठक को संबोधित करते हुए कांग्रेस कमेटी के कुडू प्रखंड अध्यक्ष तनवीर गौहर ने कहा कि इंडिया गठबंधन प्रत्याशी सुखदेव भगत की लोकप्रियता से भाजपा और आजसू पार्टी में खलबली मची हुई है। उन्होंने कहा कि लोहरदगा लोकसभा सीट से सुखदेव भगत रिकार्ड मतों से विजयी होंगे। तनवीर गौहर ने कहा कि भाजपा के शासनकाल में हिंदुस्तान में गरीबों की जमा-पूंजी राशि को निकालने में पसीने छूट गए हैं। लेकिन मोदी सरकार को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है और आज चुनावी मैदान में जनता को झूठ बोलकर जनता को फिर से गुमराह करने का कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि लोहरदगा लोकसभा की जनता भाजपा और मोदी के 400 पार का सपना को इस बार चकनाचूर कर दिखाएंगे। इधर चुनावी सभा को कुडू प्रखंड पूर्व प्रमुख सह चांपी पंचायत प्रभारी परीखा मुंडा, उप मुखिया हेना तिवारी, बंदुआ वार्ड सदस्य गीता भगत, पंचायत अध्यक्ष जैनुल अंसारी, बसंती देवी, रामचंद्र राम, नकुल उरांव, सोमनाथ भगत, भंडारी उरांव, किस्टो नायक, सोहन उरांव, दीपक अग्रवाल, भूपाल पाठक, शांति देवी और संजय भगत ने भी संबोधित किया। इधर बैठक में धन्यवाद ज्ञापन सामाजिक कार्यकर्ता सोमनाथ भगत के द्वारा किया गया। इस मौके पर कुडू प्रखंड के ग्राम पंचायत बड़की चांपी पंचायत में आयोजित कांग्रेस पार्टी की बैठक में ईश्वर उरांव, वार्ड सदस्य परमेश्वर उरांव, संजय भगत, वार्ड सदस्य शिवशंकर भगत, परवेज अंसारी, सुरेश तुरी, रविन्द्र मोची, इंदर मुंडा, सुंदरू पंचायत अध्यक्ष समसुल अंसारी, सहाबुल राय, सतीश भगत, एतवा उरांव, विनोद उरांव, राजन नायक, सरस्वती देवी, फुलमनी भगत, विद्यावती भगत, निर्मला कुमारी, सोमा उरांव, सुलंती देवी समेत बड़ी संख्या में इंडिया गठबंधन के कार्यकर्ता मौजूद रहे।

संक्षिप्त खबरें

बोलेरो के धक्के से दो गाय की मौत

जादूगोड़ा: मुसाबनी -हाता मुख्य मार्ग में बोलेरो के धक्के से दो गाय की दर्दनाक मौत हो गई .जानकारी के मुताबिक हाता से मुसाबनी जाने के क्रम में जादूगोड़ा कॉलोनी गेट से अस्पताल के बीच मुख्य सड़क पार करने के दौरान गाय बोलेरो के चपेट में आने से घटना स्थर पर ही दम तोड़ दी हालांकि एक गाय जीवित था लेकिन चोट ज्यादा लगने से कुछ समय ही बच पाया. घटना के बारे जैसा ही स्थानीय लोगो को मालूम चला तुरंत प्रशासन और कंपनी को सूचित किया । प्रशासन के सहयोग से यूसिल कंपनी द्वारा जेसीबी बुलाकर दोनों गायों का दाह संस्कार किया गया और दोनों गाय को नियमानुसार दफना दिया गया दफनाने में उपस्थित राजेश कुमार, राहुल अग्रवाल,पवन सिंह,मनीष गुप्ता, लाल बाबू साव आदि। पुलिस मौके से बोलेरो वाहन को थाना ले कर आ गई है ।

पोटका प्रखंड के गांव डाटों बेड़ा, टोला नीमडी मे पानी के लिए हाहाकार

समस्या समाधान हेतु ग्रामीण पहुंचे जिला परिषद के कार्यालय

जादूगोड़ा: पोटका प्रखंड के गांगडीह पंचायत अंतर्गत गांव डाटो बेड़ा, टोला नीमडीह में एक जलमीनार एवं तीन चापाकल के खराब हो जाने से पूरे गांव में पानी के लिए हाहाकार मचा हुआ हैं रियलमी न एवं चापानला से पानी नहीं निकलने पर तालाब का पानी पीने को ग्रामीण विवश हो रहे हैं गांव के खराब चापाकल एवं जलमीनार की मरम्मत को लेकर गांव से वार्ड सदस्य नुनी सरदार के नेतृत्व में 5 किलोमीटर पैदल चलकर ग्रामीण महिलाएं, पुरुषों जिला परिषद सूरज मंडल के कार्यालय पहुंचे एवं पानी की समस्या को लेकर अपनी दुखड़ा सुनायो इस मामले को लेकर जिला परिषद सूरज मंडल द्वारा पोटका प्रखंड विकास पदाधिकारी अभय कुमार द्विवेदी एवं पीएचडी विभाग को मामले की सूचना दी गई, जिसके बाद ग्रामीणों से मिलने पोटका प्रखंड विकास पदाधिकारी अभय कुमार द्विवेदी पहुंचे एवं जल्द चापाकल को ठीक करा कर शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने का आश्वासन दियो नुनी सरदार एवं रानी सरदार ने कहा कि गांव के सभी चापाकल एवं जल मीनार खराब हो चुके हैं इसके कारण हम सब तालाब का पानी पीने को विवश है वही हम लोग को पानी के लिए सरायकेला -खरसावां जिला के राजनगर प्रखंड अंतर्गत तीन(3) किलोमीटर दूर खुवडी गांव जाना पड़ता है इसी पानी की समस्या को दूर करने के लिए हम सभी पाँच किलो मीटर दुर पैदल चलकर जिला परिषद कार्यालय पहुंचे है और जिला परिषद से मिलकर खराब चापाकल एवं जल मीनार को बनाने का बात रखी गई, ताकि हम लोग को जल्द से जल्द पानी मिले ।

राहुल गांधी के आगमन को ले तैयारी तेज

लोहरदगा: राहुल गांधी लोहरदगा लोकसभा सीट से इंडिया गठबंधन के प्रत्याशी सुखदेव भगत के पक्ष में जनसभा को संबोधित करेंगे, बता दे की राहुल गांधी लोहरदगा लोकसभा क्षेत्र अंतर्गत बसिया में आयोजित होने वाली चुनावी जनसभा को संबोधित करेंगे सभा को सफल बनाने हेतु तैयारी में जुट गए हैं इधर राहुल गांधी के आगमन को लेकर किस्को प्रखंड कांग्रेस कमेटी के प्रखंड अध्यक्ष यूनुस अंसारी के अध्यक्षता में किस्को चौक पर बैठक कर कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु तैयारी में जुट गए हैं मौके पर सामूल अंसारी,नुसरत अंसारी,सेराज अंसारी,रविन्द्र सिंह,नसीम,अंसारी,कवीर अंसारी,साकिर अंसारी, शनीचरवा उरांव सहित अन्य उपस्थित थे।

सिटी मैनेजर के सौजन्य से की गई प्याऊ की व्यवस्था

२नगर परिषद के सिटी मैनेजर विजय कुमार के सौजन्य से लोहरदगा-चंदवा मुख्य मार्ग में चांपी चौक स्थित दुर्गा मंदिर के समीप इस भीषण गर्मी में स्वच्छ एवं ठंडा पेयजल का व्यवस्था कराई गई है। मौके पर सिटी मैनेजर विजय कुमार,एएसआई वृंदा उरांव, भूषण प्रसाद साहु, यदुनंदन तिवारी,लाल पंचम नाथ साहदेव, लाल गौरीशंकर नाथ साहदेव, अवधेश पाठक, धनंजय प्रसाद,आनंद कुमार सिंह, गुड्डू तिवारी सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

गांडेय विधानसभा उपचुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी अवधेश सिंह गिरफ्तार

बिभा संवाददाता

गिरिडीह। गिरिडीह के बेंगाबाद थाना पुलिस ने गांडेय विधानसभा उचुनाव में निर्दलीय प्रत्याशी अवधेश सिंह को रविवार सुबह गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने इसके शहर के झंडा मैदान के समीप आवास में धावा बोला और इसे बेंगाबाद थाना कांड संख्या 122/22 के मामले में गिरफ्तार किया है। हालांकि आरोपित अवधेश सिंह इस दौरान पुलिस को चकमा देकर फरार होने के प्रयास में था। लेकिन तीन थानों की पुलिस ने इस आरोपित को फरार होने का मौका नहीं दिया और इसे इसके घर से दबोचने में सफल रही। फिलहाल आरोपित निर्दलीय प्रत्याशी अवधेश सिंह को गिरफ्तार कर पुलिस बेंगाबाद थाना ले गई। जानकारी के अनुसार प्रखर किसान संघर्ष मोर्चा के बैनर तले आरोपी अवधेश सिंह ने दो साल पहले बेंगाबाद अंचल में घुस कर जमीन के कागजात में छेड़छाड़ किया था। उस वक्त इसके खिलाफ बेंगाबाद थाना में अंचल अधिकारी के आवेदन पर केस दर्ज किया गया था। जबकि कुछ दिन पहले इसके खिलाफ कोर्ट से वारंट जारी होने के बाद इसे पुलिस ने गिरफ्तार किया।
अवधेश सिंह के खिलाफ नगर थाना, मुफ्फसिल थाना और पचम्बा थाना में केस दर्ज है। हालांकि पुलिस की ओर से मुफ्फसिल थाना के एक मामले में इसके जमानत होने की बात कही जा रही है। लेकिन पुलिस मुफ्फसिल और पचम्बा थाना मामले में इसे रिमांड पर ले सकती है। जमीन के खतियान को लेकर गांडेय के इस निर्दलीय प्रत्याशी अवधेश सिंह ने कई बार आंदोलन किया था, तो कई बार जिला प्रशासन की सख्ती के बाद भी अवधेश सिंह ने गलत तरीके से धारा 144 तोड़ा था। उस वक्त भी इसके खिलाफ नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई किया था। निर्दलीय प्रत्याशी अवधेश सिंह की गिरफ्तारी के दौरान एसडीपीओ बिनोद रवानी, नगर थाना प्रभारी शैलेश प्रसाद, मुफ्फसिल थाना प्रभारी श्याम किशोर महतो और इंस्पेक्टर ममता कुमारी के साथ बेंगाबाद थाना प्रभारी जितेंद्र कुमार समेत पुलिस जवान इस दौरान शामिल थे।

बड़की चांपी में हुआ स्टडी प्वाइंट कंप्यूटर एजुकेशन सेंटर का शुभारंभ

बिभा संवाददाता

लोहरदगा: बड़की चांपी में स्टडी प्वाइंट कंप्यूटर एजुकेशन सेंटर का शुभारंभ 52 ग्रुप ट्रस्ट के चेयरमैन बिनोद ठाकुर के द्वारा किया गया। इस मौके पर कहा कि आज के आधुनिक युग में तकनीकी शिक्षा का महत्व को देखते हुए जिससे कि यहां के बच्चे तकनीकी शिक्षा से लाभान्वित हो सकें।जिसमें फैकल्टी के रूप में यूनिक स्टडी प्वाइंट कोचिंग के संचालक भरत कुमार वर्मा के द्वारा क्लास लिया जाएगा। जिनका मुख्य उद्देश्य है कि आर्थिक स्थिति के कारण कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न हो। जिसके संचालन समिति के रूप में भूषण प्रसाद साहु, यदुनंदन तिवारी, एवं लाल गौरी शंकर नाथ साहदेव हैं। मौके पर आनंद कुमार सिंह, एएसआई वृंदा उरांव,धनंजय प्रसाद , ओमप्रकाश प्रजापति सहित काफी संख्या में बच्चे उपस्थित थे।

दुबांग के ग्राम प्रधान के आकस्मिक निधन पर शोक की लहर

लोहरदगा। कुडू प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत बड़की चांपी के दुबांग गांव के ग्राम प्रधान सखिया मुंडा का रविवार को आकस्मिक निधन हो गया। इधर ग्राम प्रधान सखिया मुंडा के निधन की समाचार सुनकर पंचायत के जनप्रतिनिधियों ने कहा कि सखिया मुंडा का अचानक से हमारे बीच से चले जाना अपूरणीय छति है।जनप्रतिनिधियों ने शोक व्यक्त करते हुए कहा कि सखिया मुंडा काफी मिलनसार और कुशल मृदूभाषी व्यक्तित्व के धनी थे उनकी कमी को कभी भी पूरा नहीं किया जा सकता है। इधर शोक व्यक्त करने वालों में बड़की चांपी पंचायत के मुखिया राजधन भगत,उप मुखिया हेना तिवारी,पूर्व कुडू प्रमुख परीखा मुंडा, दुबांग गांव के वार्ड सदस्य अनिता लकड़ा, कांग्रेस पंचायत अध्यक्ष जैनुल अंसारी, सामाजिक कार्यकर्ता इंदर मुंडा,बिनोद मुंडा सहित कई लोग शामिल हैं।

अवैध बालू का परिवहन कर रहे पांच ट्रैक्टर जब्त

बिभा संवाददाता

लोहरदगा: अवैध बालू परिवहन मामले में प्रशासनिक कारवाई के दौरान पांच ट्रैक्टर जप्त बालू माफिया के बीच मचा हड़कंप। लोहरदगा जिला अंतर्गत सेन्हा थाना क्षेत्र कोयल नदी सीठियो बालू घाट से अवैध बालू परिवहन करने की गुप्त सूचना पर जिला पुलीस बल और सेन्हा थाना पुलिस के संयुक्त तत्वधान में बालू के अवैध खनन एवं परिवहन के विरुद्ध कारवाई करते पांच ट्रैक्टर को सीठियो कोयल नदी से जप्त कर सुरक्षित सेन्हा थाना में रखा गया। सीठियो कोयल नदी से बालू माफिया द्वारा बालू का खनन कर परिवहन किया जा रहा था। रविवार को अवैध बालू परिवहन कर रहें थे जिसकी सूचना जिले के एस पी हरीश बिन जमा को मिलने पर जिला पुलिस बल और प्रशिक्षु एस पी वेदांत शंकर एस आई मनोज कुमार तथा ए एस आई जमशेद खान ने क्षेत्र में अवैध बालू खनन व परिवहन मामले में छापेमारी करते हुए सीठियो कोयल नदी से पांच ट्रैक्टर को जप्त कर सेन्हा थाना में ला कर सुरक्षित रखा गया। इस संदर्भ में जिला खनन पदाधिकारी राजा राम प्रसाद के लिखित आवेदन पर अवैध बालू उठाव एवं विभाग के राजस्व क्षति करने का बालू माफिया साजिश के तहत चोरी छुपे लगातार बालू ढोलाई करने के आरोप में सेन्हा थाना कांड संख्या 31/24 दर्ज कर खनन अधिनियम के तहत अवैध परिवहन के तहत जप्त ट्रैक्टर मालिक व चालक के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज किया गया है। एक साथ पांच ट्रैक्टर के जब्त पर बालू माफिया में हड़कंप मचा हुआ है। मौके पर प्रशिक्षु एसपी वेदांत शंकर,एस आई मनोज कुमार ए एस आई जमशेद खान तथा पुलिस बल शामिल थे।

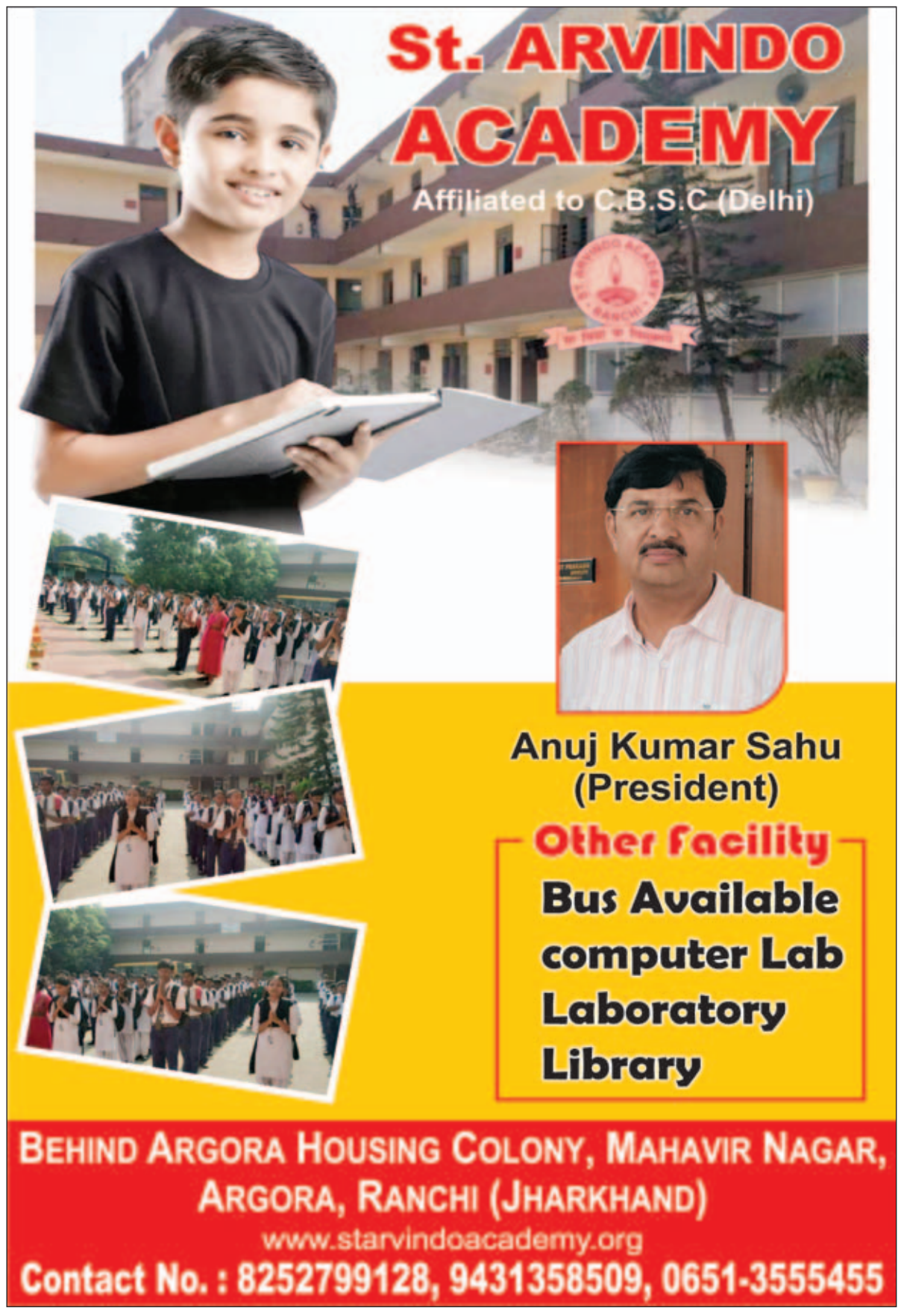

आत्मरक्षा के लिए जादूगोड़ा हैप्पकिड़ो का प्रशिक्षण लड़कियों के लिए बना शौक

यूसील अधिकारियो से लेकर कंपनी कर्मियों के बच्चे हैप्पकिड़ो से आत्मरक्षा का सीख रहे है गुर

बिभा संवाददाता

जादूगोड़ा :आत्मरक्षा के लिए जादूगोड़ा में हैप्पकिड़ो का प्रशिक्षण लड़कियों के लिए शौक बनता जा रहा है। यूसील अधिकारियो से लेकर कंपनी कर्मियों के बच्चे हैप्पकिड़ो का प्रशिक्षण लेकर आत्मरक्षा का गुर सीख रहे है गुर। यहां बताते चले कि हैप्पकिड़ो एक लोकप्रिय खेल है।जिसे आज की लड़कियां आत्म रक्षा के तौर पर सीख रही है। जिसकी संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। यहां लगाने वाले कैंप में जादूगोड़ा की 30 से अधिक लड़किया यूसील कॉलोनी में हैप्पकिड़ो का प्रशिक्षण ले रही है,जिसका मकसद पढ़ाई के अतिरिक्त बुरी परिस्थितियों में आत्म रक्षा के तकनीक जानकर अपने को सबल व सशक्त बनाना है ताकि प्रदेश से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर हैप्पकिड़ो का प्रशिक्षण लेकर जादूगोड़ा का नाम रौशन किया जा सके। जिसको लेकर प्रशिक्षण प्राप्त कर रही यूसील अधिकारी आर के मोदी की पुत्री अनिका मोदी, व खुशी कहती है कि बीते चार सालो से मार्शल आट्र्स के जरिए बैक्सिंग, जुड़ी, कराटे व हैप्पकिड़ो का प्रशिक्षण अमित साहू दे रहे है।सप्ताह में दो दिन प्रशिक्षण दी जाती है।इस प्रशिक्षण से अनुशासन, बेहतर स्वास्थ्य ताजगी का महसूस होता है।इस बाबत पूछे जाने पर तुरामडीह के प्रशिक्षक अमित साव कहते हैं कि हैप्पकिड़ो के प्रति लड़कियों व अभिभावको में जागरूकता आई है चार बच्चो से शुरू हुई यह प्रशिक्षण कार्यक्रम अब 45 बच्चो तक पहुंच गया ,जिसमे लड़कियों की संख्या 30 से अधिक है।लड़किया हैप्पकिड़ो का प्रशिक्षण लेकर प्रदेश से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर जादूगोड़ा का नाम रौशन कर रही है।यह सब अभिभावकों के समर्थन से संभव हो पा रहा है।

बिहान भारत की ओर से स्वात्वाधिकारी प्रकाशक एवं मुद्रक **संजय कुमार** के लिए वाटिका अपार्टमेंट,भोसले गली,हरिहर सिंह रोड,बरियातू,रांची-834009(झारखंड) दूरभाषः 7761060594, 7004767601 से प्रकाशित तथा शिवा साई पब्लिकेशन प्रा.लि., काठीटांड रातु, नियर टेंडर बगीचा, एचपी पेट्रोल पंप, रातु, रांची - 835222 झारखंड से मुद्रित। समस्त दीवानी विवाद, न्यायोचित कार्रवाई एवं दंडित परिवादो के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। **संपादक कविता साहू** *पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार । Email-bihanbharat@gmail.com, bihanbharatranchinews@gmail.com